उर्दू संग्रह

पुस्तक का नाम श्री भद्गवद् गीता
भाग ३

लेखक

प्रकाशन वर्ष

आगत संख्या 1664

यह पुस्तक श्री पं० अमरनाथ जी सप्रू भूतपूर्व कार्यालयाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी ने गुरुकुल ------ वानप्रस्थ पुस्तकालय की सेवा में सादर भेंट दी।

ओ३म्

श्रीमद्भगवद्गीता

भाग ३

चौथा, पांचवां और छटा अध्याय

पृष्ठ ५१६ से ८२२ तक

ओ३म्

श्रीमद्भगवद्गीता

ज्ञानकर्मसंन्यासयोगाध्याय ॥४॥

पृष्ठ ५८९ से ६२६ तक

५२०

आनन्द-कन्द श्रीकृष्ण



वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात् ।
पूर्णेन्दु सुन्दर[illegible]ादरविन्दनेत्रात्कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥

چوتھا ادھیائے

گیان یوگ یا مسلکِ عرفان

دوسرے ادھیائے میں ادھکاری کو دو رستے بتائے گئے ہیں ایک کرم کا دوسرا گیان کا۔ ان میں سے کرم کا مفصل بیان تیسرے ادھیائے میں ہوا۔ اب دوسرے رستے یعنی گیان یوگ کا بیان کرتے ہیں۔ حقیقت میں یہ دو رستے نہیں ہیں۔ بلکہ ایک ہی ہیں۔ کیونکہ دونوں ایک ہی منزل پر پہنچانے والے ہیں۔ چنانچہ پانچویں ادھیائے کے چار دیا پنج منتر میں خود کہتے ہیں کہ سانکھیہ اور یوگ کو جو الگ الگ سمجھتے ہیں وہ نادان بچے ہیں۔ دانا لوگ انہیں ایک جانتے ہیں چونکہ ارجن کو گیان سکھانا ہے۔ اس واسطے گیان کی قدامت کا ذکر پہلے شروع کرتے ہیں:-

नाश रहित एह योग दा रस्ता
मैं सी वैवस्वन नूं दस्या
वैवस्वन थीं मनु ने पाया
उस इक्ष्वाकू नूं समझाया । १ ।

श्रीभगवानुवाच ।

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ॥ विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ १ ॥

दोहा--यहैयोगहैमैंकह्यो, पहिलेरविसोंआय ।
तिनहूँतबमनुसोंकह्यो, मनुइक्ष्वाकुसुनाय ॥ १ ॥

श्रीकृष्णभगवान् अर्जुनसे कहते हैं कि जो यह योग मैंने तुमसे कहा सो केवल अत्र युद्धोत्साह बढानेको तुम्हारेहीसे नहीं कहा इसको कल्पकी आदिमेंभी कहा है सो सुनो ॥ मैं प्रथम इसे अव्यय कर्मयोगको सूर्यसे कहताभया सूर्य वैवस्वतमनुसे कहतेभये मनु इक्ष्वाकुसे कहतेभये ॥ १ ॥

This imperishable yoga I declared to Vivasvân; Vivasvân taught it to Manu; Manu to Ikshvâku told it. (1)

۱۔ یہ یوگ تبدل نہیں جس میں میں نے ارجن تھا کہا دوسوت سے پہلے
اُس نے اسرار سب منو کو بتلائے اور بھید منو سے اکشواکو نے لئے

CHAPTER THE FOURTH.

The Blessed One resumed :

FIRST taught by ME to Vivasvân, 1
this Path of Wholeness, e'er the Same,
By Him was to Manu made known,
and by Manu to Ikshvâku.

दोहा--कल्पआदिमें सूर्यने मोसुं योग इह लीन ।
सूर्यने मनुसों कह्यौ मनु इक्ष्वाकु हिं दीन ॥ १ ॥

(1)

میں نے علمِ حق ودوسوت پر کیا تھا آشکار
یوں منو اور اکشواکو ہوتے آئے رازدار

अर्जुन ! हमने प्रथम कहा था, रवि के प्रति यह अव्यय-ज्ञान;
रवि ने मनु से कहा, उन्होंने, इक्ष्वाकु से कहा सुज्ञान ।

मैंने यह स्थिर योग कहा था विवस्वानको हे रणधीर ! ।
विवस्वानने मनुको, मनुने निज इक्ष्वाकु पुत्रको, वीर ! ॥

The Blessed Lord continued :—

1. This everlasting *Yog* I taught
To Vivaswān,[1] who in his turn
To Manu [2] fully made it known,
And Manu to Ikshwāku next.[3]

جاری سری کرشن کی ہے تقریر
ودسوان کو میں نے پہلے دی تھی
ودسوان نے کی جو رہنمائی
شفقت کی منو نے جب نظر کی

یہ جوگ کی لازوال جاگیر
مجھ سے انہیں روشنی ملی تھی
دولت یہ منو کے ہاتھ آئی
آئینہ یہ اکشواک پر کی

श्रीभगवान् बोले –

मैं ने ही यह कहा था, अविनाशी शुभ योग ।
विवस्वान् को आदि में, उस ने सिखाया योग ॥ १ ॥
मनु को, जिससे सीख फिर, इक्ष्वाकु महाराज ।
योगीवंश चला गये, सूर्य जो रहा विराज ॥ २ ॥

इक दूजे थीं एहनीं राहीं
योग पहुंचया ऋषीयां तांईं
फिर जद बहुता समां विहाया
लोकां योग मनों विसराया । २ ।

एवं परंपराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः ॥
स कालेनेह महता योगो नष्टः
परंतप ॥ २ ॥

दोहा–परंपरायायोगको, जानतहैंऋषिराय।
बहुतदिनाबीतेभयो, सांख्ययोगविनशाय ॥ ३ ॥

ऐसेही परंपरासे प्राप्त इसको राजऋषि जानतेभये हे परंतप ! सो यह योग इससमयमें बहुत कालकरके नष्टभया था ॥ २ ॥

۲- تعلیم یونہی درجہ بدرجہ ہوتی   آخر راجرشیوں تلک آپہنچی
لیکن اس بات کو زمانہ گزرا   تعلیم وہ ان دنوں میں رائج نہ رہی

Thus in succession handed down, 2
the Royal Sages knew it well ;
But Time wrought havoc, and This Art
of Yóga here was lost to man.

ऐसी परंपरा गह्यो रुषिसों भूपतिलोग।
बहुत कालपाकर अब नष्ट भयो इह योग ॥ २ ॥

(۲)

راج رشیوں سے ہُوا ظاہر جو علمِ باطنی
لوحِ محفوظ اب وہ مدّت سے ہے اے مردِ جری

(२) ज्ञात हुआ राजर्षि गणों को, यों क्रम से यह योग नरेश ! ;
बहुत काल के गत होने से, नष्ट हुआ इसका उपदेश ।

This, handed on down the line, the King-Sages knew. This yoga by great efflux of time decayed in this world, O Parantapa. (2)

२

ऐसे परम्परासे पाये हुए इसे जाने ऋषिलोग ।
योग नष्ट फिर हुआ लोकमें दीर्घ कालका पा संयोग ॥

2. Thus in succession handed down
By royal sages it was learnt ;
By flight of ages Parantap,
This *Yog* has vanished from the world.

۲

اولاد میں اس کی سلسلہ وار
لایق، فایق، رئیس ممتاز
پلٹا دورِ زماں پھر ایسا
بے نام و نشاں یہ ہوگیا علم

سب تھے اس علم سے خبردار
ہر راج رشی تھا آگہ راز
بدلا رنگ جہاں پھر ایسا
دنیا سے نہاں یہ ہوگیا علم

इस क्रम से हुए प्राप्त इस, को राजर्षि लोग ।
जान गये सम्यक् तया, ज्ञानकर्म शुभ योग ॥ ३ ।
बहुत समय गया बीत तब, योग हो गया नष्ट ।
परम तपस्वी धनंजय, इसी लोग से भ्रष्ट ॥ ४ ॥

स एवाऽयं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः ॥ भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥

दोहा–वहैपुरानोयोगमैं, तोकोदियोबताय।
यातेतूमोमीतहै, औरभक्तिकेभाय ॥ ३ ॥

सोई यह पुरातन योग मैंने तुम्हारेसे आज कहा क्योंकि तुम मेरे भक्त और सखा हो यह उत्तम रहस्य है ॥ ३ ॥

पारथ योग ओह सब थों आला
उत्तम गूढ़ीयां रमज़ां वाला
तैनूं खोल सुणावां सारा
मित्तर वें ते भक्त प्यारा। ३।

۳ — میں نے وہی یوگ آج یہ تجھ سے کہا
روز اوّل سے جو ہے چلتا آیا
کیا وجہ تو میرا دوست اور بھگت بھی ہے
اور یہ سِرّ خفی بہت ہے اعلےٰ

This selfsame Ancient Path it is, 3
that I am teaching thee to-day:
My Devotee and Friend art thou—
the Secret of all secrets, this.

दोहा—सखा शरण तू मम गही शिष्य योगसों हीन।
तासों उह प्राचीन मैं योगहु वर्णन कीन ॥ ३ ॥

(۳)
کہہ سُنایا میں نے اب تجھکو وہ رازِ سرمدی
جان لے اے یارِ ہمدم اِسکو اک سِرِّ خفی

(३)
सखा सुभक्त जान बतलाया, तुमको वही योग प्राचीन;
उत्तम यह रहस्य है अर्जुन, इस में रहौ सतत तल्लीन।

This same ancient yoga hath been to-day declared to thee by Me, for thou art My devotee and my friend; it is the supreme Secret. (3)

३

वही योग यह परम पुरातन मैंने, उत्तम गोप्य रहस्य ।
बतलाया है तुझे इसलिये, तू है मेरा भक्त, वयस्य ॥

3. This selfsame and primeval *Yog*,
—The greatest of all mysteries—
To thee, my friend and devotee,
Has been declared by Me this day.

۳

یہ علم قدیم و جاودانی — ہرچند ہے راز اک نہانی
میں نے تمہیں یہ بتادیا آج — پردہ اِس کا اُٹھادیا آج
تھا صرف تعلقات کا پاس — رہبر تھا یگانگی کا احساس
ہمدم، محسن، رفیق، غم خوار — تم ہو مرے معتقد نکوکار

वही योग तुझे आज फिर, कहा मैं हे निष्पाप !।

(3)
उत्तम गुह्य रहस्य यह, भक्त सखा मम आप ।।३॥

आप तां हुए सूर्यों पिच्छों आए
वैवस्वन नूं समें विहाए
कीकर जाणां जो फरमाया
योग वैवस्वन नूं समझाया । ४ ।

अर्जुन उवाच ।

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः ॥ कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥

दोहा--तुमतौप्रगटेहौअबहिं, सूरपुरातनदेव ।
तुमकबतासोंहोकह्यो, हौंजानोंयहभेव ॥ ४ ॥

ऐसे सुनिके अर्जुन कहने लगे कि, तुम्हारा जन्म अभी भया विवस्वानका जन्म प्रथमभया तुमँ आदिमें उनको कहतेभये ऐसे इसेको हम कैसे जाने ॥४॥

۴ ہے آپ کا جنم اب زمانے میں ہُوا
اور کرشن وِوسوت بہت پہلے تھا
کس طرح سے اس بات کا ہو مجھ کو یقیں
یہ راز اسے آپ نے ہے بتلایا

Arjuna said :
But recent, Master, was Thy Birth,— 4
not so the birth of Vivasvân :
How, then, am I to understand
that Thou didst teach at Æon's Dawn?

दोहा—सूर्य जन्म तो आदिमें आप जने अब साथ ।
सूर्यसों तुम इह कह्यो किसबिध जान्यौ जाय ॥ ४ ॥

(۴)
پیشتر دُنیا میں آیا تھا وِوسوت آپ سے
کس طرح میں مان لوں اُسکو سکھایا آپ نے

(४)
भगवन् ! आप अभी जन्मे हैं, प्रकट हुए पहिले ही भानु;
प्रभु ने उनसे कहा किस तरह, कहिए दानव-विपिन-कृशानु।

Arjuna said :
Later was Thy birth, earlier the birth of Vivasvân; how then am I to understand that Thou declaredst it in the beginning? (4)

तुम तो जन्मे हो अब, रविको हुए बहुत बीता है काल ।
कैसे मानूँ, तुमने पहिले उसे कहा था योग विशाल ॥

4. But later, Teacher, is Thy birth,
Compared with that of Vivaswān,
How then am I to understand,
'Twas Thou Who first declared this Yog.

۴۔ تیرا جنم تو اب ہوا دین دیال
وئی بسوت کو گذرے ہزاروں ہی سال
تمہیں نے یہ اوپدیش پہلے کیا
یہی بات سمجھ میں لانی محال

पीछे हुआ जन्म आप का, विवस्वान् का पूर्व ।
कैसे निश्चय हमें हो आप योग कहा पूर्व ॥ ४ ॥

۴

ارجن نے کہا کہ "ہوں میں حیران"
یہ کیا فرما رہے ہیں بھگوان
ودسوان تو ہو چکے تھے پیدا
جب آپ نہیں ہوئے تھے پیدا
ہے چونکہ مؤخر آپ کی ذات
آتی نہیں کچھ سمجھ میں یہ بات
کس طرح یہ عہد ابتدائی
یہ روشنی آپنے دکھائی

श्रीभगवानोवाच

इस सृष्टी विच्च होए घनेरे
कई जनम तेरे ते मेरे
मैं जाणां सब जनमां तांईं
तूं इस तत्त नूं समझें नांहीं । ५ ।

۵- ارجن میرے جنم بہت سے گزرے اور بیت چکے جنم بہت سے تیرے
ان سب جنموں کو جب جانتا ہوں میں تو ہاں تیرے جنم نہیں ہیں معلوم تجھے

श्रीभगवानुवाच ।

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ॥ तान्यहं वेद्मि सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ॥ ५ ॥

दोहा–तेरअरुमेरेजनम, बीतेहैंबहुबार ।
तूतिनकोजानतनहीं, हौंजानतनिरधार ॥ ५ ॥

अर्जुनके प्रश्नका श्रीकृष्ण भगवान् उत्तर देतेहैं इसीमें आपके अवतारकाभी प्रयोजन कहेंगे सो ऐसे कि, हे परंतप ! याने शत्रुनको संतापित करनेवाले अर्जुन ! मेरे और तेरे बहुत जन्म व्यतीतभयेहैं उनै सबको मैं जानतोहौं तुम नहीं जानतेहो ॥ ५ ॥

The Blessed One replied:

Unnumbered births were shed behind 5
by Me, and thee, O Arjuna.
All these to Me are present now,
while thou, O Friend, rememberest not.

दोहा– मम अवतार भये बहु जन्म भये तेऽनंत ।
हौं जानौं तिनकौं भलैं तू नहिं जानत हंत ॥ ५ ॥

(۵)

میرے اور تیرے کثیر اجسام پہلے ہو چکے
تو ہے ناواقف مگر واقف ہوں میں اس راز سے

(५)

अहो परंतप ! इस पृथिवी पर, हम तुम जन्में हैं कई बार;
तुम यह गूढ़ भेद क्या जानों, मुझे विदित है भली प्रकार।

Many births have been left behind by Me and by thee, O Arjuna. I know them all, but thou knowest not thine, O Parantapa. (5)

तेरे मेरे जन्म अनेकों बार हुए हैं सुन धर ध्यान ।
उन्हें जानता हूँ मैं, अर्जुन ! तुझे नहीं है उनका ज्ञान ॥

The Blessed Lord replied :—

5. O Arjun, know, both thou and I
Have left unnumbered births behind ;
I know them all, O Parantap,
But they have faded from thy mind.

बहुत जन्म गये बीत हैं, तेरे मेरे हे वीर !
मैं जानूं उन सभी को, नहीं तुम अर्जुन ! धीर !! ५॥

۵ [illegible]
[illegible]
[illegible]

۵

بولے بھگوان اے پرنتپ — ارجن ذی شان اے پرنتپ
اس زیست سے پیشتر کئی بار — ہم تم دونوں بشر کئی بار
دُنیا میں وجود پا چکے ہیں — بارِ ہستی اُٹھا چکے ہیں
گو تم کو ہے خواب یہ فراموش — مجھ کو اس کا ہے آج تک ہوش

अजोपि सन्नव्ययात्मा भूतानामी-
श्वरोपि सन् ॥ प्रकृतिं स्वामधि-
ष्ठाय संभवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥

Though unborn, the imperishable SELF, and also the Lord of all beings, brooding over nature which is mine own, yet I am born through My own Power.* (6)

दोहा–अजअविनाशीप्रगटहौं, जगतईशकरतार ।
अपनीइच्छालेतहौं, शुद्धसत्त्वअवतार ॥ ६ ॥

यहां कारण यह कि, मैं अविनाशी सर्वांतर्यामी हौं सर्वभूतोंकाभी ईश्वर भयाँहुवा तथा अजन्मा भयाँहुवाभी मेरो स्वभाव जो सौशील्य वात्सल्यशरणागतरक्षकत्व इत्यादिक तिसको आश्रितकरके याने उस स्वभावहीसे आपके शौनसहित अवतारलेताहौं जीवको ज्ञान नहीं रहताहै मेरा ज्ञान अखंडहै मैं केवल स्वभक्तस्वसेतुरक्षणार्थ अवतार लेताहौं इसका कारण अगाडीके श्लोकोंमें है॥६॥

६ अर्जुन मैं अजर कहांवां
अविनाशी ईश्वर सद्वांवां
सब लोकों माया मेरी
सब सृष्टी ते छाया मेरी
तद वी मैं माया ते छाके
जनम लवां सृष्टी विच्च आके । ६ ।

۶ـ گو مجھ میں جنم ہے اور نہ کچھ تبدیلی — اور سب کا ایشور ہوں لیکن اس پہ ہی
پرکرتی کا اپنی حکمراں ہو ہو کر — مایا سے ہوا کرتا ہوں ظاہر اپنی

Although unborn, of changeless SELF, 6
all creatures' Lord although I be,
Yet, o'er My Nature ruling Lord,
through My Soul-Magic I take birth.

(६)
यद्यपि मैं अज अविनाशी, और प्राणियों का आधार;
फिर भी स्व-प्रकृति का आश्रित हो, लूँ निज माया से अवतार ।

दोहा--अज अव्यय अरु ईश हौं सकललोकको तात ।
अपने ही संकल्पसों जानबूझके आत ॥ ६ ॥

(۶)
مالکِ ارض و سما ہوں برتر از خلق و فنا
اپنی قدرت سے مگر ہوتا ہوں میں جلوہ نما

यद्यपि जन्मरहित, अव्यय हूँ, भूत-संघका ईश यथार्थ ।
तो भी स्थित हो निज-प्रकृतिमें जन्मूँ निज मायासे पार्थ ! ॥

6. Though I'm unborn—the Changeless[4] Self,
Although all creatures Lord I am,
Yet passing into Matter[5] I
By My Own *māyā* enter birth.[6]

अविनाशी हूं मैं आत्मा, जन्मरहित अतिसूक्ष्म ।
पञ्च तत्त्व सभी प्राणियों, का ईश्वर हूं सुसूक्ष्म । ६।
फिर भी धारूं आकार में, माया ही निजसे ।
प्रकृति पर आरूढ हो, शक्ति ज्ञान निर्जासे ॥ ९ ।
अपने ही स्वभाव से, प्रकृति में सुविकार।
उत्पन्न कर सकूं ले, जब चाहूं अवतार ॥ ८।

٦

رکھتا ہوں وجود سرمدی میں — پیدا ہوتا نہیں کبھی میں
بانی بزم حیات کا ہوں — مالک کُل کائنات کا ہوں
پھر بھی فطرت پہ آکے غالب — کرتا ہوں میں اختیار قالب
پیش آتی ہے جب کوئی ضرورت — کرتا ہوں قبول شکل و صورت

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ॥ अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम् ॥ ७ ॥

दोहा--जबजबभारतधर्मकी, ग्लानिहोतदिखराय ।
बढतअधर्मजहाँतहाँ, तौहौंजनमतआय ॥ ७ ॥

हे भारत ! जब जब निश्चयपूर्वक धर्मकी हानि अधर्मकी वृद्धि होती है तब मैं रूपको धारण करताहौं ॥ ७ ॥

धर्म लोप जद होग ते आवे
नेकी घटे पाप वध जावे
दुनियां धर्म हीन जद पांवां
तद मैं आप जनम लै आवां । ७ ।

٧— ہوجاتا ہے دھرم کو جب کبھی زوال پاجاتا ہے ادھرم جب اوج کمال
اس وقت ہوا کرتا ہوں میں بھی ظاہر اے راجہ بھرت کی پھلواڑی کے نہال

Whenever Goodness in this world
is on the wane, O Bhārata,
And Evil gains the upper hand,
then do I put My Power forth. 7

(७)
जब जब ग्लानि धर्म की होती, और अधर्मों का उत्थान;
तब तब मैं अपनी आत्मा को, सृजता हे भारत-संतान !

दोहा--जब जब धर्म घटै अरु बढत अधर्म सतात ।
तब तब हौं या लोकमें युक्तकाय धर आत ॥ ७ ॥

(٧)

جب کبھی گھٹتی ہے نیکی اور بڑھتی ہے بدی
میں عیاں ہوتا ہوں عالم میں بشکلِ عنصری

Whenever there is decay of righteousness,† O Bhârata, and there is exaltation of unrighteousness,‡ then I Myself come forth; (7)

Note पृष्ठ ४०८, ४०९ और २ भी देखो

७

जब-जब ग्लानि धर्मकी होती और पापका बढ़े प्रचार ।
हे भारत ! तब-तब मैं आकर स्वयं लिया करता अवतार ॥

7. Whenever righteousness [7] declines,
And sinfulness [8] the victory gains,

On such occasions, Bharat's son,
I always incarnate Myself.

۷.. جبھی دہرم پر بھاری ویپتا پڑے
ادہرم آکے اسپر سواری کرے
میں پرگھٹ کروں آپنے آپ کو
میرا آتما اس طرح اوترے

जब अधर्म अरु पाप जब, अति उन्नत हो जाय ।
धर्म की हानि हो बहुत, अधोगतिः हो जाय ॥११॥
हे भारत ! तब जन्म मैं, स्वयं ही लेता धार ।
पाप-जन का नाश हो, साधुओं का उद्धार ॥ १२ ॥
धर्म यूं फिर हो जाय दृढ, इसी लिये लूं जन्म ।
प्रतियुग में हे वीर ! मैं, स्वेच्छा से दिव्य जन्म ॥१३॥

۷

رہتی نیکی کی جب نہیں قدر — بن جاتا ہے ہلال یہ بدر
بڑھ جاتا ہے بدی کا امکاں — سرکش ہوتا ہے جب یہ طوفاں
رہتا نہیں کوئی آگہ فرض — دُنیا ہوتی ہے گُمرہ فرض
جب بڑھ جاتی ہے خودپرستی — ہوتا ہوں عیاں بقیدِ ہستی

५३६

साधूआं दी मैं रक्षा कारन
दुष्ट पापीयां नूं मैं मारन
युग युग विच्च हे अर्जुन आंवां
मुड़ मुड़ धर्म दा झंडा लांवां । ८

6

۸— جو نیک ہیں ان سب کو بچانے کیلئے جو بد ہیں نقصان دینے کے لئے
قائم رہ ایک قلب میں ہوتا ہوں دنیا کو دھرم پر چلانے کے لئے

3

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ॥ धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ ८ ॥

दोहा--साधुनकीरक्षाकरौं, पापीडारौंमारि ।
स्वापतरीतिसुधर्मकी, युगयुगमाँझविचारि ॥८॥

जो स्वस्वभावसे अवतार कहा वह स्पष्ट करते हैं धर्महानि अधर्मवृद्धि देखके मैं साधुनके संरक्षणकेवास्ते और दुष्टनके विनाशकेवास्ते युग युगमें धर्मस्थापनके लिये अवतारलेताहौं ॥ ८ ॥

1

For the protection of the good, for the destruction of evil-doers, for the sake of firmly establishing righteousness,† I am born from age to age. (8)

12

दोहा--भक्तनकी रक्षालिए पापिन नाशनिदान ।
आदिधर्मथापनहित युग युग उतरौं जान ॥ ८ ॥

8

To rescue righteous souls oppressed,
to break the might of evil ones,
To set aright the World-Stream's flow,
age after age I enter birth. 8

13

(۸)

2

وقت پر آتا ہوں میں انصاف کرنے کے لئے
قتلِ موذی اور بندہ پروری کیواسطے

साधु-वृन्द-रक्षा करने को, कर अधर्मियों का संहार—
—धर्म स्थापन के निमित्त मैं, लेता प्रतियुग अवतार । (८)

9

Note पृष्ठ ६०८, ६०६ पर और भी देखें —

८

साधुजनोंकी रक्षा करने दुष्टोंका करने संहार।
युग-युगमें पैदा होता हूँ स्थित करनेको धर्माचार॥

8. The virtuous people to protect,
And to destroy the sinful ones,
To set up firmly righteousness,
From age to age I enter birth.

۸

قایم رہے جس سے فرض کی شان
حفظ مردانِ بے ریا کو
زشت اعمالوں کی نیستی کو
ہوتا ہوں زمانے میں نمودار

مُنہ موڑ سکے نہ اس سے انسان
آئینہ طرازی صفا کو
بربادی مسکن بدی کو
کرتا ہوں میں قدرتوں کا اظہار

۸- یہ بھگتوں کے دُکھ کو مٹانے کو ہیں
دُشٹوں کا دھندا مکانے کو ہیں
یُگ یُگ میں اوتار لیتا رہا
دھرم کو ہی قایم کرانے کو ہیں

उंज तां जनम कर्म एह दिसदा
पर हुंगा इक मरम है इसदा
जो कोई एस मरम नूं पावे
जनम मरन थीं सो छुट जावे ।९।

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ॥ त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥ ९ ॥

दोहा—मेरेजन्मऽरुकर्मको, तत्त्वलहैजोजानि ।
देहतजैमोकोमिलै, बहुरिनजनमैंआनि ॥ ९ ॥

हे अर्जुन ! मेरे जन्म और कर्म दिव्य यानी प्राकृतनहीं हैं ऐसे जो निश्चयकरके जानताहै सो देहको त्यागिके फिरिके जन्म नहीं लेताहै मेरे को प्राप्तहोताहै॥

اعمال کی جو چاہتے رہتے ہیں جزا
کرتے ہیں وہ دیوتاؤں کی بس پوجا
دنیا وہ جگہ ہے یہاں اعمال کا پھل
انسان کو فوراً ہی تو ہے مل جاتا

Whoso, thus [living,] knows *in truth* 9
My godly mode of Birth and Work,
His body shed, goes ne'er again
to 'birth', but comes to ME, O Friend.

He who thus knoweth My divine birth and action, in its essence, having abandoned the body, cometh not to birth again, but cometh unto Me, O Arjuna. (9)

दोहा—जन्म कर्म मो दिव्य अरु साधुन हित इह जोय ।
तत्त्वरूपसे जानतो पुनि नहिं जन्मत सोय ॥ ९ ॥

(۹)
میری قدرت کے کرشموں پر گیا جنکا خیال
وہ تناسخ سے بری ہیں مجھ میں ہی انکا وصال

(९)
मेरे दिव्य जन्म-कर्मों का, इस प्रकार जो जानें तत्व,
तज शरीर वह नहीं जनमता, मिलता उसका मुझ में सत्व ।

मेरे दिव्य सुजन्म, कर्मको जो लेता है जान यथार्थ ।
देह छोड़कर जन्म न लेता मुझसे आ मिलता है पार्थ ! ॥

9. Whoever, thus, in very truth
My births divine and action knows,
He, Arjun, on departing hence
Is not re-born but comes to Me.

इस प्रकार के कर्म अरु, जन्म को ले मेरे जान ।
दिव्य ही जो कोई भक्तवर इन को ले पहिचान ॥१४॥
त्यज कर अपनी देह तब, जन्म न फिर वह ले ।
मेरे पास ही जाय आ, तत्त्व समझ यदि ले ॥(9)१५॥

۹ - جنم کرم میرے پوتر صف
ملاوٹ نہ مایا کی ان میں ذرا
جو اس بھید کو جان لے غور کر
جسم چھوڑ کر مجھ میں واصل ہوا

۹

یوں ذائقۂ حیات چکھنا
پھر راہِ عمل میں پاؤں رکھنا
دونوں باتیں مری ہیں اعجاز
ان کا بیشک عجیب ہے راز
ہوکر اس راز سے شناسا
کرتے ہیں جو ترک جسم اپنا
رہتے نہیں دامِ زیست میں قید
مل جاتے ہیں مجھ میں ہوکے ناپید

वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः ॥ बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥ १० ॥

दोहा–रागक्रोधभयकोतजै, मोमेंराखैभाय ।
बहुतज्ञानतपकरिसुजन, मोहीमाँझसमाय ॥१०॥

व्यतीतभयेहैं सांसारिक अनुराग भय और क्रोध जिनके तथा सर्वत्र मेरेहीको जानतेहैं और जो मेरेही आश्रितहैं ऐसे बहुत मेरे स्वरूप ज्ञानरूप तपकरके पवित्रहुएभये मेरीसदृशताको प्राप्तभये हैं ॥ १० ॥

काम क्रोध भय नूं जो त्यागया
आके मेरी शरणीं लागया
मेरे वश्च के ध्यान लगावया
ज्ञान अग्नी विच्च शुद्ध हो जावया

तद ओह मुझ विच लीन हो जांदै
एसे ज्ञानी मोक्ष नूं पांदै ।१०।

خواہش خوف و غضب کو دل سے کھو کر ۔ کر کے دھیان محض میرے ہو کر
بہتیرے ہو کے گیان اور تپ پاک ۔ پہنچے ہیں مجھ کو دھوت دنیا دھو کر

From passion, fear and wrath set free, 10
transformed to ME, immersed in ME,
Full many, by the Wisdom-Fire
made pure, have come to My Estate.

Freed from passion, fear and anger, filled with me, taking refuge in Me, purified in the fire* of wisdom, many have entered into my Being. (10)

दोहा--क्रोधरागभयहीन ह्वै मोमें चित्तलगाइ ।
ज्ञानशुद्ध मम शरण हो बहुतन मुक्ती पाइ ॥ १० ॥

(१०) राग क्रोध भय को तज कर जो, मेरे ही आश्रित हैं भूप !
ज्ञान और तप से पवित्र हैं, वे सब हैं मेरे ही रूप ।

(١٠)

میری ہستی میں سمائے طالبانِ باصفا
برقِ عرفان سے جلا کر خرمنِ بیم و رجا

१०

मेरे आश्रित, मत्पर होकर, राग, क्रोध, भयसे हो हीन ।
बहुत ज्ञान-तपसे शुचि होकर मम स्वरूपमें हुए विलीन ॥

10. From passion, fear, and anger freed,
Absorbed in Me, entrenched in Me,
And purified in wisdom's fire
Full many a soul has entered Me.

۱۰۔ نہ غصہ نہ چنتا نہیں جن کو ڈر
میرے آسرے مجھ میں من بے خطر
جو تپ گیان سے پھر پوتر ہوئے
میرے بھاو کو پا کے جاتے ہیں تر

ज्ञानरूप तप इसीसे, वैरागी सुपवित्र ।
भय अरु क्रोधको त्यज कोई, मेरे भाव सुपवित्र ॥१६॥
को गये पहुंच ही सर्वथा, मेरे परायण हो ।
मुझे ही, हो गये प्राप्त वे, मम आश्रित् सभी हो ॥१७॥

۱۰

لذّاتِ جہاں سے دور و بیباک
رہ کر غصّہ کی گرد سے پاک
ہر اِک جانب سے دِل ہٹا کر
یعنی مری ذات میں سما کر
تسلیم و رضا میں بیش از بیش
اکثر اصحابِ معرفت کیش
اپنی ہستی مٹا چکے ہیں
میری منزل کو پا چکے ہیں

९९

ये यथा मां प्रपद्यंते तांस्तथैव भजा-
म्यहम् ॥ मम वर्त्मानुवर्त्तंते मनुष्याः
पार्थ सर्वशः ॥ ११ ॥

दोहा—जोमोकोजैसेभजै, हौंतैसोफलदेत ।
अर्जुननरसबजक्तमें, मेरोमगगहिलेत ॥ ११ ॥

हे पृथापुत्र अर्जुन ! सर्व मनुष्य ममवर्त्म याने जो जो सकाम निष्काम वेदमें मार्ग कहेहैं वे मेरेही कहे मार्गहैं. उन्हीं मार्गोंके आश्रितकर्म करतेहैं तहां जो

मेरेको जैसे भजंतेहैं मैं उनको वैसेही भजताहौं; याने जो सकाम इंद्रादिरूप मेरेको भजतेहैं उनको 'तदेवाग्निस्तत्सूर्य; अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता'। इत्यादि प्रमाणसे इंद्रादिलोक पुत्रादिकामना देताहौं और जो निष्काम मेरेको सर्वेश्वर जानके सर्वकर्म 'कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा' इत्यादिप्रमाणसे मेरे अर्पण करतेहैं उनको मेरे स्वरूप वैभवको प्राप्त करताहौं ॥ ११ ॥

दुनियां दे सब राह घनेरे
हे पारथ ओह सब ने मेरे
जो जिस मारग कदम वधावे
श्रद्धा नाल मेरे तांईं आवे
मैं वी तिस नूं तिवें अपनांवां
अपना आप तिवें प्रगटांवां । ११

11- جس طرح کوئی پاس پہنچتے ہیں مرے
ویسا ہی سلوک کرتا ہوں میں اُن سے
سب طرح سے لوگ جہاں کے ارجن
میرے ہی راستے پہ ہیں یاں چلتے

11

However one approaches ME,
thus even do I welcome him,
The myriad winding tracks of men
are but the footsteps where I trod.

दोहा--जिसविध जे मो शरण हों तिसविध तिन उरलाउं ।
मो पथ चलते पुरुष सभ सज्जन जे जगमाउं ॥ ११ ॥

11. However men may come to Me,
Thus even do I welcome them;
By whatsoever path they come,
That path is mine, O Prithā's son.[9]

(11)
حسبِ نیّت سب کو میں دیتا ہوں فعلوں کا ثمر
ساری دُنیا کر رہی ہے میری منزل کا سفر

11- جو جس بھاو سے ہے دھیاتا ...

(११) 9

जो मुझ को जैसे भजता है, उसको वैसा दूँ परिणाम:
मेरे पथ पर ही चलते हैं, सर्व विश्व के नर मतिधाम !

However men approach Me, even so do I welcome them, for the path men take from every side is Mine, O Partha. 12 (11)

११ 7

जो भजते जिस भाँति मुझे हैं फल दूँ उनको उसी प्रकार ।
मेरे ही उस एक मार्गसे मानव सारे होते पार ॥

۱۱- جو جس بھاؤ سے ہے دھیاتا مجھے

میرا پریم کر کے مناتا مجھے
سکامی کی پورن کروں کامنا
جو نشکام ہے خاص پاتا مجھے 5

11

مجھ سے ملنے کی آرزو میں
جس سمت ہیں لوگ دل لگاتے
ارجن مگر آدمی ہیں جتنے
ہے سب کی نظر نگاہ میری

4

میری منزل کی جستجو میں
مجھ کو اُسی سمت سے ہیں پاتے
ہیں سب کے جُدا جُدا طریقے
طے کرتے ہیں یہ راہ میری

उन्हें मैं त्यों ही सेवता, जो मुझे हों ज्यूं प्राप्त । 10
सभी भक्त हे पृथासुत! मार्ग मेरेको हों प्राप्त ॥११॥

जो कर्मां विच्च सिद्धी चाहवण
देवतयां नूं भोग लगावण
छिप्र मातर एह जनम है तेरा
कीतयां पार लंगगा बेड़ा । १२ ।

कांक्षंतः कर्मणां सिद्धिं यजंत इहै देवताः ॥ क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥

दोहा—कर्मसिद्धिकीचाहकरि, पूजतिदेवनिलोय ।
कर्मनिकीनरलोकमें, सिद्धिवेगदैहोय ॥ १२ ॥

जो कर्मोंकी सिद्धिकी इच्छाकरतेभये इसलोकमें देवताओंको यजन करतेहैं उनकी निश्चयकरके शीघ्र मनुष्यलोकेमें कर्मसेउत्पन्न सिद्धि होती है ॥ १२ ॥

۱۲۔ اعمال کی جو چاہتے رہتے ہیں جزا
کرتے ہیں وہ دیوتاؤں کی سیوا پوجا
دنیا وہ جگہ ہے جہاں اعمال کا پھل
انسان کو فوراً ہی تو ہے مل جاتا

(۱۲)
پوجتے ہیں دیوتاؤں کو غرض مند آدمی
ایسے فعلوں کا ثمر ہوتا ہے لیکن عارضی

They who long after success in action on earth worship the Shining Ones; for in brief space verily, in this world of men, success is born of action. (12)

12

They who for work's fruition lust,
make offerings here to Powers Bright,—
For swiftly, in this world of men,
fruition comes of pious works.

दोहा—लाभहेतु फलके करै कर्म हिं पुरुष बहोत ।
फलसिद्धी या लोकमें तुरत कर्मसों होत ॥ १२ ॥

12. Those, here, who seek success in work,
Make offerings to the Shining Ones,
For swiftly in this world of men
Success from action is achieved.

(१२)
करते हैं देवों की पूजा, कर के जो अभिलाषा स्वार्थ;
उन को मनुज लोक में मिलती, शीघ्र सिद्धि कर्मों से पार्थ !

1664

۱۲- یہ مانش سبھی کامنا کے پیارے !!
مجھے چھوڑ جاتے ہیں دیوی دوارے
ہوں سیدھ کام دُنیا کے جلدی سے جلدی
اسی کر کے ہیں دیوتا پوُج سارے

10

उस परही वे चलें सदा, पर कोई पूजें देव।
इस जगमें रख कर्मकी, सिद्धिकी चाह स्वयमेव ॥ १९ ॥
शीघ्र ही सिद्ध हो जायं वह, कर्म में अपने प्रवीण।
इसी मानुषी जन्म में, सिद्धि देवाधीन ॥ २० ॥

۱۲

ہیں رکُن جو دفتر جہاں کے
کرتے ہیں پرستش ان کی انساں
اور اس میں ذرا بھی شک نہیں ہے
کرتے ہیں وہ مست کامرانی

ناظم ہیں زمین و آسماں کے
ہوکر اجر عمل کے خواہاں
یہ حرف ہے وہ جو حک نہیں ہے
نظارۂ روئے شادمانی

१२

कर्म-सिद्धिकी इच्छा करके देव-अर्चना करते लोग।
क्योंकि यहाँपर जल्दी मिलते उनको कर्म-सिद्धिके भोग ॥

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभा-
गशः ॥ तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्य-
कर्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥

दोहा–चारोंवर्णजुमैंरचे, करिगुण कर्म विभाग ।
हौंयाकोकरतारहौं, ताहिमोहिंअनुराग ॥ १३ ॥

गुणकर्मविभागसे जैसे सत्त्वगुणप्रधान ब्राह्मण उनके शमदमादिकर्म, सत्त्वरजप्रधान क्षत्रिय उनके शूरत्वादिकर्म, रजस्तमःप्रधान वैश्य उनके कृषिवाणिज्यादिकर्म, तमःप्रधान शूद्र उनके परिचर्यात्मक कर्म ऐसे गुणकर्मविभागकरके चातुर्वर्ण्य यह संसार मैंने सृजाहै उसको अविनाशी कर्त्ता भी मेरेको अकर्त्ता जानो ॥ १३ ॥

मैं जो चार वर्ण उपजाए
गुण कर्मां अनुसार बणाए
सब दा कर्ता मैंनूं जाणीं
अविनाशी नूं सदा पछाणीं

कर्म करां सब वर्ण बणावां
तद भी कर्म रहित सद्वावां । १३ ।

۱۳- اوصاف جدا رکھ کے اور اعمال جدا
چاروں ورنوں کو میں نے پیدا کیا
تبدیلی سے بری ہوں نہ خالق ہوں نا
خالق میں ہی ہوں پھر بھی تو ان سب کا

(१३)
गुण-कर्मों के ही विभाग से, चारों वर्ण रचे बल-भूर;
अविनाशी कर्त्ता उसका, और अकर्त्ता भी मैं शूर !

(۱۳)
چار ورنوں میں صفت اور فعل کی تقسیم کی
میں نے لیکن میں رہا دائم علائق سے بری

13. According to the *guṇas* three
And acts,[10] I made the four-fold caste,[11]
But though its Author yet I am,
Immutable and actionless.[12]

From ME the four [Soul] -Caste-Rays sprang, 13
root-pow'r with function* matched in each;
No author save Myself has this,
actless and changeless though I be.

The four castes were emanated by Me, by the different distribution of qualities* and actions: know Me to be the author of them, though the actionless and inexhaustible. (13)

दोहा–गुण अरु कर्म विभागसों रचे वर्ण हों चार ।
ताकौ हौं कर्ता तऊ मानौ जिन कर्तार ॥ १३ ॥

۱۳۔ گنوں کرم بنائے ورن چار جو
برہم۔ کھتری۔ ویش اور سیوا وار جو
نیارا ہیں ان کے گنوں سے اکرتا
مجھے پھر بھی کہتے ہیں کرتار جو

(بقیہ صفحہ ۴۹) جدّت طرازی معلوم ہوگی۔ کیونکہ اشلوک میں اس کا ذکر نہیں ہے لیکن دراصل گن اور کرم (سرشت و اطوار) ایک ارتقائی منزل کے آئینہ دار ہوتے ہیں۔ "تقسیم یہ سب ہے ارتقائی" محض "ذی روحوں کی ہیں منزلیں چار" کا اعادہ بتفصیل ہے اور مترجم کی جدّت طرازی کا نمونہ یا شرح اضافی نہیں ہے۔ ۱۳ یہ دو شعر اشلوک کے دوسرے مصرعہ کا ترجمہ ہیں، اور یہ ترجمہ اس شرح پر منحصر ہے جو شارحین کی اکثریت نے کیا ہے۔ دیگر شارحین کے خیال کے مطابق اس کا ترجمہ حسب ذیل ہو سکتا ہے ؎

افعال کا گو نہیں میں بانی ؛ ہستی میری ہے جاودانی ؛ یہ سب تقسیم ہے مرا کام ؛ میں نے ہی دیا ہے اس کو انجام

पर सरजा मैं ने स्वयं, कर्म अरु गुणको बांट ।
चार जातिका वर्ण शुभ, कर्म मानुषी बांट ॥ २१ ॥

स्रष्टा, हर्ता, विधाता, मुझे ही तू पहिचान ।
वर्ण चतुष्टय का सदा, अविनाशीश्वर मान ॥ २२ ॥

۱۳

ارجن حسب سرشت و اطوار ذی روحوں کی ہیں منزلیں چار
ہیں میں نے ہی یہ حدیں بنائی تقسیم یہ سب ہے ارتقائی
گو میں نے رکھی ہے اس کی بنیاد ہوں قید عمل سے پھر بھی آزاد
سمجھو نہ مجھے تم اس کا بانی ہستی میری ہے جاودانی

१३

चारों वर्ण रचे मैंने गुण-कर्म भेदसे हे मतिमान ।
मुझ इनके कर्त्ताको भी अविनाशी अक्रिय ही तू जान ॥

न एह कर्म फसावण मैनूं
न फल मोह विच पावण मैनूं
एह गल जाणा जो मुझ नूं ध्यावे
कर्म जाल विच सो न आवे ।१४।

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा ॥ इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ॥ १४ ॥

दोहा—कर्मनमोकोलगतहैं, मोहिंनफलकीचाह ।
ऐसोजोमोकोलखे, कर्मनबाँधैताह ॥ १४ ॥

जो प्रथम कहा कि, मेरेको अकर्त्ता जानो उसका कारण कहतेहैं सो ऐसा कि, मेरेको कर्मफलमें इच्छा नहीं इससे मेरे कर्म नहीं लिप्तहोतेहैं ऐसा मेरेको जो जानताहै सो कर्मोंकरके नहीं बँधता है ॥१४॥

(۱۴)
مجھ میں لوث افعال اور انکے نتائج کا نہیں
جو مرا محرم ہے وہ افعال میں پھنستا نہیں

Nor do actions affect Me, nor is the fruit of action desired by Me. He who thus knoweth Me is not bound by actions. (14)

14. No action e'er polluteth Me,
Nor do I wish for action's fruit,
Whoso, thus, knoweth Me in truth
Is fettered not by action's chains.

No action leaves a trace on ME : 14
I feel no thirst for action's fruit.
Whoso thus [in himself] knows ME,
cannot be bound by aught he does.

(१४)
लीन नहीं होता कर्मों में, नहीं मुझे है फल की चाह;
ऐसे मुझे जानता, उसको, नहीं बहाता कर्म-प्रवाह ।

दोहा—कर्म न बंधन होय मम कर्मफलेच्छा नाहिं ।
इसविध जो मोहि जानतो कर्म न बांधत ताहि ॥ १४ ॥

۱۴- کرم پھل کی مجھ کو نہیں کامنا
اسی سے کرم نہ سکیں ہیں گرا
میرا بھگت جو جان لے بھید یہ
پھنسے نہ وہ کرموں کے پھندے ہیں آ

5

इन कर्मों के फलोंकी, भी न मुझे कोई चाह । (13)
मुझे फंसा भी सकें न, यद्यपि कर्म अथाह ॥ २३ ॥
ऐसा जो मुझे समझता, याथातथ्य स्वरूप ।
बांध उसे सकें कर्म न, वह निर्लेप स्वरूप ॥ (14) २४ ॥

۱۴

بے لوث حوائج عمل سے
کرتا نہیں جستجو میں اس کی
مرد آگاہ جو بشر ہے
اس غم میں نہیں وہ جان کھوتا

4

بے فکر نتائج عمل سے
رکھتا نہیں آرزو میں اس کی
اس رازِ نہاں سے باخبر ہے
پابند نہیں عمل سے ہوتا۔

१४ 7

कर्म न बाँधे मुझे, न मेरी इच्छा कर्मफलोंमें युक्त ।
जो मुझको इस भाँति जान ले वह कर्मोंसे होता मुक्त ॥

जो नर सनं प्रभ पावण वाले
मुक्ती मारग चाहवण वाले
धर्म कर्म विच्च चित्त सन धरदे
नेम कर्म सब सन ओह करदे
अर्जुन तिवें कर्म नूं कर तूं
पारथ वडयां दा राह फड़ तूं । १५ ।

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ॥ कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥ १५ ॥

दोहा—जोचाहतहैमुक्तिको, कर्मकरैतिनआय ।
तातेतूहूंकर्मकरि, पहिलनिकोमलपाय ॥ १५ ॥

पूर्वसमयके मनुइत्यादिक मुमुक्षुजनोंनेभी ऐसे जानके कर्म कियाहै तिससे तुमे पूर्व मुमुक्षुनेंकरके कियेभये कर्महीको करो ॥ १५ ॥

۱۵- کرتے رہے کرم جان کر بات یہی   پہلے سب طالب نجات ابدی
کر تو بھی کرم یاں اسی باعث سے   پہلوں سے بھی پہلوں نے کیا ہے یوں ہی

(१५) पूर्व काल के मुमुक्षुओं ने, ऐसा जान, किए थे कर्म;
इससे पार्थ ! उन्हीं कर्मों को, तुम भी करो जान कर मर्म ।

۱۵
پہلے عارف کرتے آئے ہیں عمل اس علم پر
تو بھی کر یہ کام جسکو کر چکے وہ پیشتر

15. Thus knowing Me, the men of old
Did act in order to be freed,
Thou too should act as they did act
The ancients in the olden time.

Thus knowing, Ancient Kings worked on, 15
though Freedom was their hearts' Desire.
Hence take up thou in turn the Task
that old Kings wrought in days of yore.

Having thus known, our forefathers, ever seeking liberation, performed action; therefore do thou also perform action, as did our forefathers in the olden time. (15)

दोहा—मम ज्ञानसे पूत जे तिनहू कर्महि कीन ।
यासों तू हूँ कर्मकर जो वृद्धन करलीन ॥ १५ ॥

۱۵۔ پوُرب کال کے جو گیانی ہوئے
کئے کرم پر وہ نہ مانی ہوئے

کرم کر تو نشکام ہو کر کے پیارے
تیرے پورشا جیسے دھیانی ہوئے

इसी भेदको जानकर, पूर्वज कर गये कर्म।
रख मुक्ति की चाह शुभ, पाल गये निज धर्म ॥२१॥
पहिले पहिले पूर्वजों, ने भी किया निष्पाप!।
कर्म जो था कर तू वही, इसी लिये हर ताप ॥२२॥

۱۵

عہد ماضی کے مرد کامل
آگاہ تھے جادۂ عمل سے
تم بھی یہ طریق اب بدل کر
یکتا ہو جاؤ فرد بن جاؤ

عارف آزاد صاحبِ دل
سرمست تھے بادۂ عمل سے
اُن کے نقشِ قدم پہ چل کر
میدانِ عمل کے مرد بن جاؤ

१५

यही जानकर मुमुक्षुओंने पहिले कर्म किया था पार्थ।
इस कारण कर तू वह पहिले पूर्वज-कृत ही कर्म यथार्थ॥

४
१६

ज्ञानी पंडित वी भुल जावण
कर्म अकर्म दा भेत न पावण
कर्म तत्त सुण मैं समझावां
सब पापां थों दूर हटावां । १६ ।

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः ॥ तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १६ ॥

दोहा—कौनअकर्मसुकर्मको, रहितपंडितौमोहिं।
मुक्तिकाजसोइकर्मकरि, कहेदेतहौंतोहिं ॥१६॥

कर्म क्याहै और अकर्म क्याहै ऐसे इसविषयमें

कविजन भी मोहितभये सो कर्म मैं तुम्हारेको कहूँगा
जिसको जानके संसारसे मुक्त होगे ॥ १६ ॥

۱۶- کیا ہے کرم اکرم بھی ہے کیا
اے ارجن تجھکو میں بتاتا ہوں کرم
حیران ہیں دنیا کے یہاں سب دانا
تو جس کو سمجھ کے ہو برائی سے رہا

(۱۶)
امتیاز قید و آزادی میں عاجز ہیں عقیل
میں تجھے کاہش سے بچنے کی بتاتا ہوں سبیل

"What is action, what inaction?" Even the wise are herein perplexed. Therefore I will declare to thee the action by knowing which thou shalt be loosed from evil. (16)

16. What action and inaction are,
The sages even do not know;
Of action, hence, I'll speak to thee,
Which knowing, thou shalt freedom [13] gain.

"What is action, what inaction?— 16
great Thinkers e'en have blundered here.
I'll tell thee a Mode of Action,
which mastered, thou'lt go free from ill.

(१६)
कर्म-अकर्मों के विचार में, मोहित होते हैं धीमान्;
वही कर्म तुम से कहता हूँ, अशुभ-विनाशी जिसका ज्ञान।

दोहा—ज्ञान कर्मके रूपमें पठितहुँ संशय होय।
जाको कर बंधन छुटै कर्म कहौं तोहि सोय ॥ १६ ॥

١٦- کرم کیا ہے اور کیا نہ کرنے کے لوگ
ہیں حیران اس میں کو بیشتر سے لوگ
اسی کرم کا راز بتلاؤں گا
بیٹے جس سے تیرا ہو دور روگ شوگ

कर्मविषय अति गूढ है, कवि भी घबरा जायं।
कर्म कौन सा है, नहीं, बूझ न वह यह पायं ॥ २७॥
सो मैं तुझे बताऊंगा, कर्म कौन निष्पाप ! ।
जान जिसे छुट अशुभसे, तू जाय हो निष्पाप ॥ २८॥

١٦

کیا ترک عمل، عمل ہے کیا چیز
اکثر دنیا کے دانش آگاہ
اب راز تمہیں بتاؤں گا وہ
جس سے ہوگا بخیر انجام

دشوار بہت ہے اس کی تمیز
اس پھیر میں ہو چکے ہیں گمراہ
شہ راہ عمل دکھاؤں گا وہ
ہو جائیں گے دل سے دور آلام

१६

इसमें कवि भी भ्रम-वश होते कौन कर्म है, कौन अकर्म ।
कहूँ कर्म वह, जिसे जान तू पाप-मुक्त हो, पावे शर्म ॥

कर्म विकर्म दा तत्व पछाणीं
कर्म अकर्म दे भेत नूं जाणीं
मर्म कर्म दा मुशकिल भारी
पारथ ! कर्म गती है न्यारी । १७ ।

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च वि-
कर्मणः ॥ अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना
कर्मणो गतिः ॥ १७ ॥

दोहा–जान्योचहियेकर्महूं, औरविकर्मस्वभाय ।
सुनिअकर्मगतिलीजिये, गहनकर्मकेदाय ॥१७॥

जिसै वास्ते कि कर्म याने करनेयोग्य कर्म उसका रूपभी जाननौं चाहिये और विकर्म जिस एककर्ममें विविधप्रकारहै उसका रूपभी जाननाचाहिये और अकर्म जो निश्चयात्मकबुद्धिकरके केवल ईश्वराराधनार्थ निष्काम कर्म उसका भी रूप जाननाचाहिये इसवास्ते कर्मकी गति दुर्गम है ॥ १७ ॥

It is needful to discriminate action, to discriminate unlawful action, and to discriminate inaction; mysterious is the path of action. (17)

(۱۷)
ترکِ فعل و فعلِ نیک و فعلِ بد پہچان لے
منزلِ اعلیٰ ہے ترکِ فعل دل میں ٹھان لے

17. 'Tis needful one should understand
What action and inaction are,
And what unlawful action means,
For action's nature is abstruse.

[Deep hidden] act must be made out, 17
wrong act unmasked [where all seems right;]
Inaction . . . is a riddle, too :—
inscrutable is Action's Path.

(१७)
कर्म, विकर्म, अकर्म आदि का, है आवश्यक तत्वज्ञान;
गति अति गहना है कर्मों की, उसे जान लो पार्थ ! सुजान ।

दोहा–कर्मयोग निकर्म अरु ज्ञानयोगको तात ।
जानन योग्य सुरूप है गहन कर्मकी बात ॥ १७ ॥

तीन विषय यहां ज्ञेय हैं, कर्म अकर्म विकर्म ।
गूढ है अति गति कर्मकी, अतः जान त्रय मर्म ॥१६॥

۱۷

کیا واقعی ہے "عمل" کی صورت ہے اس کے سمجھنے کی ضرورت
کیا "ترک عمل" کے ہیں حقائق باتیں ہیں یہ سوچنے کے لائق
پھر "ناجائز عمل" ہے کیا چیز اس کی بھی ہے ناگزیر تمیز
ہے ان باتوں پہ غور کرنا گہرے دریا کے پار اترنا

१७

ज्ञान कर्मका कर, विकर्मका भी तू परिचय जान यथार्थ ।
फिर अकर्म भी जान पूर्ण तू, गहन कर्मकी गति है पार्थ ! ॥

कर्म बिच अकर्म जो देखे
बिच अकर्म कर्म जो पेखे
सो नर बुद्धी मान कहावे
कर्म करे योगी सदवावे । १८ ।

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ॥ स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥

दोहा–कर्मनमोंअकर्मजे, लखैअकर्मनिकर्म ।
बुद्धिवंततिनसबकिये, भेटेसनकेभर्म ॥ १८ ॥

अब कर्म और अकर्मका स्वरूप जानना कहतेहैं जो प्रारब्धकर्ममें अकर्म याने आत्मज्ञान देखे याने इस निष्कामकर्महीसे ज्ञानहोयगा इससे यह ज्ञानहीहै और जो मनुष्य अकर्म जो आत्मज्ञान उसमें कर्म याने यह कर्मसे भया कर्महीहै ऐसा देखनेवालामनुष्य मनुष्योंमें बुद्धिमान् है सो योगी और सोई सर्वकर्मोंका- करनेवालाहै ॥ १८ ॥

(۱۸)

لازم و ملزوم ہے ایجاب و ترک افعال کا
وصلِ حق ہے وہ عارف جسپہ یہ عقدہ کھلا

18. Who in inaction action sees,
And action in inaction finds,
Attuned is he, and wise 'mongst men,
E'en though he doeth every act.

Who Actlessness in action sees, 18
and, in inaction, action hid,—
Illumined among men is He
at-One, whatever deed He does.

(१८)
आत्म ज्ञान कर्म में देखें, उसको साधन मानें कर्म;
वह मनुजों में बुद्धिवान है, उसको मिला योग का मर्म ।

He who seeth inaction in action, and action in inaction, he is wise among men, he is harmonious, even while performing all action. (18)

दोहा--कर्म करै निजजीवके ज्ञान रूपको जोय ।
जानहु रूप करै क्रिया (कर्म) कुशल कर्मकर सोय ॥ १८ ।

۱۸ - کرم کرتا جو گیان میں لین ہے
گیانی جو کرموں میں پر بین ہے
وہی کرم یوگی وہی بُدھی مان :
وہ کرموں کا کرتا نہیں دین ہے

(१०)

कर्मरहितता में जिसे, पूर रहा ही कर्म ।
दिखे, कर्म में अकर्मता, वही जानता मर्म ॥ ३० ॥ (१८)
कर्म समग्र वह कर चुका, योगी वही महान् ।
सारी मनुज-समाज में वही सुबुद्धिमान् ॥ ३१ ॥ (४/१८)

۱۸

دُنیائے خودی سے ہاتھ اُٹھائے
جس کے لئے "ترکِ ہی" "عمل" ہو
وہ انسانوں میں باخبر ہے
ہے پیرو مسلکِ طریقت

جو "ترکِ عمل" "عمل" میں پائے
عرفاں جس کو یہ بے خلل ہو
ذی ہوش و خرد ہے دیدہ ور ہے
مردِ عامل ہے درحقیقت

१८

जो अकर्ममें कर्म देखता और कर्ममें लखे अकर्म ।
सबमें ज्ञानी, युक्त, वही नर करनेवाला है सब कर्म ॥

یہ شخص کا ہر ایک کام خواہش سے بری ہوتا ہیں جس کا ارادہ بھی نفس -۱۹
گیان کی اگنی میں سب کام جل گئے ہیں ان کو دانا لوگ پنڈت کہتے ہیں

यस्यं सर्वे समारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः॥ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पंडितं बुधाः ॥ १९ ॥

दोहा—जाकेसबआरंभनिज, विनाकामनाहोत ।
पंडितत्यहिपंडितकहत, दहतकर्मकेगोत ॥१९॥

जो कर्म प्रत्यक्ष कररहेहैं उसकी ज्ञानाकारता कैसी होगी सो कहते हैं सो ऐसी कि, जिसके सर्व लौकिक वैदिककर्मोंके आरंभे कामनासंकल्पें रहितहैं ज्ञानरूप-अग्निकरके दग्धभये हैं बंधककर्म जिसके उसको विद्वानूजन पंडित कहते हैं ॥ १९ ॥

बिन संकल्प जो कर्म कहावय
ज्ञान अग्नी विच भस्म हो जावय
बिन फल इच्छया कर्म जो छोड़ै
सो नर बुध ज्ञानी होवै ।१९।

Whose works are all free from the moulding of desire, whose actions are burned up by the fire of wisdom, him the wise have called a Sage. (19)

(۱۹)
آتشِ عرفاں میں سب افعال جسکے جلگئے
عارفونکی منزلت دُنیا میں حاصل ہو اُسے

19. The man whose every act is free
From fancies [14] and from all desire,
Whose acts are burnt in wisdom's fire,
Is by the learned called a sage.

In all His undertakings, free 19
from any prompting of desire,
His deeds burnt pure in Wisdom-Fire,—
a Knower do the Wise call Him.

(१९) इच्छा-संकल्पों से विरहित, जिन के होते हैं सब कार्य;
ज्ञान-अग्नि से कर्म दग्ध हैं, उसको कहते पण्डित आर्य ।

दोहा—छांडि कामसंकल्प अरु कर्म करै नर जोय ।
ज्ञानवह्निसों प्राग जिस भस्म भए—बुध सोय ॥ १९ ॥

(10)

इच्छा फुरना त्याग ही, हों समय आरंभ ।
जिसके सभी सुकर्म शुभ, योग उसका आरंभ ॥३२॥
बुद्धिमान् पण्डित उसे, ही कहें नर सुश्रेष्ठ । (19)
कर्म भस्म किए ज्ञानकी, अग्निमें जिसने श्रेष्ठ ॥३३॥

19

بندہ جو نہیں کسی غرض کا — بیمار نہیں جو اس مرض کا
جس کے دل کا ورق ہے سادہ — کرتا ہے جو کام بے ارادہ
اس کے افعال اور کردار — ہیں آتشِ معرفت سے فی النّار
ہر اک رازِ عمل سے واقف — دانا کی نظر میں ہے وہ عارف

१९

काम-वासना-विरहित होते जिस नरके सारे उद्योग ।
ज्ञान-अग्निसे कर्म जले हों उसको बुध कहते बुध-लोग ॥

त्यक्त्वा कर्मफलासंगं नित्यतृप्तो निराश्रयः ॥ कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित् करोति सः ॥ २० ॥

दोहा--कर्मफलनिछोडेसदा, तृप्तकरैनहिंआस ।
ताकोकर्मनिकर्महूँ, लगैनभवकीफाँस ॥ २० ॥

जो कर्मफलैका संबंध छोडके निरंतर आत्मस्वरूपैहीमें तृप्त नश्वर संसारके आश्रयरहित कर्ममें प्रवृत्तभी है तोभी सो कुछ नहीं करताहै ॥ २० ॥

कर्म फलां नूं जो छड जावण
हो निर आसरा तृप्ती पावण
सो कर्मां विच्च नहीं भरमांदे
करके वी निशकर्म सदांदे । २० ।

(२०)
रहै निराश्रय और तृप्ति-युत, तजै कर्म की फल-अभिलाष,
फिर कर्मों में रत हो तौ भी, पड़ती नहीं कर्म की पाश ;

(۲۰)
جو تمنّا دُور کرکے ذات میں مسرور رہے
فعل سے برتر ہے لیکن فعل پر مجبور رہے

20. All greed of action's fruit cast off,
On none relying, e'er content,
Although in work he is engaged
Yet such an one doth nought at all.

20
All greed of action's fruit cast off,
fore'er content, involved in naught,
Stupendous though His Labour be,
no single thing does that Man '*do*.'

Having abandoned attachment to the fruit of action, always content, nowhere seeking refuge, he is not doing anything, although doing actions. (20)

दोहा—आत्मतृप्त हो त्यागफल प्राकृत आश्रयहीन ।
करतहु कर्म करै न सो ज्ञान बढा तिन लीन ॥ २० ॥

आसक्ति त्यज कर्मके, फलमें जो है वीर!
हो आश्रित नहीं किसीके, सदा तृप्त अरु धीर ॥३४॥
हो कर्मों में रहे लगा, फिर भी रहे निर्लेप।
करता रहता सभी कुछ, कुछ न करे निर्लेप ॥ (20) ३५ ॥

۲۰

ثمرہ کی ہوس سے ہیں جو بے لاگ — جلتی نہیں جن کے دل میں یہ آگ
آسودہ و مائلِ مساوات — ہر دم محوِ سُرورِ بالذّات
محدود نہیں ہے جن کا امکاں — جن کو نہیں احتیاج دوراں
گو راہِ عمل سے ہیں گزرتے — دراصل نہیں وہ کچھ بھی کرتے

२०

तज आसक्ति कर्मफलकी जो नित्य निराश्रय, तृप्त महान।
मग्न हुआ भी वह कर्मोंमें कर्म नहीं कुछ करे सुजान ॥

४
२९

बिन आशा जो कर्म कमांदे
मन चित्त होवरा वस जिन्हांदे
ममता लोभ नूं जो छड देंदे
नाल शरीर ही कर्म करेंदे
सो मरयादा भन्न दे नांहीं
पाप दे भागी बरादे नांहीं । २१

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः ॥ शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥ २१ ॥

दोहा—जीतेइंद्रियदेहनहिं, कामपरिग्रहजाहि ।
देहकाजकर्मनिकरै, पापनलागततांहि ॥ २१ ॥

जो कर्मफलकी आशारहित चित्त और मन जिसका संयममेंहो जिसने परमात्म प्रीतिविना और सर्व उपासना त्यागीहो सो केवल शरीरसंबंधी कर्मको करतां भया कर्मबंधनरूप पीडाको नहीं प्राप्तहोताहै ॥ २१ ॥

۲۱- خواہش نہیں جس کو جس نے دل سے روکا
سب ساماں جس نے جمع کرنا چھوڑا
جو یاں کرتا ہے محض جسمانی کام
لوث عصیاں نہیں ہے اس کو اصلا

21
Hoping for naught, his mind & self controlled, having abandoned all greed performing action by the body alone, he doth not commit sin.

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥
He who seeth inaction in action and action in

۲۱- جو آشا و چنتا سے بہت دور ہے
کیوں آتما ہیں وہ مسرور ہے
جسم سے ضروری کرے گو وہ کام
کرم کی نہ اس کو لگے دھول ہے

(۲۱)
جو علائق سے مبرا ضبطِ دل سی شاد ہے
موردِ عصیاں نہیں افعال سی آزاد ہے

21. Hope-free,[15] his mind and self controlled,
And all his earthly goods renounced,
Corporeal merely all his acts,
And hence no sin doth cling to him.

Hope-free, His Mind-sphere ruled by Will, 21
all thought of selfish grasping banned,
Confining act to Body's Realm,
no taint of sin adheres to Him.

(२१)
सब परिग्रह आशा के त्यागी, करके निज आत्मा मन वश्य;
देह मात्र से कर्म करें जो, पाप-मुक्त वे रहें अवश्य ।

दोहा—त्यागि काम ममता सभ बशकर मन अरु काय ।
कायमात्रसों कर्मकर पुनि संसार न आय ॥ २१ ॥

फंसना लालच त्यज दिये, जिसने सर्व प्रकार ।
आशा न रक्खी कोई भी, आत्मा योग लिया धार ।३ ॥
वश में लिया कर चित्त निज देहसे ही कर कर्म ।
पाप से हो कभी लिप्त न, लगे उसे न अधर्म ॥३ ॥

۲۱

ثمرے کا مزہ نہیں جو چکھتا
ہے ضابطِ جسم و دل جو انساں
لذّات کے ترک کر کے اسباب
کرتا ہے فقط وہ جسم سے کام

اُمید اِس کی نہیں جو رکھتا
حاصل جسے ذات کا ہے عرفاں
سب طاق پہ ایسے دھر کے اسباب
آتا نہیں اس پہ کوئی الزام

२१

आशारहित, सु-संयत मानस, तजकर सर्वपरिग्रह आप ।
केवल शारीरिक कर्मोंको करता, उसे न होता पाप ॥

यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वंद्वातीतो विमत्सरः ॥ समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥ २२ ॥

दोहा—यथालाभसंतोषजो, दुखसुखलखैनकोय ।
सिद्धअसिद्धीएकसो, कर्मबंधनहिंहोय ॥ २२ ॥

जो आपही आय मिले इतनेही लाभसे संतुष्टहो और जो सुख दुःख लाभालाभ जयपराजय हर्षशोक इत्यादिक द्वंद्वोंकरके रहित होय मत्सर जो दूसरेका सुख न सहना उस करके रहित कार्यकी सिद्धि और असिद्धिमें समबुद्धि सो कर्म करके भी नहीं बंधनपावै ॥ २२ ॥

जो रब दवे सबर नाल खावे
सुख दुःख विच न चित्त भरमावे
द्वेश रहित सब कर्म पछाणे
हार जेत जो इक सम जाणे
कर्मां थों सो नसदा नांहीं
बंधन विच पर फसदा नांहीं । २२ ।

۲۲- جو ملجائے اسی پر صابر جو رہے
ہو بے حسد اضداد کو چھوڑے جو رہے
ناکامی و کامیابی جس کو ہو ایک
کرتے ہوئے کام بھی نہ بندھن میں بندھے

(۲۲)
جو موحد بے غرض و مست ہی ہر حال میں
فعل کے ہوتے وہ آلودہ نہیں افعال میں

Content with whatsoever he obtaineth without effort, free from the pairs of opposites, without envy, balanced in success and failure, though acting he is not bound. (22)

22. Content with what he gets unsought,
Above the "pairs," from malice free,

The same in failure and success,
Though acting he is never bound.

Content with what befalls unsought, 22
all contrast bridging, envy-free,
In triumph as in failure, poised,—
the deed, though *done*, cannot bind Him.

۲۲- جو پاتا ہے بن چاہے اسی پر خوش ہے
دکھ سکھ سے الگ حسد سے خالی ہے
کامیابی و ناکامی میں یکساں ہے
وہ کام کرتے ہوئے بھی بندھن میں نہیں آتا

दोहा—द्वंद्व सहै मत्सर तजै दैवमिलेसो पुष्ट ।
करहु कर्म भवपार हो सिद्धि असिद्धी तुष्ट ॥ २२ ॥

(२२)

स्वतः प्राप्ति से तुष्ट, विमत्सर, सुख दुःखों से हैं जो हीन;
तुल्य असिद्धि, सिद्धि में हैं वे, कर्म-बन्ध से रहें अलीन।

۲۲

آسودہ بحقِّ کارِ بے لوث — جو ہے محنت گذارِ بے لوث
بالائے حدودِ تنگِ اضداد — قیدِ رشک و حسد سے آزاد
ہوتا نہیں فتح سے جو شاداں — یا رنج شکست سے پریشاں
عامل بن کر بھی وہ خردمند — ہوتا نہیں خود عمل سے پابند

स्वतः ही मिल जाय उसे जो, उसीसे हो सन्तुष्ट।
निन्दा किसी की न करे, सबसे सदा सन्तुष्ट ॥३८॥
जोड़ों से रहे पृथक ही, हानिलाभ इकसार।
हर्षशोक से रहित जो, कर्म उसके निस्सार ॥३९॥ (22)

२२

मिले आपसे तुष्ट उसीमें द्वन्द्वरहित है निर्मत्सर।
सिद्धि असिद्धि समान माननेवाला बद्ध न होता नर॥

४/२३

गतसंगस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः ॥ यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥ २३ ॥

दोहा—तजैसबैजोकामना, ज्ञानलगावैचित्त।
यज्ञकाजकर्मनिकरै, सोनबाँधियेमित्त ॥ २३ ॥

निवृत्तभयाहै आत्मानंदविनासंगी जिसका और संसारवासनासे मुक्त है और आत्मज्ञानमें अवस्थित है चित्त जिसका सो जो यज्ञकेअर्थ कर्म करे तो उसके बंधनकारक सर्व प्राचीनकर्म नाशहोते हैं ॥ २३ ॥

कर्म फलां दा संग छुड जावे
सो नर जीवन मुक्त कहावे
ज्ञान ध्यान विच जो चित लांदे
यज्ञ निमित जो कर्म कमांदे
सो नर ब्रह्म ज्ञान नूं पावण
कर्म तिन्हां दे छेड हो जावण। २३

۲۳۔ آزاد ہے جو جسے تعلق نہ رہا — اور گیان میں جس کا دل ہے جا کر ٹھیرا
جو یگیہ کے واسطے ہی کرتا ہے کام — ہو جاتا فنا ہے ایک اک کام اُس کا

(२३)

राग-द्वेष रहित निष्कामी, जिन का चित्त ज्ञान में युक्त;
यज्ञ-आचरण करने वाले, नर होते कर्मों से मुक्त।

(۲۳)

علمِ حق سے پاک باطن ہو گیا ہے جو بشر
اُس پہ ہو سکتا نہیں افعالِ قدرت کا اثر

Of one with attachment dead, harmonious, with his thoughts established in wisdom, his works, sacrifices, all action melts away. (23)

23. The man in whom attachment's dead,
Who's freed,[16] with mind in wisdom wrapt,
Whose acts are done for sacrifice,[17]
From him all actions melt away.[18]

Adhesion-free, emancipate, 23
His consciousness in Wisdom fixed,
His every deed a Sacrifice,—
His record melts, and leaves no trace.

[illegible]

दोहा—काम विषय दउ छांडिके आतममें मन लाय।
कर्मयोग करतो तिस कर्मबंध जर जाय ॥ २३ ॥

२३

संग-रहित है मुक्त, ज्ञानमें स्थिर है जिसका चित्त यथार्थ ।
यज्ञ-अर्थ करनेवालेके कर्म विलीन सभी हैं पार्थ ! ॥

۲۳

ہے ترک طریق کار جس کا — ہے صبر و سکوں شعار جس کا
رہتا ہے جو محو ذات دایم — دل جس کا ہے علم حق میں قایم
گو بہر حصول رستگاری — رکھتا ہے مشاغل اپنے جاری
اس کے افعال ہو کے معدوم — ہو جاتے ہیں اثر سے محروم

बांध उसे कभु न सकें, नष्ट सभी हो जांय ।
जो यज्ञ के ही लिये, करे सो मुक्ति पाय ॥३०॥
जिसने ज्ञान सम्भाल कर, टिका लिया निज चित्त ।
आसक्ति दी दूर कर, मुक्त हुआ वही नित्य ॥२३॥

५६२

४/२५

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ॥ ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ २४ ॥

दोहा—होमअग्निहविब्रह्महै, अर्पब्रह्मनिजानि ।
जायब्रह्ममेंसारहै, कर्मसमाधिहिठानि ॥ २४ ॥

निष्काम कर्मसे ज्ञान होताहै इस भेदसे कर्मकी ज्ञानाकारता कही अब परमात्माके अनुसंधानसे उसी निष्कामकर्मकी ज्ञानाकारता कहतेहैं सो ऐसे कि, जिसकरके हव्य अर्पणकरते हैं वह स्रुवादिकवस्तुब्रह्महै याने ब्रह्महीका कार्य है घृतादिक हव्यभीब्रह्महीहै ब्रह्मरूपअग्निमें वह ब्रह्मरूप हव्य ब्रह्मरूप होता करके होमाजाताहै ऐसे यह सर्व ब्रह्मरूपहै तिसे ब्रह्मकर्मनिर्धमकरके ब्रह्मही प्राप्त होनेयोग्यहै ॥ २४ ॥ 1

Besant का अनुवाद (२४) अगले पृष्ठ पर लग गया है

ब्रह्म अर्पण सारे यज्ञ ब्रह्म
हवी-सामिग्री ते अग्ग ब्रह्म
ब्रह्म यज्ञ दा कर्त्ता ब्रह्म
कर्मां विखे विचरता ब्रह्म 6
ब्रह्म नाल जो ध्यान लगावे
पारब्रह्म विच्च लीन हो जावे । २४ ।

۲۴- ارپن ہے برہم اور ہے برہم ہوی
برہم اگنی میں برہم ہی نے ہے آہتی دی
یجمان یہ برہم ہی کو پہونچے گا بھی 3
ہے کرم میں برہم کی سمادھی جو لگی

۲۴- [illegible] 5
[illegible]
[illegible]

5 (२४)
अर्पण-हवि-पावक-आहुति, इन, सबको जाने ब्रह्म-स्वरूप;
ब्रह्म-कर्म में रत हो कर के, उसे प्राप्य है ब्रह्म सु-भूप ! !

24
When BRAHMA-*priest* to BRAHMA-*fire*
throws BRAHMA-*offering*, BRAHMA-*ghee*,— 13
To none but BRAHMA *shall* HE *go*,
who merges every deed in BRAHM.

दोहा--कर्ता हवि स्रुक् अग्नि जो सभ ही ब्रह्म मनाय ।
8 ब्रह्मभावना यह करै ब्रह्मनिकट सो जाय ॥ २४ ॥

अर्पण ब्रह्म, ब्रह्म ही हवि है, ब्रह्म अग्निमें होता ब्रह्म ।
जिसकी मतिमें कर्म ब्रह्ममय, मिल जाता है उसको ब्रह्म ॥

24. To him the sacrifice,[19] the *ghi*,
The priest, the fire are only Brahm,
He verily to Brahm shall go,
Who in his acts sees Brahm [20] alone.

(۲۴)

فعل و فاعل ظرف و ثمر آں کہ کُل جمالِ ذات ہے
ذات کی تسلیم کا ثمرہ وصالِ ذات ہے

(१०)

ऐसे सज्जन के लिये, जगत ब्रह्ममय हो ।
चमचे, आहुति, अग्नि अरु. होता भी ब्रह्म हो ॥४२॥
यज्ञ भी उस का ब्रह्ममय, यज्ञप्राप्य वही ब्रह्म ।
ब्रह्म में आत्मिक विस्मृतिः कर्म यह उस का ब्रह्म ॥४३॥
ऐसे योगी यज्ञ से, करें यज्ञ का हवन ।
यज्ञाग्नि उसी ब्रह्म में, करें निजात्मिक हवन ॥४४॥

۲۴

کرتا ہے جو شغل اس کا درباز — جس سے ہوتا ہے یگیہ آغاز
اس کی تکمیل کے سب اسباب — صدقہ ہو کہ آتش جہاں تاب
سب میں پیدا ہے جلوۂ حق — ہیں یہ دراصل ذاتِ مطلق
اس یگیہ میں ہو کے محوِ شاغل — ہوتا اسی ذات میں ہے واصل

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते ॥
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति २५

दोहा--देवनिकोइकयजतहैं, करतयज्ञबहुभाय।
एकब्रह्ममेंयजतहैं, ज्ञानयज्ञकेदाय ॥ २५ ॥

ऐसे कर्मयोगकी ज्ञानाकारता कहके अब कर्मयोगके भेद कहतेहैं अपरे 'अकारो वै विष्णुः' इस श्रुतिप्रमाणसे जो विष्णुपरायणहैं वे योगी दैवयज्ञ याने प्रतिमापूजनरूपयज्ञ करतेहैं इनसे औरभी ऐसेहीयोगी ब्रह्मात्मकअग्निमें यज्ञसाधन सामग्रीकरके हवनात्मक यज्ञहीमें हवन करते हैं ॥ २५ ॥

देव यज्ञ ने कई करंदे
देवतयां नूं बलीयां देंदे
कई इक योगी ब्रह्म सिमरदे
ब्रह्म अर्पण सब यज्ञ ने करदे । २५ ।

۲۵- دنیا میں بہت ملیں گے یوگی ایسے — کرتے ہیں جو یگیہ دیوتاؤں کے لئے
برہم اگنی میں اور لوگ خود یگیہ ہی کو — کر دیتے ہون ہیں یہی یگیہ اُن کے

(२५)
कोई योगी मुख्य मान कर, विधि वत् पूजें देवस्तोम;
कोई ब्रह्म रूप पावक में, यज्ञ-ब्रह्म का करते होम।

۲۵- کریں یگ روپ میں پربھو کے پیارے
کہ یوگی بنے آپ اس کے پجاری
وہ برہم کو کوئی لیتے اگنی بناء
کریں یگ جائیں آپ اس پر ہی وارے

"Some Yógīs offer sacrifice
in worship to [HIS] Powers Bright;
While some, their mere lives Sacrifice,
rain offerings into BRAHMA-Fire. 25

The ETERNAL the oblation, the ETERNAL the clarified butter, are offered in the ETERNAL by the ETERNAL; unto the ETERNAL verily he go who in his action meditateth wholly the ETERNAL.* (24)

दोहा--देवअर्चना योगको करते योगी कोइ।
ब्रह्मस्वरूप अग्निमहँ हविको छोडत कोइ ॥ २५ ॥

करते हैं कोई योगी जन यज्ञ देवहीके उद्देश।
कोई ब्रह्म-अग्निमें करते यज्ञ, यज्ञसे यजन-विशेष ॥

Some Yogis offer up sacrifice to the Shining Ones†; others sacrifice only by pouring sacrifice into the fire of the ETERNAL; (25)

25. Some *Yogins* offer sacrifice
(In worship) to the Shining Ones,
Whilst others in the fire of Brahm,
Make sacrifice through sacrifice.[21]

(۲۵)

مانتا ہے کوئی تو قادر سے فعلوں کا وجود
کوئی فعلونکو سمجھتا ہے ملائک کا شہود

इन से निचले उपासक, देव यज्ञ विस्तार।
कुण्ड के बैठे ओर चहुं, देवस्तुतिः उच्चार ॥ ४५ ॥
रहे वेद के मन्त्रके, रूप में देव आराध।
हुए देवसम्बध वे, करें न तद्-अपराध ॥ ४६ ॥

۲۵

اکثر جوگی عمل کے شایق — بہر بہودیٔ خلایق
کرتے ہیں یہ خواہش ثمر یگیہ — ہوتا ہے یہ ان کے نام پر یگیہ (ق)
ارکانِ جہاں جو ہیں ازل سے — ہوتے ہیں جو شاداں عمل سے
لیکن شاغل جو بے رجا ہیں — عرفان کی آگ میں فنا ہیں

कई इन्द्रियां नूं जित्त जांदे
संयम रूपी अग्ग विच्च पांदे
शब्द स्पर्श रूप रस गंध
विशे इन्द्रियां दे संबंध
कई इक शब्द आदिक नूं अर्जुन
इन्द्रियां दी अग्ग विच्च साड़न । २६ ।

श्रोत्रादीनींद्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति ॥ शब्दादीन्विषयानन्य इंद्रियाग्निषु जुह्वति ॥ २६ ॥

दोहा-एकजेहोमतइंद्रियनि, संयमअग्निस्वरूप ।
विषयनिहोमतएकहैं, इंद्रियअग्निअनूप ॥ २६ ॥

और कितने योगी श्रोत्रादिकेंइंद्रियोंको संयमरूप अग्निमें होमतेहैं अर्थात् श्रोतादिकोंको हरिकीर्त्ति श्रवणादिकहीमें युक्त करतेहैं और कितनेक शब्दादिकें विषयोंको इंद्रियरूप अग्निमें होमतेहैं याने हरिकीर्त्तनविना और श्रवणादिक नहीं करतेहैं ॥ २६ ॥

۲۶- دیتے ہیں حواسوں کو یہاں بعض ہی اس آگ میں کہتے ہیں جسے نفس کشی
اور بعض صدا وغیرہ کے محسوسات ہیں نار حواس میں جلا دیتے سبھی

(२६)
कोई ज्ञानेन्द्रिय-वृन्दों को, संयमाग्नि में करते लीन;
कोई विषयों का लय करते, इन्द्रिय पावक में मति-पीन।

26. The senses, such as hearing, some
Pour in the fires of sense-restraint,[22]
Whilst others yet, sense-objects pour
Like sound, into the fires of sense.[23]

Some pour sense-powers—hearing first—
into the Fires of sense-restraint ;
Some pour sense-things—sound and the rest—
into bright sense-perception Fires. 26

दोहा—इंद्रिय हविको होम कउ करते संयम वह्नि ।
कोउ विषयहविहोमको करते इंद्रियवह्नि ॥ २६ ॥

Some pour as sacrifice hearing and the other sense into the fires of restraint ; some pour sound and the other objects of sense into the fires of the sense as sacrifice ; (26)

२६

कोई कर्णादिक इन्द्रियका संयमाग्निमें करते याग।
कोई शब्दादिक विषयोंका इन्द्रियाग्निमें करते त्याग॥

(٢٦)

ضبط کی آتش میں کوئی سوخت کرتا ہے حواس
شوقِ محسوسات سے بچتا ہے کوئی خود شناس

इन्द्रियसंयम तीसरे, कर्णादि का धार।
राजयोग मय यज्ञ शुभ, जग में रहें विस्तार॥४७॥
चौथे योगी निरिच्छ हो, विषयसेव रहे सर्व।
शब्दादि निज इन्द्रियों, से, पर करें न गर्व॥४८॥ (26)

٢٦

نطق و سمع و بصر وغیرہ ‏— ہیں ظاہری جو حواس خمسہ
ان کو کچھ اہل شغل ہشیار ‏— کر دیتے ہیں ضبط کر کے فی النار
محسوسات بشر ہیں جتنے ‏— شاغل بے لوث اکثر ان سے
دیتے رہتے ہیں یگیہ انجام ‏— پہونچاتے حواس کو ہیں آرام

सर्वाणींद्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे ॥ आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वंति ज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥

दोहा–जेसबइंद्रिनकेकरम, औरकर्मसबप्रान ।
होमतसंयमअग्निमें, प्रकटकरौचितज्ञान ॥ २७ ॥

और कितने योगी सर्व इंद्रियनके कर्मोंको और प्राणोंके कर्मोंको ज्ञान करकेप्रदीप्त ऐसे मनके संयमरूप अग्निमें होमतेहैं। अर्थात् मन करके इंद्रिय प्राण कर्मवृत्तिनको संसार विषयसे निवारण करके आत्मज्ञानमें लगानेका यत्न करतेहैं ॥ २७ ॥

ज्ञान रूप कई जोत जगांदे
संयम योग दी अग्ग जलांदे
इन्द्र कर्म आहुती पावण
प्राण कर्म दा यज्ञ रचावण । २७ ।

۲۷- بعضے دیتے ہیں سب حواسوں کے کام
یوگ اگنی میں ضبط نفس کی اُن کو وہ
اور وہ کہ پرانوں سے جو پائیں انجام
بہ عِلم و عرفان پھونک دیتے ہیں تمام

(२७)

आत्म-दमन रूपी पावक को, दीप्त ज्ञान से करके आर्य्य;
इन्द्रिय प्राणों के कर्मों का, कोई करते आहुति-कार्य ।

[illegible]

27. Some others pour as sacrifice
The vital functions and of sense,
Into the wisdom-kindled fire
Of *Yog* that's wrought by self-restraint.

27

Yet others offer sacrifice
of every Act of sense and life
Into the Wisdom-kindled Fire
of Yóga wrought by Self-control.

Others again into the wisdom-kindled fire of union attained by self-control, pour as sacrifice all the functions of the senses and the functions of life. (27)

दोहा–प्राणकर्म अरु इंद्रियें कर्म जु तिस हवि कोइ ।
मनसंयमविधवह्निमें होम करैं जग खोइ ॥ २७ ॥

२७

कुछ जन सब इन्द्रिय-कर्मोंको और प्राण-कर्मोंको खींच ।
करते हवन ज्ञानसे दीपित आत्म-नियम योगानल-बीच ॥

(۲۸)

بعض شاغل جُملہ فعلونکو حواس اور سانس کے
خاک کر دیتے ہیں اپنی آتش تجرید سے

जिनका ज्ञान प्रचण्ड है, आत्मा को वह संभाल ।
प्राण अरु इन्द्रिय क्रिया सब, ध्यानसे रहे संभाल ॥४९॥
आत्मिक संयम योग की, प्रज्ज्वालित कर आग ।
सर्व कर्म का हवन यूं, करते वे महाभाग ॥ ५० ॥

۲۸

محو تادیبِ نفس ہوکر
عرفاں سے مٹا کے صورتِ فصل
کرتے ہیں کچھ اہل شغل ہشیار
کرتے ہیں وہ باشعور انسان

صرفِ تہذیبِ نفس ہوکر
روشن فرماکے آتشِ وصل
افعال حواس اس میں فی النّار
انفاس بھی اپنے اس میں قربان

४
२८

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे । स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः शंसितव्रताः ॥ २८ ॥

दोहा–एकयजतहैंद्रव्यसो, एकतपस्यायोग ।
एकजुपढिवेदहियजै, एकज्ञानखोंलोग ॥ २८ ॥

और कितने योगी द्रव्यसे यज्ञ करतेहैं. याने दानादिक करतेहैं. कितनेक उपवासादिकरूपयज्ञ करतेहैं. तैसेही और कितनेक पुण्य क्षेत्रादि वासरूपयोग करतेहैं और कितने दृढव्रती यती याने यत्नशील वे वेदाध्ययन वेदार्थविचाररूप यज्ञ करतेहैं ॥ २८ ॥

कई इक यज्ञ करेंदे धनदा
कई इक तप कई योग करनदा
वेद पढ़न दा कई यज्ञ करदे
ज्ञान यज्ञ विच कई चित्त धरदे
सब नूं जाण महा व्रत धारी
सभ्भे यज्ञ रचावण भारी । २८ ।

Yet others the sacrifice of wealth, the sacrifice of austerity, the sacrifice of yoga, the sacrifice of silent reading and wisdom, men concentrated and of effectual vows; (28)

۲۸- دنیا میں یگیہ ہیں بہت قسموں کے
دولت کے تپ کے یوگ کے بہتیرے
پڑھنے کے بھی ہیں اور ہیں گیان کے بھی
جن کو جتی ہیں برت دھاری کرتے

कोइ द्रव्य से कोई तप से, कोई योग से कोई यज्ञ;
वेद-पाठ-ज्ञानों से कोई, यती साधते दृढ़-व्रत विज्ञ । (२८)

Yet others pour in their offerings 28
of wealth, asceticism, training,
Of sacred study and knowledge,—
Self-mastered men of steadfast vows.

दोहा--द्रव्ययज्ञ तपयज्ञ अरु योगयज्ञको कोइ ।
ज्ञानयज्ञ स्वाध्यायको करते दृढव्रत होइ ॥ २८ ॥

द्रव्य-यज्ञ, तप-यज्ञ योगमय यज्ञ करैं कुछ लोग तथैव ।
ज्ञान और स्वाध्याय-यज्ञको ब्रह्मव्रती यति करैं सदैव ॥

28. Yet others make a sacrifice
Of wealth, of penance, and of Yog,[24]
Of knowledge, and of Vedic lore;
Ascetics these, of rigid vows.

(۲۸)

کوئی عابد ہے کوئی زاہد کوئی فیّاض ہے
طالبِ علم کوتب کوئی ذکی مرتاض ہے

यूं यतिजन कर महाव्रत यज्ञ पञ्च विस्तार ।
ज्ञान, योग, स्वध्याय अरु, तप, पदार्थ, रहे वार ॥५१॥
उसी महाप्रभु ब्रह्म पर, स्वयं ही जो यज्ञरूप ।
पूजार्ह जो सर्वथा, जग समग्र का भूप ॥ ५२ ॥

۲۸

یکسو، بے لوث، چست، بامرد — استقلال ارادہ میں فرد
کچھ لوگ امیر و فارغ البال — قرباں کرتے ہیں دولت و مال
کچھ رکھتے ہیں مسلک ساوات — کچھ کرتے ہیں گر ریاض دن رات
کچھ پڑھتے ہیں گر صحیفۂ پاک — کچھ ہوتے ہیں وقفِ علم ادراک

५६८

४
२५—३०—३१

प्राण वायू कई कुंड बणांदे
विच्च अपान आहुती पांदे
कई इक प्राण आहुती पावण
प्राण अपान नूं रोक वखावण
प्राण अपान स्वास वस्स करदे
प्राणायाम तांईं चित्त धरदे । २६ ।

6

नियम नाल आहार जो खांदे
स्वासां दा सो यज्ञ रचांदे
एह सब यज्ञ तत्त नूं पावण
यज्ञों पाप नष्ट हो जावण । ३० ।

6

यज्ञों बधया अमृत खांदे
सो नर पारब्रह्म नूं पांदे
जो नहीं यज्ञ करेंदा कोई
एथे ओथे मिले न ढोई । ३१ ।

6

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथा
परे ॥ प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणाया-
मपरायणाः ॥ २९ ॥ अपरे नियता-
हाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति ॥ सर्वेऽ-
प्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्म-
षाः ॥ ३० ॥ यज्ञशिष्टामृतभुजो
यांति ब्रह्म सनातनम् ॥ नायं
लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरु-
सत्तम ॥ ३१ ॥

दोहा—होमअपानहिप्राणमें, प्राणअपानहिमाह ।
प्राणअपानहिरोकिकै, रहतजुहैनरनाँह ॥ २९ ॥
प्राणनहीमेंप्राणको, होमततजिआहार ।
एसबजानतयज्ञको, मेटतपापविकार ॥ ३० ॥
यज्ञशेषअमृतहिभखत, होतजुब्रह्ममेंलीन ।
यहौलोकविनयज्ञनहिं, परलोकोहैछीन ॥ ३१ ॥

और कितनेक कर्मयोगी प्रमाणसे आहार करनेवाले जैसे कि, आधापेट अन्नसे भरै चौथाई जलसे और चौथाई वायुसंचार निमित्त खालीराखै ऐसे और प्राणायामपरायणहैं ऐसे योगी अपानमें प्राणको होमते हैं याने पूरक करतेहैं; ऐसेही कितनेक प्राणवायुमें अपानको होमतेहैं याने रेचक करतेहैं. ऐसेही और प्राण अपान दोनोंकी गति को रोकके प्राणोंको प्राणनहीमें होमतेहैं याने कुंभक करतेहैं; इतने ये सर्वभी यज्ञके जाननेवाले यज्ञकरके पापरहित यज्ञहीका शेष अमृतरूप अन्नके खानेवाले सनातन ब्रह्मको प्राप्त होतेहैं. हे कुरुवंशिनमें श्रेष्ठ अर्जुन ! जो यज्ञ नहीं करताहै उसको यह लोकभी नहीं है और परलोकतो कैसे होयगा ॥२९॥३०॥३१.

दोहा—अपान अग्निमें प्राणको फूंकत पूरक होय ।
प्राणानलमें अपानकू रेचक विधि इह सोय ॥ २९ ॥

प्राण अग्निमें प्राणको प्राण अपान हिं रोक ।
होम करै कुंभक बनै, प्राणायामरत लोक ॥ ३० ॥

दोहा—यज्ञशेषभोजन करैं परमधामको जायँ ।
यज्ञहीन परलोक कहँ ?, एहो लोकउ नायँ ॥ ३१ ॥

۲۹- کچھ لوگ اپان میں جلاتے ہیں پران — کچھ لوگ پران میں جلاتے ہیں اپان
یہ روکتے ہیں نفس کی آمد شد کو — ہے بس کہ پرانایام میں ان کا دھیان

۳۰- بعضوں کا نپا تُلا یہاں ہے کھانا — کرتے ہیں ہَوَن پران میں پرانوں کا
یہ یگیہ کے ہیں جاننے والے سب لوگ — اور یگیہ سے ان کا پاپ ہے دور ہُوا

۳۱- جو شخص ہے یگیہ کا بقیہ کھاتا — وہ ذات قدیم برہم کو ہے پاتا
جو یگ نہ کرے نہیں ہے دنیا اُس کی — عقبے اسکے واسطے کہا کیا جاتا

Others merge 'on-breath' in 'off-breath',* 29
and 'off-breath' in 'on-breath' as well,
Checking the dual vital tide,
on M a s t e r y of Life§ intent.

Others, eating with self-control, 30
offer up, to [their] Life-breaths, L i v e s ;—
All these have mastered Sacrifice* :
in them Its Power starves out sin.

Their food Sacrifice-Leavings, They, 31
ambrosia-fed, reach deathless BRAHM.
The Sacrifice-less holds no claim
on *this* World—whence then on the *next* ?

४
२९-३०-३१

२९

होमें प्राण अपान-वायुमें और प्राणमें तजे अपान ।
रोकें प्राण अपान-वेगको प्राणायाम-निमग्न सुजान ॥

३०

कर नियमित आहार, हवन जो करते प्राणोंमें ही प्राण ।
यज्ञ-विज्ञ हैं वे ही मानव उनको तू निष्कल्मष जान ॥

३१

यज्ञ-शेषके खानेवाले पावें ब्रह्म सनातन तात ! ।
यज्ञ-रहितका नहीं लोक यह स्वर्गलोककी फिर क्या बात ॥

29. Some offer up the life-breaths twain,
The one into the other breath,
Controlling too their ebb and tide,
Upon their mastery are bent.[25]

30. And others, too, retrenching food,[26]
The life-breaths in the life-breaths pour,
These [27] know what sacrifice denotes,
By sacrifice their sin's destroyed.

31. O best of Kurus they who eat,
Ambrosial food[28] reach changeless Brahm,
This world is not for those who make
No sacrifice : much less the next.[29]

Yet others pour as sacrifice the outgoing breath in the incoming, and the incoming in the outgoing, restraining the flow of the outgoing and incoming breaths, soley absorbed in the control of breathings.* (29)

(۲۹)

حرکتِ انفاس کو بالا و پائیں رُوک کر
سُوخت کر دیتا ہے کوئی حبسِ دَم کی آگ پر

(۳۰)

کم خوری سے نفس کُش کرتے ہیں خواہش کو ہلاک
جُملہ شاغل شغل کی برکت سے ہو جاتے ہیں پاک

(۳۱)

شاغلوں کے قلب میں ہے وصل کا آبِ حیات
دین و دنیا میں نہیں اِنکے سوا راہِ نجات

Others regular in food, pour as sacrifice their life-breaths in life-breaths. All these are knowers of sacrifice, and by sacrifice have destroyed their sins. (30)

The eaters of the life-giving † remains of sacrifice go to the changeless ETERNAL. This world is not for the non-sacrificer, much less the other, O best of the Kurus. (31)

(२९)

प्राण होमते हैं अपान में, कोइ प्राण के मध्य अपान;
प्राण अपान रोक के कोई, करते प्राणायाम महान।

(३०)

कोई योगी थोड़ा खाकर, होमें प्राणों ही में प्राण;
यज्ञों के वेत्ता ये करते, पाप--नाश, पाते कल्याण।

(३१)

यज्ञ-शेष के खाने वाले, ब्रह्म-सनातन करते प्राप्त;
है परलोक कहाँ अयज्ञ को, यह भी लोक न होता आप्त।

५८४

४
२५.३०-३९

प्राणायामी भक्तजन, गतियां प्राण की रोक।
आना जाना सर्वथा, मनबुद्धि रहे टोक ॥ ५३ ॥
उन में से एक प्रश्वासको, फैंक अरु बाहर रोक।
अन्दर आना श्वास का, देते सर्वथा टोक ॥५४॥
दूजे उन में श्वास को, खींच अरु अन्दर पूर।
प्रश्वासबहिरागमन, करें सर्वथा दूर ॥५५॥
तीजे तुरत ही रोक दें, बाहर ही प्रश्वास।
अन्दर ही दें रोक वे, उसी समय निज श्वास ॥५६॥ (२९)

चौथे करें वह कठिनतम्, सर्वोत्तम ही योग।
अल्पमिताहारी सदा, प्राणायामी लोग ॥ ५७ ॥
प्रश्वास अरु श्वास दोऊ, सूर्यद्वार में रोक।
सभी पवन वहां हवनकर, बेरोक बेटोक ॥५८।
साधें आत्मा की गती, पायें सनातन ब्रह्म।
भोग यज्ञशेषाऽमृत, किसे मिले नहीं ब्रह्म ॥ ५९ ॥
सभी ये योगी जानते, तत्त्व यज्ञ का सार।
पाप उन सबके नष्ट हों, जो रहे हवन प्रचार ॥ ६० ॥

पाय न सुख इस लोक में, भी न करे जो यज्ञ।
परलोक में पाय कब, हे अर्जुन सुप्रज्ञ! ॥ ६१ ॥
उच्चगतिः नहीं पा सके, न पाये नरलोक।
यज्ञविमुख मतिहीन नर, सारे गंवावे लोक ॥६२॥

۲۹

انساں ایسے بھی کچھ ہیں پیدا — کرتے ہیں جو شغل حبس دم کا
اس دم کی مقرّرہ ہیں اقسام — آتی ہیں جو شغل حبس میں کام
اندر ہے ایک آنے والی — باہر ہے ایک جانے والی
شاغل دونوں کو وصل کر کے — ہیں ضبط کی راہ سے گزرتے

۳۰

شاغل ایسے بھی کچھ ہیں دانا — کھاتے ہیں جو قاعدے سے کھانا
لیتے ہیں وہ اعتدال سے کام — دیتے ہیں یونہیں وہ یگیّہ انجام
اِس یگیہ میں کرتے ہیں وہ انساں — انفاس انفاس ہی ہیں قرباں
رہتے نہیں اِس طرح گنہ گار — وہ یگیّہ کے جانتے ہیں اسرار

۳۱

ارجن! آبِ حیات عرفاں — ہر یگیّہ کا ہے ثمر نمایاں
کرتے ہیں جو اس کا شغل دن رات — آخر ہوتے ہیں واصل الذات
لیکن جو شغل سے ہیں محروم — انجام ان کا ہے خوب معلوم
دنیا ہی میں جب نہیں ہے آرام — عقبیٰ کیا ان کے آئیگی کام

4/32

भांत भांत दे यज्ञ कहावया
सारे ब्रह्म भेंट हो जावया
पर सब यज्ञ कर्म थों उपजया
जाणयां मुक्त हो जावें अर्जुन । ३२ ।

۳۲- اس طرح بہت سے یگیں ویدوں میں ہیں پیدا ہوا سب کو جان تو کرموں سے
سرمکتی ہو جب ، حاصل ہو گی نجات بے شک

एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे ॥ कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ॥ ३२ ॥

दोहा–बहुतभाँतिवेदनकही, यज्ञसर्वएमानि ।
तेसबजानहुकर्मते, लेहुमुक्तिसुखसानि ॥ ३२ ॥

ऐसे बहुत प्रकारके यज्ञ वेदमें विस्तारसे कहेहैं उन सबको कर्मजजानो याने वे कर्महीसे होतेहैं, ऐसे जाँनिके कर्मकरके मुक्तहोवोगे ॥ ३२ ॥

۳۲- جو ویدوں نے ایسے کہے یگ انیک
کہ دِل میں بٹھاؤ سبھی کا رانیک

یہ یگ پیارے مُکتی کے داتا سبھی ہیں
کرو حاصل ان کی سمجھ اور دویک

(३२)
इस प्रकार के यज्ञ बहुत हैं; नाना विधि वेदों में उक्त;
वे सब कर्मों से उत्पादित, उन्हें जान हो जाओ मुक्त ।

32. Thus sacrifices manifold,
Are laid out at the mouth of Brahm,[30]
Know thou, they all from action spring,
So knowing, thou shalt freedom gain.

Thus many kinds of sacrifice 32
for BRAHM'S consumption are laid out.
Know these all sprung of [HIS one] ACT,§—
thus knowing, *Thou* shall be set free.

Many and various sacrifices are thus spread out before the ETERNAL.* Know thou that all these are born of action, and thus knowing thou shalt be free. (32)

दोहा--कर्मयोग बहुविध कह्यो वेद अंतमें एह ।
वे सभ कर्मसूं होत है, कारि तिन छुटै देह ॥ ३२ ॥

३२

पार्थ ! ब्रह्मके मुखमें होते इस प्रकारसे यज्ञ अनेक ।
कर्मज हैं ये जान, इसीसे मोक्ष प्राप्त होगा सविवेक ॥

(۳۲)

وید نے ظاہر کیا جن مختلف اشغال کو
وہ عمل کی صورتیں ہیں اُنسے تو آزاد ہو

10

बहु प्रकार के यज्ञ यूं, विविध प्रकार प्रसार ।
रहे विष्णु मुख में सदा, विविध अहुतियां डार ॥६३॥
कर्म से ही उत्पन्न उन, सब को ही तू जान ।
पाप से ही तू सर्वथा छुटे यह तत्त्व पहिचान ॥(32)॥

۳۲

اس یگیہ کی بے شمار اقسام — تفصیل سے وید میں ہیں ارقام
مخرج ان سب کا ہے ہویدا — بے لوث عمل سے ہیں یہ پیدا
اب تم ہو جاؤ اس سے آگاہ — پیدا کرو نجات کی راہ
ہو جائے شکست قید ہستی — حاصل ہو وصل کی ہو مستی

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप ॥ सर्वं कर्माऽखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥ ३३ ॥

दोहा--द्रव्ययज्ञतेहोतहैं, ज्ञानयज्ञइहभाय ।
जितेकर्मवेदनिकहैं, ज्ञानहिराहितसमाय ॥३३॥

हे परंतप ! द्रव्यमययज्ञसे ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठहै, कारण कि, द्रव्ययज्ञकाभी फल ज्ञानहीहै हे पार्थ ! फलसहित सर्वकर्म ज्ञानमें समाप्त होताहै: याने इस ज्ञानहीकेवास्ते यज्ञ करतेहैं ॥ ३३ ॥

सब द्रव यज्ञां थों हे प्यारे
ज्ञान यज्ञ वडयावण सारे
सारे कर्म जो लोक कमावण
ज्ञान यज्ञ विच लोप हो जावण । ३३

۳۳۔ دولت کے یگیہ سے بہت بڑھ چڑھ کر — ہے گیان کا یگیہ سن رکھ اے دانشور
ہے گیان وہ شے اس میں سما جاتے ہیں — جتنے دنیا میں کام ہیں سب یکسر

۳۳۔ کرودان گرچہ بھلی کار ہے
مگر گیان یگ سب کا سردار ہے
مہا پھل گیان ہے کرم کانڈ کا
کرم گیان کے بیچ سرشار ہے

(३३)
द्रव्य-यज्ञ से ज्ञान-यज्ञ ही, अति उत्तम है पार्थ प्रवीन !
सर्व कर्म-फल-सहित ज्ञान में, अन्त समय होते हैं लीन ।

33. O Parantap, the sacrifice
Of wisdom's better than of things,

Without exception, Pṛithā's son,
In wisdom action culminates.

Better than object-sacrifice 33
the Sacrifice of *consciousness* :—
The wholesale cycle of Cosmic ACT
is rounded out when Self *knows* SELF.

दोहा--द्रव्यभागनों कर्मनें ज्ञानभाग बहु साधु ।
क्रियाभागका ज्ञान ही फल है जासुं अगाधु ॥ ३३ ॥

Better than the sacrifice of any objects is the sacrifice of wisdom, O Parantapa. All actions in their entirety, O Pârtha, culminate in wisdom. (33)

३३

द्रव्य-यज्ञसे यज्ञ श्रेष्ठ वह जिसको सब कहते हैं ज्ञान ।
क्योंकि, सभी कर्मोंका होता इसी ज्ञानमें पर्यवसान ॥

(۳۳)

کسب سرمایہ سے کسبِ علم افضل کام ہے
علم میں ارجن تمام اعمال کا انجام ہے

परम तपस्वी ! ज्ञानमय, यज्ञ ही होता श्रेष्ठ ।
पदार्थवाले यज्ञ से, भावही माना श्रेष्ठ ॥६५॥
हो समाप्त शुभ ज्ञान अरु, भव में ही सब कर्म ।
हे कुन्तिसुत ! ज्ञान अरु, भावसंशुद्धिः धर्म ॥ ६६ ॥

۳۳

ساز و سامان دنیوی سے
ہر چند ہیں وہ عمل کے لایق
ارجن افعال جس قدر ہیں
شغل عرفاں ہے ان کا سرتاج

پورے ہوتے ہیں یگیہ جتنے
شغل عرفاں ہے ان پہ فایق
ظاہر وہ سب اہل عقل پر ہیں
ہر فعل کی بس یہی ہے معراج

जो ने तत्त नूं जानण वाले
सत्त असत्त पछानण वाले
ज्ञान योग उपदेश करनगे
तेरे भय संताप हरनगे
ज्ञान योग नूं जाण तूं अर्जुन
कर कर खोज पछाण तूं अर्जुन
पुछदा रह जे समझ न आवे
सेवा नाल ज्ञान लभ जावे । ३४

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ॥ उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥

दोहा–कीजैबहुतेनरमता, प्रश्नरुसेवाभाँति ।
तौज्ञानीउपदेशिहैं, ज्ञानजिनैदैशांति ॥ ३४ ॥

सो ज्ञान तत्त्वदर्शी ज्ञानीजन तुमको उपदेशेंगे तुम उनकी सेवा करके और सत्कारपूर्वक नमस्कार करके उनसे प्रश्न करके जांनो ॥ इहां श्रीकृष्णभगवान्ने केवल ज्ञानी जनोंकी प्रशंसा निमित्त यह वाक्य कहाहै और "अविनाशि तु तद्विद्धि" इहांसे लेके "एषा तेभिहिता सांख्ये" इहां पर्यंत ज्ञान उपदेश तो करही चुकेहैं ॥ ३४ ॥

(۳۴)
خدمت و تعظیم سے جب تو کرے گا التجا
رہبر کامل تجھے دینگے سبق اس علم کا

34. This learn thou by discipleship,
By service and by questionings;
The wise who have perceived the truth
Will guide thee unto wisdom's ways.

This learn thou by Discipleship, 34
by Questioning, by Service [most]:
For thee the Wise Ones, Essence-Seers,
will point the Way to Wisdom's SELF.

(३४)
करके सेवन नमन नम्र हो, करौ प्रश्न गुरुओं से पार्थ;
तो व ज्ञानी तत्त्व विचारी, तुम्हें बतावेंगे तत्त्वार्थ ।

दोहा—सेवा करि जब पूछिहौ ज्ञानी कहिहैं तोहि ।
तबलौं आत्मस्वरूपकौ ज्ञान दियौ हौं तोहि । ३४ ॥

३४

ध्यान रहे प्रणिपात, प्रश्नसे और किये सेवासे पार्थ ! ।
तत्त्ववेत्ता ज्ञानी-जन वह देंगे तुझको ज्ञान यथार्थ ॥

Learn thou this by discipleship,† by investigation, and by service. The wise, the seers of the essence of things, will instruct thee in wisdom. (34)

सेवा कर गुरुजनों, की प्रश्नोत्तर सुखकार ।
कर दण्डवत् उन्हीं को पाओ ज्ञान सुखसार ॥६८॥
परमतत्त्व परमात्म भी, ज्ञानियोंने लिया देख ।
वही तुम्हें उपदेश उस ज्ञान का दें शिष्य देख ॥६९॥

۳۴

اہلِ عرفاں کو دے کے تعظیم — قدموں پہ جھکا کے فرقِ تسلیم
اس بارے میں قیل و قال کر کے — بے مکر و ریا سوال کر کے
ظاہر جو کرو ارادت ان سے — تو اجر میں داد خدمت ان سے
عرفاں کے رموز کر کے ظاہر — کر دیں گے وہ ان میں تم کو ماہر

४
३५

ज्ञान योग दा भेत जे पावें
कदी न मोह विच मन भरमावें
ज्ञान योग दा तत्त जे भेवें
आतमा विच सब सृष्टी वेखें । ३५ ।

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पांडव ॥ येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ॥ ३५ ॥

दोहा–अर्जुनतूयाकोलहै, रहिहैब्रह्मसमाहिं ।
सबजीवनिकोदेखिहैं, आपमाँझकैमाहिं ॥ ३५ ॥

हे पांडुपुत्र ! जिस ज्ञानको जानिके ऐसे मोहको फिर नहीं प्राप्तहोगे. जिसज्ञानकरके सर्व भूतप्राणिमात्रको आपसदृश देखोगे. जैसे कि, प्रकृतिसे भिन्न ये परज्ञानाकारतासे सर्व समान हैं आप सदृश देखे पीछे फिर मेरे समान देखोगे याने ज्ञान प्राप्त भये जीव मेरी समताको प्राप्त होतेहैं सो आगे कहेंगे भी. "इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः" ॥ इहां ब्रह्मसूत्र भी प्रमाणहै. "भोगमात्रसाम्यलिंगाच्च" ऐसेही श्रुति भी प्रमाण है "तथा विद्वान् पुण्यपापे विधूय निरंजनः परमां शांतिमुपैति" ॥ इत्यादि प्रमाणोंसे नाम रूप रहित याने सूक्ष्मावस्थामें आत्मा और परमात्माकी स्वरूप समता निश्चय होती है ॥ ३५ ॥

۳۵- ایسا جب گیان تجھ کو مل جائے گا — دھوکہ پھر تو کبھی نہیں کھائے گا
دیکھے گا میری ذات میں کل عالم — اور اپنے میں تجھے نظر آئے گا

35. Thou shalt, O Pāṇḍav, knowing this,
Again not into error fall,
By means of this thou shalt behold
All beings in thy Self and Me.[31]

Which reached, thou'lt nevermore be caught in glamour such as holds thee now, 35
For It will show thee all that lives in thy own SELF, and hence in ME.

(३५)
जिसे जानने से हे अर्जुन ! होता महामोह विच्छिन्न;
और नहीं देखोगे सब को, हममें और आप से भिन्न ।

दोहा--ज्ञानपाय उह पुनि सखे इह तोहि मोह न होइ ।
मोमें आपने तुल्य तब लखिहौ जीव हैं जोइ ॥ ३५ ॥

३५

मोह नहीं तुझको फिर होगा पा करके यह ऐसा ज्ञान ।
अपनेमें, मेरेमें भी तू देखैगा सब जीव समान ॥

(۳۵)

جسکے باعث پنجۂ غفلت سے تو چھُٹ جائیگا
اپنے اندر بعد ازاں مجھ میں یہ عالم پائیگا

And having known this, thou shalt not again fall into this confusion, O Pandava; for by this thou wilt see all beings without exception in the SELF, and thus in Me. (35)

जान उसे फिर मोहमें, यूं न पडे तू वीर !।
इक आत्मा में, मुझी में, उस से देखें धीर ॥६९॥
हुए पिरोए सर्वथा, प्राणि सभी निःशेष । (35)
प्राणि सभी ही आत्ममय, ज्ञानी देखे अशेष ॥७०॥

۳۵

ہو جاؤ گے ان سے جب خبردار — پھر ہو گے نہ وہم میں گرفتار
جب یوں عقدہ کشائی ہوگی — اس زنداں سے رہائی ہوگی
ہے یہ جو تمام آفرینش — جس پر ہے نگاہ اہلِ بینش
اس کو دیکھو گے ظاہر و گم — اپنی اور میری ذات میں تم

मावें केडा ई पापी होवें
जे पर ज्ञान योग नूं छोहवें
ज्ञान रूप बेड़ी चढ़ जांवें
सब पापां थीं तूं तर जांवें । ३६ ।

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पाप-
कृत्तमः ॥ सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं
संतरिष्यसि ॥ ३६ ॥

दोहा--सबपापिनमेंजोबडो, पापीतूहीहोय ।
ज्ञानवानकरिचढिउतरि, पापसिंधुसमजोय॥३६॥

जो कि; सर्व पापिनसे भी तुम बडे पापकारक होउगे तोभी इस ज्ञानरूपही नौकाकरके सर्व दुःखसमुद्रको तैरोगे ॥ ३६ ॥

۳۶۔ جو تو پاپی اور پاپ کرتا بھی ہوگا
کبھی پاپوں میں تو وچرتا بھی ہوگا
چڑھے گا جو تو گیان کی نوکے اوپر
تو تو پاپ سے پار اترتا بھی ہوگا

۳۶۔ جتنے ہیں گنہگار جہاں میں سے ملتے بڑھ چڑھ کر ہو بھی تو اگر اُن سب سے
اے ارجن گیان کا جہاز ایسا ہے کر دیگا پار بحر عصیاں سے تجھے

(۳۶)
خواہ تو ہو سب گنہگاروں سے بڑھ کر شرمسار
کشتیٔ عرفاں میں ہو گا قلزمِ عصیاں سے پار

(३६)
सर्व पापियों से यदि तुमने, अधिक किया हो पापाचार;
तौभी ज्ञान-नाव के द्वारा, पापसिन्धु कर लोगे पार ।

36. Yea, even though 'mongst sinful men,
The chief of sinners thou shouldst be,
Thou shalt indeed cross safely o'er,
The sea of sin in wisdom's bark.

Yea, wert thou 'mongst all sinners e'en 36
most deeply sunk in deadly sin,
On raft of ALL-SELF-KNOWLEDGE borne,
thou'lt steer to Port through trials all.

दोहा—सभ पापिनसों अधिक तुम यदि पापिनसरताज ।
[illegible] ॥ ३६ ॥

३६

सब पापी पुरुषोंसे भी यदि तू है अति ही पापाचार ।
तो भी ज्ञान-नावपर चढ़कर होगा सब पापोंसे पार ॥

Even if thou art the most sinful of all sinners, yet shalt thou cross over all sin by the raft of wisdom. (36)

सभी पापियोंसे अधिक, यदि महापापी हो ।
तो भी नौका ज्ञानकी, से तू जायगा हो ॥ ७१ ॥
भवसागरके पारही, पावे सकलके पार । (36)
निश्चय ज्ञानसहायता, से हो बेडा पार ॥ ७२ ॥

٣٦

داغ کونین ننگ آفاق — عصیاں پرور گناہ میں طاق
کتنے ہی گناہگار ہو تم — کیسے ہی زبوں شعار ہو تم
عرفاں کے سفینہ دار ہو کر — اس کشتی پر سوار ہو کر
کرلو گے یم گناہ کو پار — آساں ہو گی مہم یہ دشوار

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरु-
तेऽर्जुन ॥ ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भ-
स्मसात्कुरुते तथा ॥ ३७ ॥

दोहा—जैसेज्वालहुताशकी, डारतिसबहीजारि ।
ज्ञानअग्नित्योंप्रबलहै, एरितिकर्मतिवारि ॥ ३७ ॥

हे अर्जुन ! जैसे प्रज्वलित अग्नि ईंधनको समग्र भस्म करताहै तैसे विज्ञानरूपअग्नि सर्व कर्मबंधनकी समग्र भस्म करताहै ॥ ३७ ॥

हे अर्जुन जिवें अग्ग बलेंदी
बालण बाल भसम कर देंदी
ज्ञान अग्नी तिवें कर्म जलावे
कर्म ज्ञान विच्च भसम हो जावे । ३७ ।

۳۷ - جس طرح دہکتی آگ میں جل جل کر
ایندھن دیکھا ہے ہوتے خاکستر
سب کرم اسی طرح سے گیان اگنی میں
ہو جاتے ہیں بس راکھ کا تودہ یکسر

[illegible]

(۳۷)
خاک کر دیتی ہے آتش لکڑیوں کی ٹال کو
آتشِ عرفاں جلا دیتی ہے کل اعمال کو

(३७) ज्वलित अग्नि ईंधन समूह को, जैसे भस्म करे तत्काल;
दग्ध सर्व कर्मों को करती, तैसे ज्ञान-वह्नि की ज्वाल ।

37. As kindled fire on fuel feeds
And all to ashes doth reduce,
Likewise, O Arjun, wisdom's fire
Transformeth every act to ash.

As kindled flame to ashes bright 37
the darkest fuel soon transforms,
This WISDOM-FIRE, [in Heart's Cave lit,]
transmutes all deeds to 'ashes' pure.

दोहा—अग्निकरे जस काष्ठको तुरतहि भस्मसमान ।
ज्ञान अग्नि सम कर्म को भस्म करै तस जान ॥ ३७ ॥

३७

जैसे जलती अग्नि, समिधको कर देती है भस्म तुरन्त ।
वैसे ज्ञान-अनल भी अर्जुन ! जला डालती कर्म अनन्त ॥

As the burning fire reduces fuel to ashes, O Arjuna, so doth the fire of wisdom reduce all actions to ashes. (37)

अग्नि: हुई प्रचण्ड ज्यों, ईन्धन सभी जला ।
देती है कुछ ही काल में, त्यों ज्ञानाग्नि जला ॥

सभी कर्म कुछ काल ही, में कर देती राख । (37)
हे अर्जुन! अत: जगत में ज्ञान ही रखता साख ॥३७॥

۳۷

ارجن ایندھن کو جس طرح آگ
کرتی ہے جلا کے راکھ بے لاگ
عرفاں کی بھی آتش فروزاں
ہو کر تیزی سے شعلہ ساماں
کر دیتی ہے فنا سب افعال
ان کا پھر پھیلتا نہیں جال
افعال وہ بد ہوں خواہ ہوں نیک
عرفاں کی نگاہ میں ہیں سب ایک

ज्ञानों उत्तम होर न कोई
सब नूं करे पवित्तर सोई
कई इक योगी योग कमा के
कर्म योग विच सिद्धी पाके
समय नाल ज्ञानी बण जांदे
आत्मा दे विच ज्ञान नूं पांदे । ३८ ।

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह वि-
द्यते ॥ तत्स्वयं योगसंसिद्धः काले-
नात्मनि विंदति ॥ ३८ ॥

दोहा—ज्ञानसदृशतिहुँलोकमें, पावननाहींऔर ।
योगसाधनाजोकरै, लहैज्ञानकीठौर ॥ ३८ ॥

इस लोकमें निश्चयकरके ज्ञानसदृश पवित्र नहीं है
उसै ज्ञानको कुछ काल कर्म करते करते कर्मयोगसे
सिद्ध भया हुवा आपेहीमें आपही प्राप्तहोती है ॥ ३८ ॥

۳۸- ہے چیز نہایت ہی مقدس یہ گیان اس کا ثانی کہیں ملے کب امکاں

کچھ عرصے میں جب یوگ کی تکمیل ہوئی پاتا ہے اپنی ذات میں آپ انساں

Verily there is no purifier in this world like wisdom; he that is perfected in yoga finds it in the SELF in due season. (38)

(۳۸)

معرفت سے پاک تر دنیا میں کوئی شئے نہیں
خود بخود شاغل کو ہو جاتا ہے یہ عین الیقیں

(३८)
पार्थ ! पवित्र वस्तु है कोई, नहीं विश्व में ज्ञान समान;
योगी बहुत काल में पाता, स्वयम् आत्मा में वह ज्ञान ।

38. For verily no cleanser can
On earth with wisdom be compared,
He who perfected is in *Yog*,
In time finds wisdom in the Self.

Indeed, no cleanser in this world 38
with WISDOM can compare at all.
Man, Yóga-Perfect grown, in time,
finds This, unsought, within Himself.

[illegible]

दोहा—ज्ञानतुल्य शोधक नहीं कोउ इत परम पुनीत ।
आत्महि पावत योगतें बहु कर काल अतीत ॥ ३८ ॥

नहीं वस्तु कुछ और जगतमें है पवित्र इस ज्ञान-समान ।
योग-सिद्धिसे, समय हुए पर, अपनेमें नर पाता ज्ञान ॥

۳۸

کرتا ہوں بیاں میں حقیقت
مشکوک نہیں ہے اس کی صحت
پاکیزگی بخشِ روحِ انساں
شے کوئی نہیں مثالِ عرفاں
جو یوگ میں ہوگیا ہے کامل
اصلی معنوں میں ہے جو عامل
جب وقت موافقت کرے گا
یہ راز وہ خود ہی جان لے گا

इस सम और पवित्र न, विद्यमान् जग मांह ।
ज्ञान सदा ही मानिए, भक्तोंके लिए छांह ॥ ७९ ॥
पर सिद्ध हुआ योग में, जो हो सर्व प्रकार । (38)
उचित समय पर आत्म में, पाये स्वयं सुखसार ॥७८॥

श्रद्धावाँल्लभँते ज्ञाँनं तत्परः संयतेँ-
द्रियः ॥ ज्ञाँनं लब्ध्वाँ पराँ शाँमिँम-
चिरेणाँधिगच्छाँति ॥ ३९ ॥

दोहा—इंद्रिजीत श्रद्धासहित, पावैऐसोज्ञान ।
तापायेततकालही, पावेशांतिसुज्ञान ॥ ३९ ॥

ज्ञान प्राप्तिमें लगीभया इंद्रियोंको संयममें किये भैये श्रद्धावाँन् पुरुष ज्ञाँनको प्राप्त होताँहै उस ज्ञाँनको पाइँके थोडेही काँलमें परम शांतिको प्राप्तहोतोंहै ॥ ३९ ॥

श्रद्धा नाल जो खोज करेंदे
नित्त ढूंडन वल ध्यान धरेंदे
इन्द्रियां नूं जो जित्त जांदे
सो नर ब्रह्म ज्ञान नूं पांदे
जो नर इयों ज्ञानी हो जावण
सहज ही परम शान्ती पावण । ३६ ।

٣٩ پاتے ہیں گیان کو عقیدت والے — شاغل ہوں جو حواس جن ہوں کے وہ
اور گیان کو پاتے ہی نہایت جلدی — ملتی ہے وہ شانتی کہ ہے سب سے پرے

The man who is full of faith * obtaineth wisdom, and he also who hath mastery over his senses, and, having obtained wisdom, he goeth swiftly to the supreme Peace. (39)

39. The full of faith, the devotee,[32]
He, who his senses has controlled,
Finds wisdom and possessing it,
Erelong attains to Peace Supreme.

The faithful, heart-whole Devotee, 39
sense held by Will, finds WISDOM His.
Once WISDOM has been found [within,]
He swiftly wins to Final Peace.

ज्ञान प्राप्त करते हैं नैष्ठिक, इन्द्रियजित् नर श्रद्धावन्त;
ज्ञान-लाभ से ही पाते हैं, परम शान्ति को पार्थ ! तुरन्त । (३९)

दोहा—संयम श्रद्धा दोउसों ज्ञान पाय नर सोय ।
ज्ञान लह्यो जिन मुक्ति तिस अल्पकालमें होय ॥ ३९ ॥

३९

श्रद्धावान, जितेन्द्रिय, तत्पर नरको यह मिलता है ज्ञान ।
ज्ञान प्राप्तकर फिर तुरन्त वह हो जाता है शान्ति-निधान ॥

(۳۹)

طالب روشنضمیر و صادق و پرہیزگار
علم کی تکمیل سے فی الفور پاتا ہے قرار

वही ज्ञान, यति पांय जो, इन्द्रियगण को रोक ।
परमात्मा के परायण, श्रद्धालु सभी लोक ॥ ६७ ॥
योगी पा ब्रह्मज्ञान वह, शीघ्र हो जांय सुशान्त ।
ब्राह्मी परमा शान्तिः, करें वह प्राप्त नितान्त ॥ ६८ ॥

۳۹

اس راز کا جو کوئی ہے قائل
تسخیرِ حواس میں جو ہے فرد
ہوتا ہے رموزِ حق سے آگاہ
ہوکر اس طرح حق میں واصل

جو اس کی طرف ہے دل سے مائل
اِس میداں کا جسے کہیں مرد
کرتا ہے وہ طے یقین کی راہ
پا جاتا ہے سکون کامل

६००

४/४०

अज्ञश्चाऽश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ॥ नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥ ४० ॥

दोहा—जोमूरखश्रद्धाविना, ताकोहोइविनाश ।
जाकेहियसंदेहहै, सोदोउलोकनिराश ॥ ४० ॥

जो अज्ञानहै और ज्ञानप्राप्तिमें श्रद्धाको भी नहीं धारण किये है और मनमें संशयरखेताहै सो नष्ट भ्रष्ट संसारमें भ्रमताहै जिसके मनमें संशयहै उसको यह लोक सुखदायक नहीं है परलोक भी नहीं है उसको कहीं भी सुखें नहीं है ॥ ४० ॥

जो मुझ विच श्रद्धा नहीं रखदे
जो मूरख नहीं ज्ञान परखदे
संशय कर कर मन भरमांदे
भरमां विच्च ओह नष्ट हो जांदे
ऐसे भरमी ते अज्ञानी
एथे ओथे दोहीं जहांनी
लोक अते परलोक गवांदे
कदी वी सौ नर सुख नहीं पांदे । ४० ।

۴۰- جو شردھا سے خالی و نادان ہے
کیا شک نے جس من میں استھان ہے
نہیں لوک پرلوک ہیں اس کی جا
نہ سُکھ کا کبھی اُس کو امکان ہے

(४०)
श्रद्धा हीन संशयी मानव, होते हैं विनाश को प्राप्त;
सन्देही लोगों के अर्जुन, होते दोनों लोक समाप्त ।

۴۰ نادان ہیں یا دل میں نہیں جنکے یقیں
یا شک ہے جنہیں وہ ناش ہوتے ہیں یہیں
دنیا ملتی نہیں ہے اہل شک کو
عقبےٰ بھی نہیں ملتا ہے اور سکھ بھی نہیں

But the ignorant, faithless, doubting self goeth to destruction, nor this world, nor that beyond, nor happiness, is there for the doubting self. (40)

40
The wisdom-reft, untrusting soul,
e'er swayed by doubt, must come to grief:
Not this world does the doubter hold,
nor yet the next, nor aught of Joy.

दोहा—मतिश्रद्धा निश्चय नहीं जिस, हो नष्ट हु तैन ।
सिद्ध न हो इह लोकहु स्वर्ग मोक्षकी कौन ॥ ४० ॥

४०

हो विनष्ट वह संशययुत जो अज्ञानी है, श्रद्धा-हीन।
यह न, तथा परलोक मिले, उस संशयवालेको सुख भी न॥

40. But ruined is the self which doubts,
Which faithless and un-knowing is;
Nor joy, nor this, nor world to come
Can be the doubter's heritage.

(۴۰)

جہل اور بے اعتقادی کا نتیجہ ہے فنا
دائمی راحت گنوا دیتا ہے بندہ وہم کا

अज्ञानी श्रद्धारहित, संशयग्रस्त, हो नाश।
दुविधा में जो रहे पड़ा, पाय न सुख प्रकाश ॥ ७९॥

यही लोक नहीं सिद्ध उस, का हो, न हो परलोक।
मनुज की योनि पाय न, पाय न कोई उच्च लोक॥८०॥

۴۰

جو آگہ رازِ حق نہیں ہے — گم گشتۂ جادۂ یقیں ہے
پابند شکوک ضعف بُنیاد — ہو جاتا ہے تباہ و برباد
دُنیا اپنی بگاڑتا ہے — عقبےٰ اپنی بگاڑتا ہے
اُس کا اچھا نہیں ہے انجام — دیکھے گا کبھی نہ شکل آرام

योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम् ॥ आत्मवंतं न कर्माणि निबंध्नंति धनंजय ॥ ४१ ॥

दोहा–मोकोअरपैकर्मकरि, करिसंदेहीदूरि ।
ज्ञानीबँधैनकर्मसों, रहैंसदासुखपूरि ॥ ४१ ॥

हे अर्जुन ! परमेश्वराराधनरूप जो निष्काम कर्म योग उस योग करके परमात्माके अर्पण किये हैं कर्म जिसने और ज्ञानकरके संछिन्न भये हैं संशय जिसके ऐसे स्थिरचित्त ज्ञानीको कर्म नहीं बंधन करतेहैं ॥ ४१ ॥

पारथ ! जो नर योग ध्यावण
ईश्वर अर्पण कर्म कमावण
नाले ज्ञान दे तत्त नूं पांदे
मन दे संशय भरम मिटांदे
सो नर आतमा विच्च ने वसदे
कर्म बंधना विच्च नहीं फसदे । ४१ ।

۴۱- ہاں جس نے ہیں یوگ سے کرم چھوڑے
جسکے شک ہیں گیان سے دور ہوے
ایسا شخص ہو تو ارجن
اعمال نہیں باندھتے پاتے ہیں اسے

(۴۱)
محو کر کے جملہ فعلوں کو سکون قلب میں
رفع کر کے علم باطن سے شکوک اور جتن
(ق)
جو سراپا ذات کے دیدار میں مسرور ہے
یاد رکھ ارجن مکافات عمل سے دور ہے

(४१)
किए कर्म प्रभु अर्पण, जिसके, हुए ज्ञान से संशय नष्ट;
फंसते नहीं कर्म-बन्धन में, ऐसे योगी ज्ञान-प्रकृष्ट ।

41. O Dhananjay, who's self-controlled,
Who hath by *Yog* renounced all acts,
Whose doubts have been by wisdom cleft,
From action's thrall the same is freed.

His deeds in Poise laid down [while done,] 41
His doubt-knots all by WISDOM cleft,
The Man possessed of SELFHOOD true,—
Wealth-Winner, *Him* no acts can bind.

दोहा--कर्म योगसे ज्ञानहो तासों संशय नाहिं ।
जितचित तिस विद्वानको नाहि न कर्म बँधाहिं ॥ ४१ ॥

४१

जिसने कर्म, योगसे त्यागे, किये ज्ञानसे संशय दूर।
आत्मवान उस मानवको फिर कर्म नहीं बाँधे हे शूर ! ॥

He who hath renounced actions by yoga, who hath cloven asunder doubt by wisdom, who is ruled by the SELF,* actions do not bind him, O Dhananjaya. (41)

तत्त्वविवेक से हर लिये जिसने संशय सर्व।
निष्कामता योग से; नष्टकर्म किये सर्व ॥ ८१ ॥

आत्मा, अन्तःकरण मन, बुद्धि: इन्द्रिय सर्व।
जिसने युक्त किये सभी, आत्मयोग में सगर्व ॥८२॥
कर्म उसे सकें बान्ध न, कभी हे अर्जुन वीर !।
संग्रामजित् ! कुरुसुत !, कौरवश्रेष्ठ ! सुधीर ! ॥८३॥

۴۱

اے فتح نصیب اے دھننجے جو راستہ کرکے جوگ کا طے
افعال سے ہاتھ اٹھا چکا ہے خود کو تارک بنا چکا ہے
دانائی سے کرکے قطع اوہام لیتا ہے جو علم ذات سے کام
افعال اس کو نہیں ستاتے پابند اپنا نہیں بناتے

(४२)
उठो ! युद्ध हित, छेदन करके, ज्ञान खड्ग से संशय सर्व;
बड़े भाग्य से मिले धनंजय !, समर-खेत जैसा शुभ पर्व ।

तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासि-

नात्मनः ॥ छित्त्वैनं संशयं योगमा-
तिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥ ४२ ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म-
विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन-
संवादे कर्मसंन्यासयोगो नाम
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दोहा—संदेहजुअज्ञानतैं, उपज्योअर्जुनआहि ।
ज्ञानखड्गसोंकाटिकरि, दूरिकरोकिनताहि ॥४२॥
हरिवल्लभभाषाकह्यो, गीताभाषाभाय ।
तामेंपूरणभयोसुख, करिचौथोअध्याय ॥

हे भरतवंशोत्पन्न अर्जुन ! तिससे जो अज्ञानसे उत्पन्न तुम्हारे हृदयमें स्थित ऐसे इस आपके संशयको ज्ञानखड्गसे छेदनकरके उठो और कर्मयोगमें प्रवृत्तहोउ याने क्षत्रियका कर्म युद्धकरो ॥ ४२ ॥

हे भारत ! हे कुंती नंदन
संशय सब अज्ञान थों उपजन

योग करन विच थिरता पाके
ज्ञान रूप तलवार चलाके
सारे संशय भरम मिटा दे
युद्ध करन विच जोर वखा दे । ४२ ।

Therefore, with the sword of the wisdom of the SELF cleaving asunder this ignorance-born doubt dwelling in thy heart, be established in yoga. Stand up, O Bhārata. (42)

۴۲۔ اس واسطے شک کو جو ہے دل میں بیٹھا پیدا گیان نے سے جو کچھ تجھ کو ہوا

تو گیان کی تلوار سے ٹکڑے کر ڈال اور یوگ میں مصروف ہو اٹھ مرد خدا

४२
इससे इस अज्ञानज भ्रमको काट ज्ञानकी ले तलवार ।
कर्म-योगका आश्रय लेकर उठ लड़नेको हो तैयार ॥

दोहा—ज्ञानखंड्गसों काटिकै मनको संशय जात ।
कर्मजोग करिवे हित वांधो कटिपट तात ॥ ४२ ॥

Cleave, then, with Thy own Wisdom-Sword 42
this ignorance-born doubt whereby
Thy heart is held—come, take thy stand
On Yóga! . . . Up, O Bhārata!

42. O Bhārat, hence, with wisdom's sword
Cleave thou the doubt which fills thy breast,
And which is born of ignorance:
In *Yog* established be. Arise!

(۴۲)

تیغِ عرفاں سے انانیت کی گردن قطع کر
مستعد ہو جا ادائے فرض پر اے نامور

भरतवंशअवतंस हे !, काट अज्ञान-उत्पन्न ।
संशय मोह यह निजी अब, जिससे हृदयसम्पन्न ॥८४॥
आत्मज्ञान तलवारसे, काट इसे, कर योग ।
उठ हे वीर ! सब शुद्ध कर, निष्काम यही योग ॥८५॥

۴۲

دل میں جو شکوک جاگزیں ہیں
وہ ثمرۂ جہل بالیقیں ہیں
تیغِ بُرّانِ معرفت سے
کر دو ان سب کے ٹکڑے ٹکڑے
لو یوگ کا اس طرح سہارا
اس سے نہ ہٹے قدم تمہارا
بھارت اب شیر مرد ہو جاؤ
استادہ پئے نبرد ہو جاؤ

4/8-9

होती वृद्धि अधर्म की जब कहीं, अन्याय-अत्याचार से।
धर्माधार-धुरीणता धैर्य घटता, धर्म धरती भार से॥
मुक्तात्मा तब जन्म ले उतरते, सम्पूज्य संसार से।
हे आनन्द स्वरूपानुरूप बन के, आते निराकार से॥

— ० —

4/8-8

जब अर्जुन जग में घटत परम धर्म की माया,
बढ़त अधर्म जेहि तेहि तब मैं प्रकटत आया।
साधुन की रक्षा करौं पापिन डारत मारि
थापित रीति सुधर्म की युग युग मांझ विचारि।

भारत, जब जब धर्महिं माँहीं,
 भारत होइ ग्लानि जग माँहीं
अरु अधर्म को होइ उत्थान
 तब तब निज को मैं जन्माऊँ। (7)
रक्षा करने साधु जनों का
 करन नाश दुष्कर्म करों का
धर्म स्थापना करने ही को
 जन्म लेऊँ युग युग में देखा॥, (8)

— ० —

देखो पृष्ठ ५३४ , से ५३६ , ५३८

(१)

جب جہاں پہ آکے چھا جاتی ہے غفلت کی گھٹا — ڈھانپ لیتی ہے زمانے کو جہالت کی گھٹا

ماند پڑ جاتی ہے جب دم راستی کی روشنی — پھیلتی ہے ہر طرف ناراستی کی روشنی

جبکہ مٹ جاتا ہے دنیا سے محبت کا نشاں — کینہ و بغض و عداوت جگ میں ہوتی ہے عیاں

پاپ پاتا ہے ترقی دھرم کا ہوتا ہے ناش — زندگی سے نیک انساں جبکہ ہوتے ہیں نراش

تب ہوا کرتی ہے کوئی ذات اقدس آشکار
جسکی ہمت سے سفینہ دھرم کا ہوتا ہے پار

(لال چند فلک)

(२)

जब अर्जुन जग में घटत परम धर्म को भाय ।
बढ़त अधर्म जहां तहां तब मैं प्रकटत आय ॥७॥
साधुन की रक्षा करौं पापिन डारत मार ।
थापत रीति सुधर्म की युग युग मांझ विचार ॥८॥

(पं० हरिवल्लभ)

(३)

جب بے دھرمی کی بن آئے دھرم کی ہو کر ہان
روپ اوتار کا دھار کے آؤں دنیا میں اس آن
نیکوں کی امداد کروں اور قتل کروں بدکار
اس ہی سبب سے میں آتا ہوں بن بن کے اوتار

(غلام رسول)

जब जब होय धर्म की हानी ✿ बाढ़हिं असुर अभिमानी ।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी ✿ सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी ।
तब तब प्रभु धरि बिबिध शरीरा ✿ हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा ।

दोहा — असुर मारि थापहिं सुरन्ह, राखहिं निज श्रुति सेतु ।
जग बिस्तारहिं बिशद यश, राम जन्म कर हेतु ॥
(तुलसीदास)

تاہم قدرت میں ہوئے مشتاق — ہوتا ہوں عیاں میانِ آفاق
اخلاقِ حمیدہ دور ہوں جب — دنیا میں بپا فتور ہوں جب
بر اصلاح و فکر موزوں — جو شکل عیاں ہو لیتی ہیں وہ ہوں
بہر امداد نیک اشخاص — ظاہر ہوتا ہوں با صد اخلاص
بڑھتا ہے جو سرکشی کا اندھیر — ہوئی ہیں الحاد میں دیر
کرتا ہوں یہاں میں عدل کی حفاظت — غالب نہ ہوں جس میں اہل بدعت
مطلوب ہے نہ کاروبار بگڑے — دنیا کا نہ انتظار بگڑے

(رام سہائے تمنا لکھنوی)

چو بنیاد دین سست گردد لیے × نمائم خود را شکل کسے
کہ حفظ ریاضت گزینان کنم × مراعات وقت نشینان کنم
بریزم خون ستم پیشگان × جہاں را نمائم دار الامان

(فیضی)

آفت آتی ہے جس وقت دنیا پر
آتا قدرت کی طرف سے ہے کوئی پیغمبر
(نبی! نجی مل)

4,90

I come, and go, and come. When Righteousness
Declines, O Bharata ! when Wickedness
Is strong, I rise, from age to age, and take
Visible shape, and move a man with men,
Succouring the good, thrusting the evil back,
And setting Virtue on her seat again. Edwin Arnold

W. 4/7

کرشن کا جنم

قید خانہ کی سیاہی میں وہ تارا چمکا
جس سے انسان کی ہستی کا ستارہ چمکا

تھا جو دنیا کو رہِ راست پہ لانا منظور   جلوۂ حق نے کیا قلبِ خاکی میں ظہور
جوشِ رحمت سے تھی فیض و کرم سے معمور   ظلمتِ جہلِ مٹانے کو بڑھا چشمۂ نور

پردۂ غیب سے متھرا کے چمن تک پہونچا
بڑھ کے متھرا سے کروکشیتر کے رن تک پہونچا

"یک لست"

یاد ایام کہ پردے میں تھا حسنِ جاوید   یاد ایام کہ خلوت میں تھی بزمِ توحید
تھی لگی قفلِ حقیقت کو محبت کی کلید   کھینچ لائی تجھے عشاق کی یاں حسرتِ دید

جلوۂ حسنِ ازل یوں سرِ بازار نہ تھا
بے بہا جنس کو گاہک سے سروکار نہ تھا

(بنواری لال شعلہ)

हो गया निर्गुण सगुण साकार है, ले लिया अखिलेश ने अवतार है।

किस लिये यह खेल प्रभु ने है किया ? मनुज बनकर मानवी का पय पिया ?

भक्त-वत्सलता इसी का नाम है, और वह लोकेश लीला धाम है।

पथ दिखाने के लिये संसार को, दूर करने के लिये भू-भार को।

सफल करने के लिये जन-दृष्टियाँ, क्यों न करता वह स्वयं निज सृष्टियां।

(मैथिलीशरण गुप्त — साकेत)

आती है जब हो ग्लानी भारत ! निज धर्म में।

अधर्म बल पाता है, लेता हूं तब जन्म मैं॥

कल्याण साधु वृत्तिका, नाश करने असाधु का।

स्थाई धर्म बचाने को, लेता हूं जन्म मैं सदा॥

भगवान्‌की प्रतिज्ञा

हम भगतनके भगत हमारे ।
सुन अर्जुन परतिग्या मोरी यह व्रत टरत न टारे॥
भगतन काज लाज हिय धरिकैं पाँय पियादे धायौ ।
जहँ-जहँ भीर परे भगतनपै तहँ-तहँ होत सहायौ॥
जो भगतनसों बैर करत है सो निज बैरी मेरो ।
देख बिचार भगतहित कारन हाँकत हौं रथ तेरो॥
जीते जीत भगत अपनेकी हारे हार विचारौं ।
'सूरश्याम' जो भगत-विरोधी चक्र सुदर्शन मारौं॥

—सूरदासजी

چوتھا ادھیاے۔ کرم سنیاس

یعنی

اندریون کے قابو مین رکھنے کی ہدایت

بولے یہ کرشن جی بصد حلم — مقبول ہے کرم جوگ کا علم
یہ علم ہے معرفت کی بُنیاد — ہے خانۂ عقل اس سے آباد
سب سے پہلے بہ حکمت و علم — سورج کو سکھایا مین نے یہ علم
بیوس تت من نے پھر اسی سے — اس علم کے سارے طرز سیکھے
اچھواک نے پھر یہ علم اُن سے — سیکھا سچے ہی دل کی دُھن سے
بعد اس کے یہ علم پاک و مرغوب — مشہور زمانہ ہو گیا خوب
اس علم سے سب رشی تھے آگاہ — واقف بھی تھے راجگان ذیجاہ
دنیا مین ہے انقلاب کی دھوم — یہ علم بس اب ہوا ہے معدوم
یہ علم قدیم اور ہے پاک — خوبی سے ہین واقف اہل ادراک
تو ہے عزیز و لائق کار — اس علم سے جلد ہو خبردار

ارجن نے کہا کہ اے مہاراج / سورج کب آپکا تھا محتاج
آپ اب تو ہوے جہان مین پیدا / سورج پہلے ہی تھا ہویدا
پھر اُس نے یہ علم نیک بنیاد / سیکھا کس طرح ہو یہ ارشاد
فرمایا کہ مین بھی اور تو بھی / دونون ہین قدیم ہی کے ساتھی
گذرے ہین بہت سے جنم یوہین / واقف نہین تم ہواے خوش آئین
مین واقفِ رازِ مدعا ہون / جو کچھ گذرا ہی جانتا ہون
مین رونقِ باغِ سروری ہون / پیدائش و موت سے بری ہون
ہون بانی و مالکِ زمانہ / ہون کامل و قادر و یگانہ
تاہم قدرت مین ہو کے مشتاق / ہوتا ہون عیان میانِ آفاق
اخلاقِ حمیدہ دور ہون جب / دنیا مین بپا فتور ہون جب
بہر اصلاح و فکر موزون / جو شکل عیان ہو بس مین وہ ہون
بہر امداد نیک اشخاص / ظاہر ہوتا ہون با صد اخلاص
بڑھتا ہی جو سرکشی کا اندھیر / ہوتی نہین امداد مین دیر
کرتا ہون مین عدل کی حفاظت / غالب نہ ہون جس مین اہلِ بدعت
مطلب ہی نہ کاروبار بگڑے / دنیا کا نہ افتخار بگڑے
جس نے یہ کمال حیرت انگیز / جس نے یہ ظہور قدرت آمیز
سمجھے وہ ہوا ہی وصل مجھ مین / بس لین ہوا اور اصل مجھ مین
گیانی ہی جو صاحبِ ریاضت / اوسکو ہی آتما سے اُلفت
کام اُسکو نہین خوشی و غم سے / ہوتا ہی وہ آکے وصل ہم سے

جو دیکھیگا مجھکو جس نظر سے — پائیگا مجھے اُسی اثر سے
جو ثمرۂ فعل چاہتے ہین — رسمِ دنیا نباہتے ہین
وہ پوجتے دیوتاؤن کو بھی — پاتے ہین مراد جلد دل کی
ہین چار برن جو بہرِ تنظیم — ہی فعل و صفت سے اُنکی تقسیم
بانی ہون مین اونکا گو سراسر — آزاد مگر ہون ہر طرح پر
آلودہ مین فعل مین نہین ہون — خواہش سے بھی دور بالیقین ہون
واقف ہوا مجھ سے جو خردمند — فعلون کا نہین کبھی وہ پابند
جو لوگ کمال کے تھے طالب — رہتے تھے اسی عمل پہ غالب
قابل کرنے کے کام جو ہین — یا مجتنبِ انتظام جو ہین
سن ارجن اونکی مجھسے تفصیل — واجب احکام کی ہی تعمیل
اکثیر کے ہیت جو کرے کام — اُسکو نہین فکرِ رنج و آرام
ہی دل جو بری سزا جزا سے — ہی خوش وہ کمالِ مدعا سے
خواہش سے بری ہین جنکے افعال — ہین عارف و کامل و خوش اقبال
امیدون سے پاے جو رہائی — ہو اُسکے خیال مین صفائی
مشہور جو نیک و بد ہین افعال — ہو ان مین تمیز بھی بہر حال
جو شہوت و غصہ سے ہو پاک — ہین جنکے حواسِ شان ادراک
وہ شخص ہی عاقل زمانہ — ہی واقف و کامل زمانہ
ہو جسم سے اُنکے فعل اگرچہ — ست کرم سے اونکا ہو گنہ رد
ترک افعال کی جو ہی دھن — مشکل ہی نباہ اُسکا ارجن

فعلون کو جو سمجھے ترک افعال | بے فعل کے ہو جو محو اشغال
عارف ہے وہی وہی ہے کامل | ہے حلقۂ ذات حق مین داخل
جو تارک و صابر آدمی ہے | جو راضی و شاکر آدمی ہے
جو کچھ حاصل ہوا اوس سے ہو شاد | ہو حرص و حسد سے پاک و آزاد
ہو محو نہ اوسمین جو کرے کام | رکھے نہ وہ فکر رنج و آرام
یکسان جو اُمید و یاس سمجھے | وہ گیان کو اپنے پاس سمجھے
جو بیم و رجا سے ہو چکا دُور | دل کا عارف وہی ہے مشہور
وہ آلہ جو ہوم کا کرے کام | وہ جسمین ہو جن سے ہوم انجام
وہ آگ کہ جسکا ہوم ہے نام | جلنے سے ہو جس کے نیک انجام
اُن چیزون کو حق جو سمجھے ہے ٹھیک | عارف ہے وہ عارفون کے نزدیک
جو لوگ ہین کرم ہی کے پابند | کرتے ہین سُرون کو جگ سے خورسند
بعضون کا عمل - اس سے ہے دُور | یہ نخل وہ ہے جو پھل سے ہے دُور
ہین ضبط حواس بعض کرتے | لذات کا دم نہین ہین بھرتے
بعض اپنے پران روکتے ہین | دل کا ارمان روکتے ہین
بعض کرتے ہین وہ ریاضت | جسمین ہوتی ہے سخت محنت
بعضے کرتے ہین مہیا نی | بعضون نے عبادتون کی ٹھانی
اشٹانگ کا جوگ کرتے ہین بعض | جپ منتر کا لوگ کرتے ہین بعض
کچھ کرتے ہین لوگ اپان وایو | کرتے ہین کچھ پران وایو
بعضے کچھ کرکے کم غذائین | خواہش کی مٹاتے ہین جفائین

جو جو کرتے ہین ایسے افعال
برعکس جو انکے کرتے ہین کام
جو کرم بیان کیئے گئے ہین۔
باعث ہین نجات کے یہی کرم
جو جگ وغیرہ کرم ہین اور
عرفان ہی سے مکت ہو میسر
جب حد سے سوا فروتنی ہو
جب عارفون کی ہو خوب خدمت
عارف کی ہے پاک وصاف حالت
عارف پہ خودی نہ ہوگی حاوی
کیسا ہی ذلیل ہو گنہگار
لکڑی ہو خشک یا کہ تر ہو
عرفان بھی اسیطرح بہرحال
عرفان ہر ایک سے ہے اعلےٰ
اس سے ہی ہو نقد لطف حاصل
مضبوط ارادہ۔ سعی کامل
جس شخص کا ہو ضعیف ارادہ
کرتا ہے نہین جو سعی معقول
قابو مین نہ ہون حواس جس کے

مل جاتے ہین حق سے وہ بہرحال
رہتے ہین سدا ذلیل و بدنام
ویدون مین عیان کیئے گئے ہین
انکی ہی طرف بشر ہو سرگرم
عرفان افضل ہے سب سے ہر طور
کوئی نہین چیز اُس سے بہتر
جب حرص و ہوا سے دل غنی ہو
تب حاصلِ علم حق ہو حضرت
اوس پر نہ کرے اثر جہالت
ہین اوسکی نظر مین سب مساوی
ہو گیا ان کے فیض سے خوش اطوار
آتش سے ضرور اوسے ضرر ہو
کرتا ہے فنا تمام افعال
رتبہ تپ جوگ سے ہے بالا
اس سے ہی ہو اہل عقل کامل
کر دیتے ہین حل ہر ایک مشکل
رہتا ہے وہ مضمحل زیادہ
مرتا ہے وہ غم مین ہو کے مشغول
ہو نقد خرد نہ پاس جس کے

دنیا کے بھی لطف سے ہو وہ دُور
عقبیٰ کی بھی راحتین ہین کافور

سنیاس کرے جو اہل کوشش
کرمون کی نہ اُس کے پھر ہو پرسش

اے ارجن تو ہی اہل شمشیر
راجہ کا پسر ہی اہل توقیر

واجب نہین تجھ کو بزدلی ہی
یہ دشمن شان عاقلی ہی

جو دل مین شکوک ہین وہ کر دُور
کر گیان سے اپنے دل کو پُرنور

تیغ عرفان کو ہاتھ مین لے
فوج ہمت کو ساتھ مین لے

فوج دشمن کی سمت جا تو
میدان کی طرف قدم بڑھا لو

اودھیائے چہارم بکرم سنیاس جوگ نام

بہ رہِ نخستین ز جوگ اے پسر بہ ارشاد من اچھیر ارشد	بگفتم بخورشید روشن گہر بہ تعلیم اچھواک در کار شد

وز وشند بہ وحشش روانِ جہاں
نہ اخلاص تکلیف کردم ترا
بگفتا کہ خدمت گذارِ توام
کہ تو جلوہ گر ایں زماں گشتہ
چساں بودہ ئمت رہبرِ آفتاب
بگفتا کہ خامی ہنوز اے عزیز
ز آمد شدِ خویش تو آگہم
چو بنیادِ دیں سست گردد بسے
کہ حفظِ ریاضت گزیناں کنم
بر آریم خونِ ستم پیشگان
ہر آنکس کہ ما را چو ما یافتست
من آنم کہ باشد کرم پیشہ ام
اگر دیگرے را پرستند ہم
مرا چار برن است و چار آشرم
ز گن با عمل در عمل بر نہاست
من ام فارغ از کار کردارہا
مرا ہر کہ داند چنیں رستہ است
از یں پیش ہم عاشقانِ نجات

کہ معروف اوئیند صاحب دلاں
دریں جہد باید بہ ہر دم تما
ولے سخت حیراں ز کارِ توام
فروغِ رخِ ایں جہاں گشتہ
ز تعلیم تو گشت چوں فیضیاب
نہ واقف رہِ عقل و تمیز
بقدرت نمائی ہمیں پیدا شویم
نمائیم خود را بشکل کسے
مراعات عزلت نشیناں کنم
جہاں را نمائیم دار الامان
ز آمد شدن رو بر تافتست
نباشد بجز لطف اندیشہ ام
ببخشم بہ آنہا ز روے کرم
بجز ماں نگردد کسے از درم
مرا دو ہمہ برن شانے جداست
اگر چند من کردہ از کارہا
ز قیدِ ہوا و ہوس جستہ است
نکردند ترکِ عمل تا حیات

نہ راہم نجات است گر آرزو
بسا مردمانِ گمرہ شدہ اند
تمیز اندریں کار مشکل بود
بگوشت اگر حرف من جا گرفت
اکرم است و کرم ست دیگر بکرم
زنا کردن آں کہ واجب وست
زنا کرد و پیدا کشد احتراز
کسے کو نتیجہ نخواہد ز کار
جزائے عمل خواستن خوب نیست
چو من کن عمل تا شوی رستگار
اگر آتش معرفت بر فروخت
دگر کارِ آں مرد بالا رود
اگر دل بیار است و دست بکار
ہر آنکس کہ محو ست در ذاتِ حق
دگر دل بکار است بے یادِ او
کند ترکِ لذت کہ نعمت چشند
پئے دیوتا جگ کنند آں کسے
بسا مردماں آتش افروختند

نمی باید از کارِ خود تافت رو
ز نیک و بد و کار آگہ نہ اند
تواند اگر صاحبِ دل بود
بفردوس بابِ تو ما وا گرفت
کہ از کرم و نا کردہ اند شرم
ندامت کشیدن طریق نکوست
کہ یابد بصاحب دلاں امتیاز
ہمانست مقبول پروردگار
با مید دل کاستن خوب نیست
تمنا و حرص و ہوا در گذار
بیک لحظہ ہر جنس کردار ریخت
خودش با خدا ہشت ہر جا رود
ازیں ہیچ اندیشہ در دل میار
پئے رحمتش ہست او مستحق
رود ظلم بر تو ز بے دادِ او
بخلدِ بریں خفت راحت کشد
کہ دارد تمنائے دولت بسے
ز ہر جنس اشیا در آں سوختند

گروہے نشستند در آفتاب
گروہے بہ جگ جوگ اندر کار
گروہے بروزہ بسر مے برند
ہر آنکس کہ غافل ازین کارہاست
توان یافت از جوگ عرفانِ حق
بصبر آشنا شو تحمل بکن
بچیزِ میسّر قناعت نما
باقبال یاران حسد ہم مبر
من و آتش دہید و رو اشیاء او
کسے ضبط حسّا شمرد زجگ
تو ہم جوگ را مسکنی اختیار
بعرفانِ حق خویش را جوسانہ
چو عارف شوی میرود فکرِ غم
شود آتشِ شوق چون تیز تر
بود ہر کہ عارف خدیو جہانست
خدا نیست عارف ولے از خدا
جہالت کند کارِ عالم خراب
ببخشد یقین آدمی را کمال

گروہے بمانند در پیچ و تاب
کہ گردند با ہفت صد دل و چاہ
گروہے غذاہاے یکے میخورند
بر اوقاتِ او حیف خوردن وہست
کہ جوگیست فرماندہ نہ طبیق
بہر کار کردن تأمل مکن
بشہوت بلذت مشو آشنا
بدل کن خیالِ بدی را بہر
بہم است جز بہ ہم دیگر
بلذت کسے بہرہ بردہ زجگ
خوشی نایب لطف پروردگار
بسوزش دلِ خود بہر خوستہ
بغفلت مکن بر دلِ خود ستم
بسوزد ہوا و ہوس مثلِ شہر
برآلایش نباشد زبون و زبست
جز آنیست نزدیک اہلِ صفا
جہالت کند مستحق عذاب
یقین اشمرد دولتِ بیزوال

چو کامل شود مرد در علمِ جوگ
بزن دشمنِ خویشتن را بہ تیغ
بتن پنج باد است سازید نام
سمان ست در ناف و در دل پران
بیان ست اندر تمامِ بدن
فرو رفتنِ دم ہر روز اپان ست
ازین شغل نبود خبر ہیچکس
ز جگہاے دیگر ہمیں یک جگ است
کسانیکہ غافل ہمہ زشت اند شان
اگر بہرہ داری تو از ہوش و عقل
دل از بند ہر چیز بر داشتن
بنزدیکِ من از دو عالم خوش است
بجز معرفت یافتن مشکل است
ارادت دہد ہر کسے را مراد
خیالاتِ واہی ز دل دور کن

شود فارغ از رنج و اندوہ سوگ
نباید درین کار کردن دریغ
نشان میدہم من از انہا مقام
اودان در گلو و بمقعد اپان
بایں پنج باشد نظامِ بدن
بہ آوردنِ آں بہ معنی پران است
مگر کش بود شغلِ حبسِ نفس
کز و یادِ حق سارے ہر رگ است
بعید از مقامِ بہشت اند شان
بسر ہر شب و روز با اہلِ فضل
دراحتِ خویش بر داشتن
اگر معرفت نیست این ہم خوش است
مکان کہ بالا ز ہر منزل است
نیابی مرادے بجز اعتقاد
دلِ خویش را منزلِ نور کن

گیتا کے ادھیائے چہارم کا مہاتم 87

ہوئے ہر پچھمین سے حرف زن پھر
یہ گیتا پاٹ کرتے ہین جو انسان
چھوئے اُنکا بدن یا پیر کوئی
رہائی قالبِ ناپاک سے ہو
کہا شنی لچھمین سنے با دل شاد
ہوا ہی حال ایسا کس بشر کا

جمایا اِس طرح رنگِ سخن پھر
میسّر اُنکو ہی راحت کا سامان
بہم ہو اُسکو اسبابِ نکوئی
جُدا صحنِ چمن خاشاک سے ہو
کرو جوشِ طرب سے یہ تو ارشاد
یہ کوہ رنج کس کے سر سے سرکا

کہا سنئے یہ احوال کہنہ ہے — کہ مشہور اس طرح حال کہنہ ہے
جو گنگا ایک ہین بھاگیرتھی نام — وہین ہے شہر کاشی شہرۂ عام
اُسی جا اک بھرت نامی تھا بقّال — زمانے مین تھا وہ مرد خوش افعال
پڑھا کرتا تھا گیتا شوقِ دل سے — فقط ادھیائے چارم ذوقِ دل سے
کسی دن جا کے بہر کار جانبِ دشت — خوشی سے جابجا تھا محوِ گلگشت
جو گرمی کی ہوئی شدت وہان پر — درختون کے تلے لیٹا وہ جا کر
جما یا پیر اپنا اک شجر پر — تھا قائم دوسرے پر شوق سے سر
غرض سوکھے یکایک دونون اشجار — گرے آکر زمین پر چار و ناچار
ہوئے پیدا مکانِ برہمن مین — بشکلِ دختر آئے انجمن مین
وہ تھے طفلی مین مشغول عبادت — ریاضت کش صدا تھے حسبِ عادت
نظر آئے جو آثار جوانی — کہا سب نے براہِ نکتہ دانی
مناسب ہے کہ ہو اب انکی شادی — مٹے خاطر سے خارِ نامرادی
جو جانا دختر دن نے یہ ارادہ — تو کی مادر پدر سے کد زیادہ
ہمین کچھ رغبتِ شادی نہین ہے — خیال اپنا کہین ہے دل کہین ہے
جو اُن دونون کو یاد جنم تھی صاف — کیا یہ مشورہ با چشم انصاف
کہان ہے وہ جوان مرد نکوذات — کہ دیکھی جسکی نخلون نے کرامات
شجر کے جسم سے دیکر رہائی — ہماری شکل انسانی بنائی
نہ سر کی تھی جو یہ صورت نظر سے — ہوئین رخصت طلب مادر پدر سے
چلین تیرتھ کو دونون حسب دستور — ہوئین کاشی مین داخل شاد و مسرور

جو کی اُس مرد سے جا کر ملاقات ہوئی پیشِ نظر رسمِ مدارات
کہا پہچانا ہم کو اے نکوکار سمجھ ہم ہیں وہی دونوں گنہگار
ہوسیئے تھے آپ ان پر محوِ آرام نتیجہ میں ملا یہ ہم کو انعام
کہ اُس قالب سے ہاتھ آئی رہائی یہ تم نے صورتِ مطلب دکھائی
کہا اُس نے کہ جو کچھ اب ہو ارشاد بجا لائیں ہیں اُس کو با دلِ شاد
کہا دنیا میں تم اہلِ وفا ہو ثواب ادھیائے چارم کا عطا ہو
اب اس قالب سے بھی دونوں ہوں آزاد دعائیں تمکو دیں با خاطرِ شاد
رہائی ہو ہمیں آواگون سے خزاں رخصت ہو آغوشِ چمن سے
غرض اُس نے کیا تعمیل ارشاد دیا گیتا کا پھل با خاطرِ شاد
ہوئی یوں صورتِ مطلب برآری بوان آیا گئیں پاکر سواری
کہا بھگوان نے گیتا ہی کا پھل ہے راحت بخش اہلِ رنج و افضل

چوتھے ادھیائے کا خلاصہ

۱۔ **گیان کی قدامت۔** بھگوان نے ادھکاری کو دو راستے بتائے تھے۔ ان میں سے کرم یوگ کا بیان تیسرے ادھیائے میں ہوا۔ چوتھے میں گیان کا بیان کرتے ہیں۔ اور اوّل گیان کی عظمت ارجن کے ذہن نشین کرنے کے واسطے اس کی قدامت بتاتے ہیں۔ کہ میں نے یہ یوگ سورج بنسی خاندان کے مُورث اعلیٰ وِوسوت کو بتایا۔ وِوسوت نے منو کو۔ منو نے اکشواکو کو۔ اسی طرح درجہ بدرجہ تعلیم ہوتی آخر راجرشیوں تک پہنچی۔ امتداد زماں سے چونکہ یہ تعلیم رائج نہیں رہی اس واسطے اس قدیم علم کو از سر نو زندہ کرنے کے واسطے میں نے تجھے بتایا ہے +

۲۔ **ارجن کا اعتراض۔** اس پر ارجن اعتراض کرتا ہے۔ کہ آپ کا جنم زمانے میں اب ہوا ہے۔ اور وِوسوت بہت پہلے تھا۔ یہ کیونکر ہو سکتا ہے +

۳۔ **بھگوان کا جواب۔** تیری طرح میرے جنم بھی بہت گزرے ہیں تجھے اگیانی ہونے کی وجہ سے ان کا علم نہیں ہے۔ اور مجھے گیانی ہونے کی وجہ سے اپنے جنموں کا علم ہے۔ تو کیا بھگوان کے بھی معمولی جیووں کی طرح جنم ہوتے ہیں؟ اس کا جواب یوں دیتے ہیں:-

۴۔ **اوتاروں کا مسئلہ۔** کوئی بڑا مہاتما گیان کے فیض سے جیو بھاؤ سے ایشور بھاؤ کو پہنچتا ہے۔ یہ مایا کا غلام نہیں بلکہ حاکم ہوتا ہے۔ جگت کو رچتا ہے۔ اور پالن کرتا ہے۔ شری کرشن بھگوان اسی پدوی میں ہیں۔ نظام عالم قائم رکھنے کے واسطے انہیں ہر ایک جگ میں اوتار دھارن کرنا پڑتا ہے۔ چنانچہ کہتے ہیں۔ کہ جب دھرم گھٹنے لگتا ہے۔ اور ادھرم بڑھنے لگتا ہے۔ تو میں ظاہر ہوا کرتا ہوں۔ یہ جنم معمولی جیووں کا سا نہیں ہے۔ جو پچھلے جنموں کے پھل بھوگنے کے واسطے دنیا میں جنم لیتے رہتے ہیں +

۵۔ **بھگوان کے اوصاف۔** اسی ضمن میں اپنے اوصاف بیان کرتے ہیں:-

(ا) جو میرے پاس جس بھاؤنا سے پہنچتے ہیں۔ میں اُن سے ویسا ہی سلوک کرتا ہوں۔ گیانیوں کو موکش دیتا ہوں۔ پھل چاہنے والوں کو بھوگ دیتا ہوں۔ جو خاص دیوتاؤں کو خاص مرادوں کے پورا ہونے کی غرض سے بھجتے ہیں۔ ان کی بھی مرادیں میں ہی پوری کرتا ہوں +

(ب) چاروں برن میں نے ہی پیدا کئے ہیں۔ لیکن مجھے کرم کی لوث کبھی نہیں ہوتی۔ کیا وجہ کہ میری غرض یا خواہش کرموں میں نہیں ہے۔ اسی طرح تو بھی کرم کر۔ پہلے سے پہلے لوگ بھی یوں ہی کرتے چلے آئے ہیں۔ کرم کا سمجھنا مشکل ہے۔ کرم نام ہے کام کرنے کا۔ یہ اکرم آتما میں خواب کی طرح ہوتا ہے۔ بکرم فعل ممنوع کو کہتے ہیں۔ جو کرم آتما میں کرم دیکھتا ہے۔ اور کرم کی تہ میں آتما کو سمجھتا ہے۔ وہ پورا گیانی ہے۔ اُسے پھل کی چاہنا نہیں ہوتی۔ صابر و آزاد و بے خواہش و بے تعلق رہتا ہے۔ اس کے تمام کرم محض یگیہ کے واسطے ہوتے ہیں +

۶۔ بھگوان یگیہ تیرہ قسم کے بتاتے ہیں۔ برہم یگیہ۔ دیو یگیہ۔ برہم اگنی میں خود یگیہ کو ہون کرنا۔ سنیم اگنی میں اندریاں ہون کرنا۔ اندریوں میں بشے ہون کرنا۔ ضبط نفس کی آگ میں اندریوں اور پرانوں کے کام ہون کرنا۔ دھن یگیہ۔ تپ یگیہ۔ یوگ یگیہ۔ سوادھیائے یگیہ۔ گیان یگیہ۔ پرانایام یگیہ۔ پران یگیہ۔ ان کے علاوہ اور سب فرائض جن کے ادا کرنے سے اپنی روحانی بہتری متصور ہے یا اوروں کو فیض پہنچتا ہے۔ یگیہ میں داخل ہیں۔ اور ویدوں میں ان کی تفصیل دی گئی ہے۔ سب یگیوں میں گیان یگیہ افضل ہے +

۷۔ **گیان۔** اس کے متعلق مندرجہ ذیل باتیں یاد رکھنے کے لائق ہیں:-

(ا) گیان یگیہ سب سے افضل و اعلیٰ ہے +

(ب) گیان گورو کی تعظیم و خدمت کر کے سیکھنا چاہئے +

(ج) گیان ملجاتا ہے۔ تو موہ سے آدمی دھوکہ نہیں کھاتا۔ بلکہ اپنی ذات کو غیر محدود محسوس کرتا ہے +

(۷) گیان سے پاپ کا پچھتاوا دور ہوتا ہے کرموں کے احاطے سے آدمی باہر آتا ہے۔ بے نظیر اور مقدس چیز ہے ✦

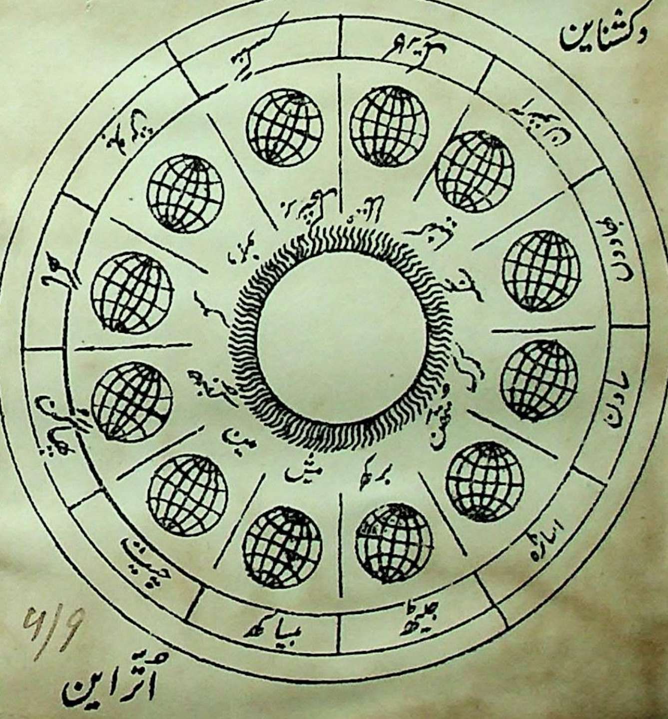
(۸) گیان انتہ کرن کی شُدھی اور حسن عقیدت سے ملتا ہے۔ اور اس کے ملنے ہی پر پرم شانتی نصیب ہوتی ہے ✦

(۹) اگیانی۔ بے عقیدت اور شک و شبہات والے تین آدمی ناش ہوتے ہیں۔ اس واسطے اگیان سے پیدا شدہ شک کو گیان سے دور کرنا چاہیے۔ اور انتہ کرن کی شُدھی میں کوشش کرنی لازم ہے۔ جس نے یوگ سے کرم چھوڑ دیے ہیں۔ اور جس کے شکوک گیان سے دور ہوئے ہیں۔ غرض جو نفس پر قادر ہے اُس کو اعمال نہیں باندھنے پاتے ✦

تصویر نمبر ۴ - اسرارِ حقیقت

آفتاب اپنی روشنی کرۂ زمین پر ڈالتا ہے اور اُس کے مختلف حصوں کو وقتاً فوقتاً مختلف درجوں کی حرارت پہنچاتا ہے اس لئے رُوئے زمین پر موسم بدلتے ہیں۔ گرمی پڑتی ہے۔ بارش ہوتی ہے۔ غلہ پیدا ہوتا ہے اور جملہ حیوانات کی زندگی میں انقلاب آتا ہے یہ مظاہرہ اُس سطح پر ہوتا ہے جس کا رشیوں سے تعلق ہے۔ وجودِ انسان میں بھی ایسا ہی تماشہ نظر آتا ہے کہ وہاں آفتابِ ذات علمی روشنی سے عقل دل اور حواس کو مُنوّر کرتا ہے اور اپنی عملی طاقت سے اُنھیں حرکت دیتا ہے۔ فلسفہ کی زبان میں ایسی روشنی و تحریک کو علم و عمل کہتے ہیں۔ فطرتِ انسان پر غور کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ علم کا سرچشمہ ذات ہے اور اعمال کا صفات۔ ذات و صفات کی عُقدہ کُشائی سے بشر صفات پر فتح پاتا ہے، اور ذات میں وصل ہوجاتا ہے۔ اِسکی طریقت ترکِ خودی ہے جس کی برکت سے انسان کی رسائی حقیقت کی منزل تک ہوجاتی ہے۔ ترکِ خودی کو حق شناسی کا ذریعہ ثابت کرنا اس تصویر کا مقصد ہے۔

تصویر نمبر ۴ اسرارِ حقیقت



میری قدرت کے کرشمونپر گیا جنکا خیال ۔ وہ تناسخ سے بری ہیں مجھیں ہے انکا وصال

६२६

ॐ

श्रीमद्भगवद्गीता

कर्म संन्यास योग अध्याय ॥५॥

पृष्ठ ६२७ से ७०६ तक

आनन्द-कन्द श्रीकृष्ण



वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात् ।
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात्कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥

پانچواں ادھیائے

کرم سنیاس یوگ یا ترک اعمال

تیسرے اور چوتھے ادھیائے میں کرم اور گیان یوگ کا مفصل بیان ہُوا - ان میں سے گیان مارگ یعنی راہ سمجھ کا ہے - اس میں کرموں کا کچھ پھیلاؤ نہیں ہے - بلکہ آدمی جب یہ رمز خفی سمجھتا ہے - کہ میں شُدھ گیان سروپ آتما ہوں - اور کرم سے مجھے مطلق تعلق نہیں ہے تو اسلئے کرم چھوٹ جاتے ہیں - چنانچہ بھگوان نے خود کہا ہے - گیان اگنی میں تمام کرم جلکر خاک ہوجاتے ہیں - یہ سنیاس یعنی ترک اعمال کی تعلیم ہے - ساتھ ہی بھگوان یہ بھی تعلیم دیتے ہیں - کہ دھرم یدھ سے بڑھکر کشتری کے واسطے اور چیز نہیں ہے - تجھے کرم کرنے چاہئیں - یہ دونوں باتیں متضاد معلوم ہوتی ہیں - اس واسطے ارجن اعتراض اٹھاتا ہے - اور بھگوان جواب دیتے ہیں - کہ سانکھیہ اور یوگ یعنی گیان اور کرم دونوں ایک ہیں - اور ایک ہی منزل پر پہنچانے والے ہیں +

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि ॥ यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥ १ ॥

दोहा–कबहुँकहतसंन्यासको, कबहुँकर्मकोयोग ।
निश्चयकरिएकैकहो, मेटोकिनभवरोग ॥ १ ॥

श्रीकृष्णको अर्जुन पूँछते हैं कि, हे कृष्ण ! कर्मोंको संन्यास जो ज्ञानयोग उसको और फिर कर्मयोगको कहते हो इन दोनोंमें जो निश्चयकियाभया श्रेष्ठहोय उसीको कहो. जैसे कि, दूसरे अध्यायमें कहा कि मुमुक्षु प्रथम कर्म करके अन्तःकरण शुद्धभये पर ज्ञानयोग करके आत्मदर्शनका उपायकरे, तीसरे चौथेमें ज्ञानीको भी कर्म करनाही श्रेष्ठ कहा, ऐसे दोनों कहतेहो जो इन दोनोंमें श्रेष्ठहो सोई कहो ॥ १ ॥

[illegible]

पंजवां अध्याय

अर्जुन उवाच

कर्म त्याग दी मैहमा गाओ
मुड़ फिर कर्म योग वडयाओ
इयों न भरमाओ चित्त मेरा
इक राह दस देओ चंग चंगेरा । १ ।

۱۔ ترک اعمال بھی سناتے ہو مجھے
کرمِ اعمال بھی سکھاتے ہو مجھے
جو دونوں میں ہو بہتر و برتر اے کرشن
تم وہی کیوں نہیں بتاتے ہو مجھے

1. O Krishna, laudest Thou at once,
Surcease from work [1] and its pursuit, [2]
Pray tell me now decisively
Which of the twain the better is? [3]

कर्म-योग बतलाते हो अब पहले कहा कर्मका त्याग ।
निश्चय मुझे एक बतलाओ जो हो अधिक श्रेय, बड़भाग ! ॥

Renunciation of actions Thou praisest, O Krishna, and then also yoga. Of the two which one is the better? That tell me conclusively. (1)

दोहा—ज्ञानयोग अरु कर्मको योग कहे दउ राज ।
इन दोनोंमें श्रेष्ठ जो सो कहु निश्चय आज ॥ १ ॥

Arjuna said:

KRSHNA, in one breath Thou praisest 1
the laying down of deeds, and deeds!
Which of these two alone is best?
Pray make Thou sure, and teach me this.

۱۔ کبھی کہتے ہو کرم کو چھوڑ دو
کبھو پھر کرم سے ہی چت جوڑ دو
بھلی بات ہو ایک ان دونو ہیں
بنا کہ وہی من میرا موڑ دو

कर्मों का सन्यास कभी फिर, कर्मयोग को कहते श्रेष्ट,
दोनों में जो हो श्रेयस्कर, निश्चय कर कहिए मति ज्येष्ट !

آرجن بھگوان سے ہے گویا — رمزِ پنہاں کا یوں ہے جویا
کی ترکِ عمل کی پہلے تعریف — پھر فرمائی "عمل" کی توصیف
اے کرشن یہ آپ اب کریں طے — حاصل کسے اِن میں برتری ہے
دیں آپ مجھے ہدایت نیک — فرمائیں طریقِ کار صرف ایک

पहिले त्याग सराहते, फिर बडयाते योग ।
कर्मों का हे कृष्णजी! कैसे सधे यह योग ॥१॥
इन दोनोंमें एक ही, कल्याण-कर जो ।
उत्तम निश्चित् आप का, मुझ से वही कहो ॥२॥

श्रीभगवानुवाच ।

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरा-
वुभौ ॥ तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्म-
योगो विशिष्यते ॥ २ ॥

दोहा—कर्मयोगसंन्यासअरु, एदोऊशुभदैन ।
कर्मयोगसंन्यासमें, कर्मनलहियेचैन ॥ २ ॥

जब अर्जुनने प्रार्थना की तब श्रीकृष्ण भगवान् बोले सो ऐसे कि, संन्यास जो कर्मका त्याग और कर्मयोग ये दोनों कल्याणकारक हैं. तिनमेंसेभी कर्मके त्यागसे कर्मयोग विशेष श्रेष्ठहै ॥ २ ॥

[illegible]

श्री भगवानोवाच

इक मारग सन्यास कहांदा
दूजा कर्म योग सदवांदा
दोवें राह इक थां लै जावन
मोक्ष द्वारे तीक पहुंचावन
पर जद तुलना कीती जावे
कर्म योग उत्तम अखवावे । २ ।

۲- اعمال بھی اور ترک بھی دونوں ہیں بھلے — دونوں ہی بھلائی کے ہیں کرنے والے
لیکن مسلکِ عمل کا ان دونوں میں — ہے ترک سے رتبے میں بہت بڑھ چڑھ کے

२

श्रीभगवान्‌ने कहा—

न्यास कर्मका और योग, ये दोनों मोक्षप्रद हैं पार्थ ! ।
पर इनमें है कर्म-त्यागसे कर्मयोग ही श्रेष्ठ यथार्थ ॥

2. Surcease from work and its pursuit,
Both lead a man to Bliss Supreme;
But of the twain, pursuit of work
Is better than renouncing deeds.

Renunciation and yoga by action both lead to the highest bliss; of the two, yoga by action is verily better than renunciation of action. (2)

दोहा--ज्ञानयोग अरु कर्मको योग दऊ हैं श्रेष्ठ ।
ज्ञानयोगसों कर्मको योग हि तिनमें ज्येष्ठ ॥ २॥

The Blessed One replied,

Renunciation and Endeavour,
combined, lead up to Final Good: 2
Seen apart, to take up action
is better than to give up work.

(२)

कर्मयोग और कर्मत्याग हैं, दोनों श्रेयस्कर मतिमान:
तौ भी कर्मत्याग से बढ़ कर, कर्मयोग है श्रेष्ट महान।

(۲)

گرچہ اِن دونوں طریقوں کا بخیر انجام ہے
ترک سے دُنیا میں ترکِ ترک افضل کام ہے

सदा दोऊ कल्याण-कर, कर्मयोग अरु त्याग।
कर्मयोग पर दोऊ में मान बडा, मत त्याग ॥३॥

۲

بھگوان نے یوں لب اپنے کھولے — ارجن کا سوال سُن کے بولے
افعال کی سمت بے نیازی — دور از کاہش عمل نوازی
دونوں میں نہاں ہے راز بہبود — دونوں سے ہے بہتری ہی مقصود
ثانی اوّل سے ہے مگر بیش — افضل دونوں میں ہے یہی کیش

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति ॥ निर्द्वंद्वो हि महाबाहो सुखं बंधात्प्रमुच्यते ॥ ३ ॥

दोहा–द्वेषतजैंचाहहितजैं, सोसंन्यासीजानि ।
रागद्वेषतेतोरहित, ताहिबढ्योतूमानि ॥ ३ ॥

हे महाबाहो, जो कोई वस्तुसे न द्वेषकरै, नचाहैंना-करै सो सुख दुःखादि द्वंद्वरहित नित्यसंन्यासी जाननां वह सुखपूर्वक निश्चयं बंधनसे मुक्तहोतो है ॥ ३ ॥

निच सन्यासी ओह सदवांदा
राग द्वेश वस्स जो नहीं आंदा
सुख दुख विच्च जो न घबरावे
सहज ही बंधन थों छुट जावे । ३ ।

۳- ہاں یاد رہے ہمیشہ تارک ہے وہی
رغبت کرتا ہے اور نہ نفرت جو کبھی
جس کو اضداد سے ہیں کچھ سروکار
وہ بندھن سے چھوٹ جاتا ہے بآسانی

(۳)
جس نے رغبت اور نفرت چھوڑ دی تارک ہے وہ
بیخودی میں جسکو آزادی ملی سالک ہے وہ

(३)
राग-द्वेष, सुख दुख आशा का, कर देते हैं जो नर त्याग;
वे ही सन्यासी पाते हैं, भव-बन्धन से मुक्ति विराग ।

He should be known as a perpetual ascetic,* who neither hateth nor desireth; free from the pairs of opposites, O mighty-armed, he is easily set free from bondage. (3)

३

नहीं द्वेष, आकाङ्क्षा जिसको वह पूरा संन्यासी, वीर ! ।
द्वन्द्व-मुक्त वह, अनायास ही मुक्त बन्धसे होता धीर ॥

3

Be that Man known as Eternal
Renouncer, who hates not, nor lusts :
He that has bridged o'er all contrast
is easily loosed from his bonds.

दोहा—नहिं इच्छा अरु द्वेष जस द्वंद्व सहै अरु जोय ।
सहज हि छूटै बंधसों सदा ज्ञाननिधि सोय ॥ ३ ॥

۳- جو نہیں ویر کرتا نہ اِچھیا کرے
جو سُکھ دُکھ میں یکساں ورتا کرے
اِسے جان سنیاس کی مورتی

جائیں اِس کے آسان بندھن ٹوٹ ے

3. The man who neither hates nor craves,
A true [4] renouncer should be deemed,
Free from the "pairs," O stalwart-armed,
He is from bondage freed with ease.

जलन नहीं नहीं, कामना, जोड़ों का न विचार।
ऐसे को नित् मानिये, सुत्यागी सुखसार ॥४॥
निश्चय ही वह छुटेगा, जन्म फांस से ठीक।
बडी भुजा से युक्त हे, अर्जुन! मान यह ठीक ॥५॥

۳

رغبت جس کا نہیں ہے شیوہ — نفرت جس کا نہیں ہے شیوہ
کرتا نہیں ان کی جو غلامی — ہے واقعی تارک دوامی
اے ارجن صف شکن قوی بال — اضداد سے جو نہیں ہے پامال
آسانی سے خود بخود وہ انساں — ہو جاتا ہے، رستگار دوراں

सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदंति नै

पण्डिताः ॥ एकमप्यास्थितः सम्यगु-
भयोर्विन्दते फलम् ॥ ४ ॥

दोहा–योगसांख्यकोद्वैकहत, मूरखपंडितनाहिं।
दोऊमेंएकैभजैं, दोऊफलहैंताहि ॥ ४ ॥

जो मूर्ख हैं वे सांख्ययोगोंको याने ज्ञानकर्मोंको न्यारे कहते हैं पंडित नहींकहते हैं. इन दोनोंमेंसे एकमेंभी अच्छीतरहसे स्थित रहाभया दोनोंके फलको पाता है ४

4. 'Tis not the wise, but only babes
Who speak of *Sānkhya* and of *Yog*
As paths distinct. Who follows well
The one, obtains the fruits of both.

योग अते सन्यास नूं अर्जुन
बाल अञाणे अड अड समझन
पर पंडित जो तत्त पछाणे
सांख योग नूं इको ई जाणे
भावें इक राह कदम उठावे
फेर वी दोहां दा फल पावे । ४ ।

۴۔ جو سانکھیہ اور یوگ کو سمجھے ہیں جدا — ناداں بچے ہیں وہ نہیں ہیں دانا
اچھی طرح گر ایک بھی انسان کرے — دونوں ہی کا پھل لئے ہے بس طلب تا

४

सांख्य, योगको भिन्न मूढजन कहते, पंडित नहीं सुजान !।
पूर्ण आचरण करें एकका फल दोनोंका मिले समान ॥

Children, not Wisdom-Eyed Sages, 4
make two paths of Knowledge and Deed.
Whoso in either grows Perfect,
is rich with the Fruitage of both.

दोहा—ज्ञानयोग अरु कर्मको बालक भिन्न बताय ।
एकसाथ फल दोउको आतमदर्शन पाय ॥ ४ ॥

(४)

पण्डित नहीं, मूर्ख नर ही जो, सांख्य योग में मानें भेद;
भली प्रकार एक ही साधे, पाते फल, कर भव-विच्छेद ।

Children, not sages, speak of the Sânkhya† and the Yoga ‡ as different; he who is duly established in one obtaineth the fruits of both. (4)

बालबुद्धि जो लोग हैं, त्यागयोग कहैं भिन्न ।
पर पण्डित नहीं मानते, इक दूजेसे भिन्न ॥६॥
दोनों ही का पायगा, फल टिककर इक में ।
सुदृढ हो सम्यकतया, लीन हुआ उसी में ॥७॥

۴

یہ سانکھ کی بے مثال تعلیم
یہ جوگ کی لازوال تعلیم
دونوں باتیں نہیں ہیں یکساں
ایسا کہتے ہیں طفل ناداں
لیکن جو ہیں عالم خردور
دونوں کو ہیں جانتے برابر
جو شخص ہے ایک میں بھی کامل
پھل ہے دونوں کا اس کو حاصل

जो पदवी पावे सन्यासी
उस जा पहुंचे योगाभ्यासी
सो ज्ञानी एह तत्त पछाणे
सांख योग नूं जो इक जाणे । ५ ।

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ॥ एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥ ५ ॥

दोहा–स्थानजुलहियेसांख्यते, सोइयोगतेहोय ।
सांख्ययोगएकैगनै, ताकोज्ञानीजोय ॥ ६ ॥

जो स्थान ज्ञानकरिके प्राप्तहोताहै सोई कर्मकरिकेभी प्राप्तहोताहै इससे ज्ञानको और कर्मको जो एक जानताहै सोजानता है याने विद्वान् है ॥ ५ ॥

۵. درجہ جو اہل سانکھیہ پاجاتے ہیں اس پر ہی اہل یوگ بھی آتے ہیں
جاتا ہے جنہوں نے سانکھیہ اور یوگ کو ایک وہی اہل نظر بھی کہلاتے ہیں

(५)

ज्ञान और निष्काम कर्म से, परम धाम मिलता है अन्त;
अन्तिम फल-विचार ही देखें, जग में जो हैं सच्चे सन्त।

۵ یہ گیانی بھی جس جا پہ ہے پہنچتا
کرم یوگی واں پر لے آسن جما
وہی سانکھ ہے اور وہی یوگ ہے
جو ہے آنکھوں والا وہی دیکھتا !!

That place which is gained by the Sânkhyas is reached by the Yogis also. He seeth, who seeth that the Sânkhya and the Yoga are one. (5)

५

जहाँ सांख्यवाले जाते हैं योगी भी पाते वह स्थान।
जिसने सांख्य, योग सम जाना उसने तत्त्व लिया पहचान ॥

Whate'er the Goal by Knowledge won, 5
the Path of Deeds goes there as well:
Who sees that Knowledge and pure Deed
are ONE, that Seer truly *sees*.

दोहा–ज्ञानयोगसों सिद्ध जो कर्महु सो उहि होइ ।
दोनोंको इकरूप जो जानै पंडित सोइ ॥ ५ ॥

(۵)

جس جگہ سالک پہونچتا ہے وہیں مجذوب بھی
چشمِ بینا میں ہے یکرنگی سلوک و جذب کی

5. The goal which by the *Sānkhyas'* reached,
Is by the *Yogins* also gained;
The real seer is the man
Who *Yog* and *Sānkhya* sees as one.

ज्ञानी, त्यागी लोग जिस, में पहुंचें कर त्याग ।
योगी भी जावें वहीं, यद्यपि करें न त्याग ॥८॥
अत: वही है देखता, जो देखे दोऊ एक ।
सांख्य ज्ञान अरु त्याग को, कर्मयोग ही एक ॥९॥

۵

مقصود جو سانکھ یوگ کا ہے
منزل وہی پاک جوگ کی ہے
راہِ عمل و طریقِ عرفاں
حاصل ہے فقط نظر اسی کو

جو کچھ عرفاں کا منتہا ہے
عامل بھی اسی کا مدّعی ہے
دونوں ہیں نظر میں جس کی یکساں
سب کہتے ہیں دیدہ ور اسی کو

योगाभ्यास मूल है सभ दा
योग बिना सन्यास न लभ दा
मुनी मुनीशर योगा भ्यासी
सहज ही पावरा ब्रह्म अविनाशी । ६ ।

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुम-
योगतः ॥ योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म न
चिरेणाधिगच्छति ॥ ६ ॥

दोहा—लहसंन्यासहिदुःखसो, विनकर्मनरेमीत ।
योगयुक्तिजेकरतुहैं, लहतब्रह्मनिश्चित ॥ ६ ॥

हे महाबाहो ! यह संन्यासै कर्मविनाँ प्राप्तहोनेकौ दुर्गमैहै यौने होनेहीका नहीं. जो कर्मयोगयुक्त आत्मज्ञाक्मैं मनलँगाये है सो थोडेही कालमें ब्रह्मकौ प्राप्तहोताहै॥

۶۔ لیکن ہے سنیاس امر مشکل
ہاں یوگ میں جو لگے رہا کرتے ہیں

گر یوگ کی امداد نہیں ہے شامل
وہ برہم میں سما جاتے ہیں جلدی واصل

(۶)
کیفِ تارک کے لئے درکار ہے ترکِ خودی
بے طلب سالک کو حاصل ہو سُرورِ بیخودی

(६)
अर्जुन ! बिना कर्म के कोई, पाता नहीं पूर्ण सन्यास;
कर्मयोग से ब्रह्म ज्ञान का, हो जाता है शीघ्र विकास ।

6. 'Tis hard to reach, O stalwart-armed,
Renunciation without *Yog*;
The sage who is with *Yog* equipped,
Doth swiftly wend his way to Brahm.

But without yoga, O mighty-armed, renunciation is hard to attain to; the yoga-harmonised Muni swiftly goeth to the ETERNAL. (6)

۶ کرم بن یہ سنیاس مشکل ملے
کرم بن یہ ہردا کنول کب کھلے
کرم یوگ سے جو کہ سمپن ہو
ملے برہم کو نہ بلا سے ہے

६
बिना योग संन्यास-प्राप्ति यह अति दुर्लभ होती है तात ! ।
योग-युक्त मुनि जो होता है पाता वही ब्रह्म, अचिरात ॥

6
Now, Renunciation without Work
is hard to reach, O Long-Armed Friend;
The contemplative, through pure Work
made Whole, can swiftly merge in BRAHM.

दोहा--कर्मयोगविन ज्ञानको काठिन हि कोई पात ।
कर्मयोगसों ब्रह्मको जितगन सहजहिं जात ॥ ६ ॥

कर्मयोग बिन अति कठिन, है पा सकना त्याग ।
योगहीन हे वीरवर! कैसे सके कर त्याग ॥१०॥
जिसने धारा मौन है, अरु जिस साधा योग ।
प्राप्त हो जावे ब्रह्मको, बिना देर सह योग ॥११॥

٦

بے لوث عمل کا ہو جو فقداں
رہرو اس کا نہ ہو جو انساں

اے زور ورو جری کماندار
ہے ترکِ عمل اک امرِ دشوار

ہوتا ہے جو کوئی مردِ شاغل
بے لوث عمل کی سمت مائل

اس کو ملتی ہے دولتِ حق
ہوتا ہے وہ محوِ ذاتِ مطلق

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेंद्रियः ॥ सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥ ७ ॥

दोहा--इंद्रियजितकैंशुद्धही, योगयुक्तिजोकोय ।
जीवनजानैआतमा, कर्मलिप्तसुनहोय ।

जो कर्मयोगयुक्त है याने निष्काम कर्म करताहै और वाणी जिसकी शुद्ध है याने वाणीसे हरिकीर्त्तन करता है और मनशुद्ध है याने मनसे हरिस्मरण करता है और जितेंद्रियहै याने इंद्रियविषयको श्रेष्ठ नहीं जानता है और सर्वभूतप्राणीका आत्मा अन्तर्यामिमें है आत्मा मन जिसका सो पुरुष कर्म करताभयाँभी नहीं लिप्तहोताँ है ॥

योग कमावे जती कहावे
इन्द्रियां ते मन जित जावे

शुद्ध आतमा तत पछाणे
आतमा नूं जो सब विच जाणे
ऐसा नर जद करम कमांदा
कर्म बंधना विच्च नहीं आंदा । ७ ।

(۷)
عارفِ روشن ضمیر و ماہرِ ضبطِ حواس
ذات کی تسلیم میں اعمال سے ہے بے ہراس

۷. کی یوگ سے صاف عقل اپنی جس نے من جیت لیا حواس جس نے جیتے
اُس کی ہے ذات جزو و اور کل کی ذات کرتے ہوئے کرم کچھ نہیں ہوتا اُس سے

(७)
रहता है अलिप्त ही यद्यपि, करता कर्म स्वमति अनुरूप;
इन्द्रियजित विशुद्ध भावों से, मानें सब में ब्रह्म-स्वरूप।

7. The Yog-equipped, the pure in heart,
The self-controlled, the sense-subdued,
Whose self becomes the self of all[5]
Remains untainted though he acts.

He who is harmonised by yoga, the self-purified, SELF-ruled, the senses subdued, whose SELF is the SELF of all beings although acting he is not affected. (7)

७
[illegible]

योग-युक्त, मन शुद्ध, जितेन्द्रिय, आत्मजयी जो हुआ यथार्थ।
करता हुआ कर्म समदर्शी नहीं लिप्त होता है पार्थ ! ॥

The Work-at-Oned, His Heart grown pure, 7
His Mind controlled, His Pow'rs in hand,
His Self the SELF of all that lives,—
e'en working on, incurs no stain.

दोहा—जित चित इंद्रिय, मानतो जीवनको इकसार ।
कर्मयोगकर सो नहीं बँधतो कर्म निहार ॥ ७ ॥

जीत लिया मन सर्वथा, इन्द्रिय भी सब जीत ।
निज आत्मा वश कर लिया, जन्म लिया उस जीत ॥१२

योगी ऐसा बन रहा, सभी प्राणि की जान ।
प्राणि-अप्राणि सभी का, सब तन का इक प्राण ॥१३॥

بے لوث عمل میں ہے جو یکسو
تسخیرِ حواس میں ہے کامل
ہے جانتا محوِ حق پرستی
گو ذائقہ عمل ہے چکھتا

رکھتا ہے جو دل کو زیر قابو
ہے جس کو صفائے قلب حاصل
سب کی ہستی کو اپنی ہستی
لیکن نہیں اُس سے لوث رکھتا

५
८-८

नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ॥ पश्यञ्छृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्छ्वसन् ॥ प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेषु वर्त्तंत इति धारयन् ॥ ८ ॥ ९ ॥

दोहा–ज्ञानीकर्मनिकरतहूं, लेइकियेनहिंमानि ।
सूंघबदेखतछुवतपुनि, सुनतचलतहूंजानि ॥ ८ ॥
सोवतजागतचलतअरु, बोलतडरहूदेत ।
इंद्रियविषयनमेंपगी, जानतुहैयहहेत ॥ ९ ॥

इंद्रियनके विषयोंमें इंद्रियां वर्त्तमानरहती हैं ऐसे धारणकरे भये तत्वज्ञानी, कर्मभोगी देखतां, सुनतां, स्पर्शतां, सूंघंता, खोता, चलतां, सोतां, श्वांसलेता, बोलेता, छोडेता, पकरतां, नेत्रखोलेता, मीचतांभयाभी मैं कुछ भी नहीं करताहौं ऐसे मानताहे ॥ ८ ॥ ९ ॥

6

योगी अखीयां मीटे, खोले
चल्ले, सुंघे, सुणे, ते बोले
छोहवे, स्वास लवे, सौं जावे
दुनियां दे सब कर्म कमावे
पर हर वेले तत्त पछाणे
"मैं कुझ नहीं करदा" एह जाणे
आखे इन्द्रियां गुण कारन
गुण वस्स हो सब काज सवारन । ८ । ९ ।

۸۔ میں کچھ نہیں کرتا کام سب کرتے ہوئے۔ 3 واصل گیانی کا ہے عقیدہ دل سے

۹۔ سنتے ہوئے دیکھتے ہوئے اور چھوتے
لیتے ہوئے دیتے ہوئے اور لیتے بھی 3 اور سونگھتے کھاتے راہ چلتے سوتے
کرتے ہیں حواس کام در محسوسات یا کھولتے بند کرتے آنکھیں اپنی
ہے دل میں یقین بات ہے بس یوں ہی

(८)

तत्व-ज्ञान के जानन हारे, चलते, फिरते, सूँघत, खात;
सुनते, छूते, और देखते, इन्द्रिय लिप्त न होवें तात!

(९)

श्वांस लेत, छोड़त, बोलत भी, सोते नेत्र मींचते पार्थ!
नेत्र खोलते भी वे जानें, है यह सब वस आत्म हितार्थ।

दोहा--देखत सूंघत सुनत औ सोवत खावत जात। (इमक्र
अपनेको केवल मती मनो कर्ता तात ॥ ८ ॥
बोलत छोडत लेत चख खोलत मूंदत वार।
इंद्रिय निज निज कर्ममें लगती इति चितधर ॥ ९ ॥

¶I MYSELF do naught—thus let
the Man made Whole think,—Essence-Know'r, 8
Seeing, hearing, touching, smelling,
eating, walking, breathing, sleeping,

Talking, letting go or grasping, 9
raising eyelids, yea,—or closing:
"This is but the play of senses
'mid their objects"—such His Surety.

८

योग-युक्त तत्त्वज्ञ मानता कुछ भी नहीं करूँ मैं आप।
लखना, सुनना, स्पर्श, सूँघना, खाना, जाना, जीना, स्वाप॥

९

कहना, तजना, और पकड़ना, पलक खोलना, करना बन्द।
इनमें यह जाने कि इन्द्रियाँ विषयोंमें वर्ते स्वच्छन्द॥

"I do not anything," should think the harmonised one, who knoweth the essence of things; seeing, hearing, touching, smelling, eating, moving, breathing, sleeping. (8)

Speaking, giving, grasping, opening and closing the eyes, he holdeth: "The senses move among the objects of the senses." (9)

(۸)

کھاتے چلتے سانس لیتے سوتے سُنتے دیکھتے
اپنی پلکیں بند کرتے یا کھُلی رکھتے ہوئے

(۹)

بولتے چھوتے پکڑتے چھوڑتے اور سونگھتے
بے اثر عارف ہے کُل افعال کی پاداش سے

¶ 8. " I nothing do " should be the thought,
Of the attuned who knows the Truth :
And whilst he hears, or sees, or smells,
Or touches, moves, or eats, or sleeps,

9. Or breathes, or speaks, or gives, or grasps,
Or opes, or shuts his eyelids twain,
This is his sure and certain thought
" The senses 'midst their objects move." [6]

۹و۸

اسرارِ نہاں سے ہے جو آگاہ — چلتا رہتا ہے جوگ کی راہ
انسان وہ صرف دید رہ کر — وقفِ گفت و شنید رہ کر
چھوتے ہوئے "بے شمار اشیا" — رکھتے ہوئے شغل سونگھنے کا
محوِ خور و نوش، گرمِ رفتار — لیتے ہوئے سانس، خفتہ، بیدار
وقفِ ترک و قبول ساماں — صرفِ بست و کشودِ مژگاں
فاعل سمجھے نہ خود کو زنہار — اس نکتہ سے رہے خبردار
مطلوب کی آرزو میں رہنا — مقصود کی جستجو میں رہنا
یہ کام فقط حواس کا ہے — اس میں نہیں خود وہ مبتلا ہے

कर्म करे चाहे लाख वह, फंसे कभी न हो लिप्त ।
ऐसा योगी सर्वथा, जग में रहे अलिप्त ॥१४॥
मैं करता कुछ भी नहीं, योगी रहा यही मान ।
सच्चाई जो जानता, ऋत सुयथार्थ ज्ञान ॥१५॥
छूता, सुनता, देखता, जाता, खाता, सूंघ ।
रहा सांस ले और सो, रहा जाग वा ऊंघ ॥१६॥
बोल रहा, रहा त्याग वा, अथवा रहा कर ग्रहण ।
आंख खोल रहा मींचवा, विषय सर्व रहा ग्रहण ॥१७॥
कर, आत्मा मानें सदा, इन्द्रिय सब रहीं भोग ।
अपने अपने विषयको, रहीं बर्त सभी भोग ॥१८॥

४४८

ब्रह्मण्याधायं कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति यः ॥ लिंप्यते नं सं पापेनं पद्मपत्रमिवांभसा ॥ १० ॥

दोहा–कर्मकरैतजिसंगको, सबको ब्रह्महिमानि ।
ताकोपापनलगतुहै, पद्मपत्रजलजानि ॥ १० ॥

जो शरीरमें याने शरीरस्थ इंद्रियनमें कर्मोंको धारणकरके याने कर्म करनेवाली इंद्रियां हैं ऐसे जानिके कर्मफलासक्तिको त्यागिके कर्म करता है सो पापकरके नहीं लिप्त होताहै, जलकरके कमलपत्रसरीखा ॥ १० ॥

जो नर मोह ममता तज देंदे
ब्रह्म अर्पण सब कर्म करेंदे
सो नर कमल फूल दी न्याईं
पाप दे भागी बणदे नांहीं । १० ।

۱۰ سب سونپ کے اپنے کام حق کو جو بشر
کرتا ہے چھوڑ کر تعلق یکسر
عصیاں سے وہ ہوتا نہیں یوں تردامن
جوں تر نہ ہووے کے آب میں نیلوفر

(१०)

कर्मफलासक्ती को तज कर, जान ब्रह्म के कर्म-प्रवीन;
जल के कमल पत्र सम वे नर, होते नहीं पाप में लीन ।

He who acteth, placing all actions in the ETERNAL, abandoning attachment, is unaffected by sin as a lotus leaf by the waters. (10)

(۱۰)
برگِ نیلوفر ہے سیلابِ گنہ میں وہ بشر
جو ادا کرتا ہے اپنا فرض خواہش چھوڑ کر

१०

संगरहित हो ब्रह्मार्पण कर जो कर्मोंको करता आप ।
जल ज्यों कमल-पत्रपर, वैसे लगता नहीं उसे कुछ पाप ॥

Whoso, His deeds in BRAHMA merged, 10
works on, all thought of gain renounced,
As lotus-leaf left dry when dew
rolls off,—is free from taint of sin.

۱۰ دھیان ایشور کا جو دل میں دھرے
کرم پھل کی آشا سبھی پر ہرے
کنول پھول کو جیسے جل کا نہ لیپ
کرم یوگی یوں پاپ سے نس ترے

दोहा–जानत जो इंद्रिँ [illegible] कर्म, करौं हौं नाहिं ।
कबहु कर्म भोगै न ने पापवारीके माहिं ॥ १० ॥

10. Who acts, but gives all acts to Brahm,
Who all attachments casts away;
He is by sin not touched at all,
As lotus leaf unwet by rain.

अर्पण कर भगवान्‌के, आसक्ति को त्याग।
कर्म करे जो सर्वदा, उसी का उत्तम त्याग ॥१९॥
ज्यों जल में भीगे नहीं, कमल, फूल वा पात।
ऐसा योगी पाप से, नहीं लिपटे, सुख गात ॥२०॥

10

انساں جو تمام کام اپنے ذاتِ مُطلق کو نذر کرکے
لاتا نہیں لب پہ اجر کا ذکر رکھتا نہیں کچھ مآل کی فکر
اس کو نہیں خوفِ بحرِ عصیاں تر اس میں نہیں ہے اس کا داماں
پتّہ نہیں جس طرح کنول کا رہ کر پانی میں بھیگ سکتا

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रि-
यैरपि ॥ योगिनः कर्म कुर्वंति संगं
त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥ ११ ॥

दोहा–देहबुद्धिमनइंद्रियनि, योगीहैनिस्संग ।
कर्मकरतअतिचायसों, चित्तशुद्धकेढंग ॥ ११ ॥

जो योगी हैं वे फलसंग त्यागिके आत्मशुद्धिकेलिये
याने आत्मगत प्राचीन कर्म बंधन छूटनेके वास्ते शरीर-
करके, मनकरके, बुद्धिकरके, केवल इंद्रियोंकेरकेभी कर्म
करते हैं ॥ ११ ॥

योगी मोह ममता छुड जाँहि
आतम शुद्धी वश्य लिन जाँहि
तन मन बुद्ध इन्द्रियाँ कारन
योगी सब करम काज सवारन । ११ ।

॥ تن سے اور من سے اور بدھی سے بھی
کرتے ہیں کام بے تعلق ہو کر
اور صرف حواسوں سے بھی سارے یوگی
حاصل ہو تا صفائے باطن پوری

11. With reason, body, and the mind,
E'en with the senses they possess,
The *Yogins*, unattached, do deeds
For thorough cleansing of the self.

Yogis, having abandoned attachment, perform action only by the body, by the mind,* by the Reason, † and even by the senses, for the purification of the self. (11)

(11)
عارفِ آزاد بھی اپنے گداز کے لیے
کام لیتا ہے دل و عقل و حواس و جسم سے

११

कायासे, मन और बुद्धिसे केवल इन्द्रियसे भी पार्थ ! ।
संग छोड़कर योगी-जन यों करते कर्म आत्मशोधार्थ ॥

11

With body, mind—yea, Spirit, too—
with senses, even held aloof,
Y ó g i s still act, all gain renounced,
to make their Nature wholly pure.

दोहा—वपुसों मनसों बुद्धिसों इंद्रेयसों हतराग ।
कर्म करैं मनशुद्धिहित फलइच्छाको त्याग ॥ ११ ॥

११
जो भजते जिस भाँति मुझे हैं फल दूँ उनको उसी प्रकार।
मेरे ही उस एक मार्गसे मानव सारे होते पार॥

۱۱ یہ یوگی تو من کی صفائی کے کارن
کرم پھل کو تیاگیں بھلائی کے کارن
بدن سے و من سے عقل اندریں سے
کرم کرتے ہیں نا برائی کے کارن

(११)
इन्द्रिय, मन, शरीर, बुद्धि से, देते छोड़ ममत्व तथैव;
कर्म-सङ्ग तज करें कार्य्य वे, आत्म शुद्धि के लिए सदैव।

۱۱
فاعل نہیں خود کو جو سمجھتے
اس پھیر میں جو نہیں الجھتے
لیتے ہیں وہ مرد نیک انجام
دل، عقل، حواس، جسم سے کام
جس سے پیدا ہو بے ریائی
حاصل ہو بطون کی صفائی
مصروفِ طریقِ ترک کامل
کرتے نہیں خود کو اس میں شامل

इन्द्रियोंसे ही, देह से, बुद्धि या मन से।
आसक्ति को छोडकर, योगी कर्म करे॥२१॥
आत्मा करने पवित्रही, योगयुक्तही कर्म।
करते योगी सर्वदा, मान योगही धर्म॥२२॥

६५२

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शांतिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ॥ अयुक्तः कामकारेण फलेसक्तो निबध्यते ॥ १२ ॥

दोहा--ज्ञानीहूँमुक्तहिलहै, कर्मकरैफलछाँडि ।
पुष्पफलनकीआशकारि,बाँधिकामनाआँडि॥ १२॥

युक्त याने आत्मज्ञानयोगयुक्तपुरुष कर्मफलको त्यागिके ईश्वरनिष्ठ शांतिको प्राप्तहोताहै जो आत्मज्ञानयोगरहितहै सो यथेष्टकरणकरके फलविषे आसक्तभया ऐसा जो जीव सो बंद्धहोय ॥ १२ ॥

योगी फल इच्छा छड जांदा
तद ओह परम शांती पांदा
कामी कर्म फलां नूं चाहदे
कर्म बंधनां विच फस जावे । १२ ।

۱۲۔ یوگی کو ہے شانتی دوامی ملتی اور بیکہ ہنس چاہ کرم کے پھل کی

باندھا جاتا ہے جل میں ہنس کروہ شخص -
[illegible]

12. Renouncing "fruits," the man attuned
Attains to everlasting Peace;
The unattuned by lust led on
Attached to "fruits" live firmly bound.

(۱۲)

بے طمع عارف کو حاصل ہے سکونِ دائمی
پاؤں میں جاہل کے پڑتی ہے طمع کی بیڑی

१२

जो है युक्त, कर्म-फल तज वह पूर्ण शान्तिको पाता भक्त ।
जो अयुक्त है बँध जाता वह, कर्म-फलोंमें हो आसक्त ॥

12

The Man made Whole, all 'gain' forsworn,
inherits PEACE that naught can mar:
The soul un-whole, that dreams of 'gain',—
its wish the bird-lime—traps itself.

दोहा—फल तज कर्म निबाहके स्वदर्शनसुख पात ।
फल इच्छासों कर्म कर पुनि पुनि भवमें आत ॥ १२ ॥

१२

कर्म-सिद्धिकी इच्छा करके देव-अर्चना करते लोग ।
क्योंकि यहाँपर जल्दी मिलते उनको कर्म-सिद्धिके भोग ॥

The harmonised man, having abandoned the fruit of action, attaineth to the eternal Peace; the non-harmonised, impelled by desire, attached to fruit are bound. (12)

(१२)

कर्म फलों को प्रभु अर्पण कर, प्रभु-पद पाते, पाकर शांति;
और सकामी नर को ग्रसती, कर्म कामनाओं की भ्रांति ।

۱۲ جو یوگی کرم پھل کو ہے تیاگت

جلد شانتی پد کو ہے پاوتا
کرے کرم جو پھل کے لالچ میں آ
وہ ہے آپنا آپ بندھاوتا

फल का छोड विचार वे, पाते शान्ति नित्य ।
बन्ध जाते फलमें फंसे, रहित योग ही नित्य ॥२३॥
विषयवासना, कर्म की, ही इच्छा करे बद्ध ।
नहीं टिके हुए चित्त के, मनुजों को ही सुबद्ध ॥२४॥

۱۲

بے لوث عمل ہے جس کا مشرب — جس کو نہیں کچھ صلے سے مطلب
ذات برتر میں ہو کے واصل — کرتا ہے مزا سکوں کا حاصل
لیکن جو ہوس زدہ ہے انساں — ہے ثمرہ کی طلب میں حیراں
ہو جاتا ہے خود بخود وہ ناچار — افعال کی قید میں گرفتار

इस नगरी दे नौं दरवाजे
आत्मा तिस विच्च सुखी विराजे
मन थों कर्म त्याग दिखलावे
न कुझ करे न ही करवावे । १३ ।

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी ॥ नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥ १३ ॥

दोहा—मनकरिकर्मनिजेतजत, ज्ञानीतिनकोमानि
नवद्वारपुरमेंबसत, लेतसुखनकीखानि ॥ १३ ॥

वशी याने जिसका चित्तवशहै ऐसा देही देहधारि- जीव सो नवद्वारका पुर जो देह तिसमें मनसे कर्मोंको स्थापितकरके न करता न करताभयाँ सुखेजैसे होय तैसे ही रहता है ॥ १३ ॥

۱۳۔ شہر تن میں ہیں جسکے نو دروازے
رہتا ہے قدیر آتما ہم سب کے
سارے کاموں کو ترک من سے کر کے
کرتا ہے نہ کچھ کراتا ہے وہ ہم سے

13. Self-ruled, all actions mind-controlled,
Th' embodied Lord serenely dwells
Within His own nine-gated town[7]
Nor doing deeds, nor prompting them.

(۱۳)

روحِ انسان بے تعلق ہو کے سب افعال سے
ساکن ایسے شہر میں ہے نو ہیں جس کے راستے

Mentally renouncing all actions, the sovereign dweller iu the body resteth serenely in the nine-gated city,* neither acting nor causing to act. (13)

१३

मनसे तजकर कर्म जितेन्द्रिय देहवान मानुष, हे वीर ! ।
बिना किये करवाये बसता नवद्वार-पुरमें वह धीर ॥

13

All actions mind-renounced [while done],
the Master-Soul reclines at ease
Within His City of Nine Gates,
nor doing act, nor prompting deed.

दोहा—नवद्वार यह देह ही करै कर्मको तात ।
...स निश्चयसों कर्मकर जीव सदा सुख पात ॥ १३ ॥

१३

चारों वर्ण रचे मैंने गुण-कर्म भेदसे हे मतिमान ।
मुझ इनके कर्त्ताको भी अविनाशी अक्रिय ही तू जान ॥

---

۱۳ - ہے من جس کے وش میں وہی سورما
کرم پھل کی آشا کو دیوے بھگا
یہ نو دوار کا جو نگر ہے شریر
رہے اس میں آنند سے پھر سدا

(१३).

सब कर्मों को मन से तजकर, यही मानते वे मतिधाम:
नव-द्वारों के देह-ग्राम में, होते स्वतः सभी हैं काम ।

۱۳

جس کا قبضہ حواس پر ہے — تارک فعلوں سے جو بشر ہے
اپنا دل ہے نہ ان میں دیتا — ہے کام نہ دوسروں سے لیتا
نو دروازہ ہیں جس مکاں میں — یعنی اس جلوہ گاہ جاں میں
سرمستِ مئے وصالِ بالذّات — رہتا ہے بڑے مزے سے دن رات

त्याग कर्म मन से सभी, योगी आत्मा विराज ।
नौ दर वाली पुरी में, सुख से सजाता साज ॥२५॥

कुछ करवाता न तभी, करता भी कुछ न ।
देहधारी का आत्मा, योग धरे चित्त मांह ॥२६॥

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ॥ न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्त्तते ॥ १४ ॥

दोहा–ईश्वरनहिंकर्मनिकरत, नहिंकर्मनिकरतार ।
कर्मफलनिहूँनहिंकरत, प्रकृतिकरतविस्तार॥१४॥

प्रभु याने अविनाशी आत्मा लोके जो देवादिकशरीर तिसका न कर्त्तापन न कर्म न कर्मफलकेसंयोगको सिरजेताहै क्योंकि, यह स्वभावे याने अनादिकालप्रकृतिसंसर्गकी वासना प्रवृत्त है ॥ १४ ॥

माया मोह विच्च मन है मचदा
कर्त्तापन ईश्वर नहीं रचदा
कर्म नूं वी प्रभ रचदा नांहीं
न जोड़े प्रभ फल संग तांईं

माया दे स्वभाव थों अर्जुन
कर्म, कर्तृ, ते संग उपजण । १४ ।

۱۴۔ فاعل اور عمل اس زمانے کے تمام
ایشور کی طرف سے نہ سمجھنا ہر گز
اور ثمرۂ فعل سے تعلق کا نظام
فطرت یعنی سبھاؤ کے ہیں یہ کام

14. The Lord doth not in this our world
Do deeds, nor prompts He men to act,
He links not action with its fruit;
These are indeed by Nature wrought.[8]

(۱۴)
فاعلیت فعل اور اُنکے نتائج کا صدور
جلوۂ قدرت ہے قادر سے نہیں اُنکا ظہور

(14) The Lord of the world produceth not the idea of agency, nor actions, nor the union together of action and its fruit; nature, however, manifesteth.

१४

लोगोंके कर्तृत्व, कर्म फिर कर्मों और फलोंका मेल ।
ईश्वर रचता नहीं, प्रकृतिके ये होते हैं सारे खेल ॥

14
The World's O'erlord does not put forth
the notion 'I do this', nor deeds,
Nor yet the chain of deed and gain:
His Nature works, [and all proceeds].

दोहा--कर्मकर्तृता कर्मफल जीवहेतु इन नाहिं ।
हेतु अनादी वासना कर्म कराय सदा हिं ॥ १४ ॥

१४

कर्म न बाँधे मुझे, न मेरी इच्छा कर्मफलोंमें युक्त ।
जो मुझको इस भाँति जान ले वह कर्मोंसे होता मुक्त ॥

۱۴- اناوی سبھا سے جگت یہ چلا
اسی طرح اس کا بڑھا سلسلہ
پربھو کرم کو پیدا کرتا نہیں
غرض نا رکھے کرتا پن میں بھلا

---

(१४)

ईश्वर नहीं कर्म को करता, कर्म नहीं करता करतार;
प्रकृति स्वयम् कर्मों को करती, उस ही का है सब विस्तार।

परमात्मा रचता नहीं, कर्तापन न ही कर्म।
कर्म से फल का मेल वा, निजी भाव से धर्म ॥२७॥
होता उदय स्वयमेवही, प्रकृति ही से कर्म।
ईश्वर जग का रचे न, न ही रचावे कर्म ॥२८॥

۱۴

جو ہے سارے جہان کا مالک
ہے گلشن فعل کا نہ مالی
کرتا ہے نہ خلق ثمرۂ فعل
جاری ازخود یہ سلسلہ ہے

جو ہے کون و مکاں کا مالک
فاعل کی بنا نہ اس نے ڈالی
ہے وہ دور از نتیجۂ فعل
اک یہ فطرت کا معجزہ ہے

६५८

५/९५

नाद्त्ते कस्यचित्पापं न चैवं सुकृतं विभुः ॥ अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यंति जंतवः ॥ १५ ॥

दोहा—सुकृतिनकाहूकोगहै, औरपापनहिंलेय ।
ढाँप्योज्ञानअज्ञानतै, मोहूँनप्रगटनदेय ॥ १५ ॥

जैसे कि, कर्तृत्व और कर्मोंको नहींउत्पन्न करताहै इसीसे यह जीवात्मा किसीशरीरसंबंधी पापकोभी नहीं ग्रहणकरता है और सुकृतकोभी नहींग्रहणकरता है क्योंकि जिनका ज्ञान अज्ञानकरके ढकरहाहै उसकेरके वे जीव मोहकोप्राप्तहोते हैं याने अज्ञानकरके देहादिकमें आसक्ति और उससे दुःख होताहै ॥ १५ ॥

6

पाप करे कोई पुण्य कमावे
पाप पुण्य प्रभु न अपनावे
विच अज्ञान ज्ञान छुप जांदा
जीव इससे गया विच भरमांदा । १५ ।

۱۵- دنیا میں کسی کے نیک و بد کاموں کی
ہے ذات بسیط کو نہ کچھ لوث کبھی
اگیان نے گیان کو ڈھکا ہے از بس
اس واسطے مخلوق ہے غفلت میں پڑی

15. The Lord accepteth not the deeds
Nor good, nor ill of any man:
By ignorance is wisdom cloaked,
'Tis this which all men doth delude.

१५

ईश न लेता पुण्य किसीका नहीं किसीका लेता पाप ।
है पर्दा अज्ञान ज्ञानपर जिससे मोहित प्राणी आप ॥

(۱۵)
نیک و بد اوصاف سے کچھ روح انسانی کو
جہل پردہ دار ہے عقل پر انسان کی

15

Man's inmost LORD incurs no taint
of either 'sin' or 'merit' won:
True SELFHOOD lies 'neath nescience hid:
't is *this* that makes all creatures err.

दोहा—कोइके सुखदुःखको जीव बिगाडै नाहिं ।
ज्ञान दुप्यो अज्ञानसों तासों मोह महाहिं ॥ १९ ॥

१५

यही जानकर मुमुक्षुओंने पहिले कर्म किया था पार्थ ।
इस कारण कर तू वह पहिले पूर्वज-कृत ही कर्म यथार्थ ॥

The Lord accepteth neither the evil-doing nor
yet the well-doing of any. Wisdom is enveloped
by unwisdom; therewith mortals are deluded. (15)

---

(१५)

नहीं किसी के पाप पुण्य को, विभु लेते हैं कुंती पुत्र ! ;
है अज्ञान आवरण इस से, धोखा खाते नर सर्वत्र ।

۱۵- کسی پاپ کو وہ تو لیتا نہیں
کسی پُن کو وہ اپنا کہتا نہیں
رِنج اگیان سے گیان جس کا چھپا
اِسی سے کوئی تتو دیتا نہیں

व्यापक ईश न ले कभी, पुराय किसी का पाप ।
ज्ञान ढका अज्ञानसे, प्राणि अतः करें पाप ॥२९॥
मोह में फंस कर सर्वथा, अज्ञानवश जीव ।
बिन जानेही सर्वदा, फंसें कर्म में जीव ॥३०॥

15

ذاتِ مُطلق عیاں ہے سب میں — پیدا اس کا نشاں ہے سب میں
اس کو نہیں کچھ ثواب سے کام — اس کو نہیں کچھ عذاب سے کام
عرفان کی روشنی پر ایسا — ظُلمت کا پڑا ہوا ہے پردا
جس سے دُنیا کے سارے جاندار — ہیں دام میں جہل کے گرفتار

आतम ज्ञान है कारण अर्जुन
सब अज्ञान नाश हो जावय
ज्ञान रूप सूरज वह जांदा
ज्ञानी तब प्रभ दरशय पांदा । १६ ।

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः ॥ तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥ १६ ॥

दोहा—दूरिकियेअज्ञानजिनि, हियेज्ञानप्रकटाय ।
देखत्तईशस्वरूपते, ज्ञानसूरकेदाय ॥ १६ ॥

जिनका आत्मसंबंधी ज्ञानकरके वह अज्ञान नष्ट भयाहै उनका वह श्रेष्ठ ज्ञान सूर्यसदृश प्रकाशकरताहै याने वे संसारदुःखरहित मुक्तहैं ॥ १६ ॥

(१६)
आतम ज्ञान से जिन के उर का, पार्थ ! हुआ अज्ञान विनष्ट;
पुरुष-श्रेष्ठ वे ही पाते हैं, प्रभु-तेजोमय-रूप प्रकृष्ट ।

۱۶- ہاں اگر تم گیان سے سب اگیان اپنا جن لوگوں نے سعی کرکے ہے دور کیا

مہر روشن کیطرح سے اُن کا گیان کرتا ہے برہم پر کو منوّر اس جا

P. 16. But as for those whose ignorance,
By wisdom of the Self's dispelled;
This wisdom like the noonday sun
Revealeth the Supreme to them.

(۱۶)
دُور ہو جاتا ہے جب ناواقفیت کا حجاب
علمِ باطن روشنی دیتا ہے مثلِ آفتاب

१६
जिनका आत्मज्ञानके द्वारा मिट जाता है सब अज्ञान ।
कर देता है ज्ञान उन्हींका तत्त्व प्रकाशित सूर्य समान ॥

16
Now, as to Those in whom Knowledge
has scattered this nescience of SELF,
Sunlike, *in Them* It discloses
that PRESENCE transcendent, revealed.

(16)
Verily, in whom unwisdom is destroyed by the wisdom of the SELF, in them, wisdom, shining as the sun, reveals the Supreme.

दोहा—ज्ञानसाध जिन आपनो नष्ट किओ अज्ञान ।
रविसम करै प्रकाश वह स्वाभाविक तिन ज्ञान ॥ १६ ॥

इसमें कवि भी भ्रम-वश होते कौन कर्म है, कौन अकर्म।
कहूँ कर्म वह, जिसे जान तू पाप-मुक्त हो, पावे शर्म॥

۱۷- مٹا گیان سے جس کا اگیان ہے
جنہیں راستی کا ہوا بھان ہے

اندھیرے میں ہو جیسے سورج چڑھا
اسی طور وہ دیکھے بھگوان ہے

विद्याद्वारा नाश जिस, अपनी अविद्या की।
सूर्यसमान ही ज्ञान उस, के ने ज्योतिः दी॥३१॥
परमात्मा हुआ स्पष्ट तब, हुआ दिव्य चमकार।
ज्ञान सूर्य से प्राकृतिक, हुआ दूर अन्धकार॥३२॥

۱٦

مقصود حقیقی دو عالم   معبود حقیقی دو عالم
قایم دایم سرورِ مُطلق   اصل کونین نورِ مُطلق
ہوتا ہے عیاں ضرور ان پر   حق بینی ہے جنہیں میسّر
جن کے باطن کی تیرگی کا   عرفاں سے ہے چاک چاک پردا

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परा-
यणाः ॥ गच्छंत्यपुनरावृत्तिं ज्ञान-
निर्धूतकल्मषाः ॥ १७ ॥

दोहा-जेमनकोअरुबुद्धिको, राखतईश्वरमाँह ।
जन्ममरणतिनकोनहीं, मुक्तिहोतनरनाँह ॥१७॥

उस आत्मज्ञानहीमें है बुद्धिजिनकी उसीमेंहै मन-जिनको उसीमेंहै निष्ठा जिनकी और वहीहै श्रेष्ठस्थान जिनका इस तरहसे ज्ञानकरके नष्टभयेहैं मनके विकार-जिनके वे पुरुष मुक्तिको पावते हैं ॥ १७ ॥

प्रभ दी चरणीं ध्यान लगा के
प्रभ विच्च अपणा आप रमा के
प्रभ दी भक्ति विच्च थिर होके
ज्ञान नाल पापां नूं धोके
ज्ञानी मोक्ष धाम नूं पावण
जिस थां जाके मुड़ न आवण । १७ ।

۱۷۔ حق کا ہی دھیان محویت اسی میں مدام
اس کا ہی سہارا اور اسی میں ہی قیام
یوں گیان سے دھوئے گئے جنکے پاپ
انکو نہیں بازگشت اے نیک انجام

17. Thinking of Him, yea, merged in Him,
Intent on Him, with Him for goal,
They go from whence they come not back,
Their sins by wisdom all dispelled.

(۱۷)
پردۂ غفلت ہٹا کر اہلِ تسلیم و رضا
عالمِ فانی میں کر لیتے ہیں دیدارِ بقا

१७
उसमें लगा बुद्धि आत्माको हो तन्निष्ठ तथा तत्पर ।
निष्कल्मष होकर विवेकसे जन्म न लेते फिर वे नर ॥

17
No other Will, no other Self,
no other Ground, no other Goal,—
They 'go' whence no 'return' can be :
all stain in KNOWLEDGE melts away.

दोहा—स्थिरता बुद्धी चित्त जो आत्मज्ञानमें लाय ।
मोक्षयोग्य निजरूपको पापरहित वह पाय ॥ १७ ॥

१७

ज्ञान कर्मका कर, विकर्मका भी तू परिचय जान यथार्थ।
फिर अकर्म भी जान पूर्ण तू, गहन कर्मकी गति है पार्थ! ॥

Thinking on THAT, merged in THAT, established in THAT, solely devoted to THAT, they go whence there is no return, their sins dispelled by wisdom. (17)

(१७)

बुद्धि और मन से प्रभुवर में, रहते जो संलग्न सयुक्ति;
जन्म-मरण तज कर वे ही नर, पाते हैं अवश्य ही मुक्ति।

۱۷۔ عقل صاف جن کی و نرمل ہے من
سچے گیان کی جن کو لاگی لگن
نہیں پاپ کی لیش باقی ذرا
پرم سکھ میں گیانی وہ ہووے مگن

आश्रित उसी परेश के, उसी में श्रद्धाधार।
उस में बुद्धि प्रविष्टकर, आत्मा उसे निज धार ॥३३
ज्ञान से धो निज पाप सब, पायें मोक्ष शुभसार।
जिस से नहीं फिर लौटते, सदा बने सुखसार ॥३४॥

۱۷

عقل و ادراک جن کی در اصل
اُس غایت دو جہاں میں ہے وصل
جن کے دل میں اسی کا ہے نور
جن کا باطن ہے اس سے معمور
دیتے ہیں جو اس کی چاہ میں دل
جن کو اس کا ہے عشق کامل
دھو جاتی ہے ان کی گرد عصیاں
ملتا ہے انہیں سرور عرفاں

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि ह-
स्तिनि ॥ शुनि चैव श्वपाके च पं-
डिताः समदर्शिनः ॥ १८ ॥

दोहा--विद्याविनयलियेजुद्विज, गोगजश्वपचौश्वान ।
ज्ञानीइनकोसमगनत, भेदलेतनहिंमान ॥ १८ ॥

विद्या और विनययुक्त ब्राह्मणमें, गऊमें हाथीमें और कुत्तेमें और चांडालमें भी पंडितजन समदर्शी होते हैं याने आत्माको आपसदृश जानते हैं ॥ १८ ॥

ज्ञानी पंडित तब पछानया
सब जीवां नूं इक सम जानया
शूद्र, गौ, विप्र, विद्वान
कुत्ता, हाथी, एक समान । १८ ।

۱۸۔ دانا ہیں وہی کہ جن کی ہو ایک نظر
ہو برہمن علم اور ادب سے معمور
دیکھیں جس جس طرف نظر وہ بھر کر
یا گاؤ و فیل و سگ ہو یا ہو کنجر

18. A humble-minded Brāhmaṇ wise,
An elephant, a cow, a dog,
Yea, e'en the lowest outcaste, know,
Are to the sages all the same.

(۱۸)

فیل، کُتا، گائے، چنڈال اور فاضل برہمن
مختلف اجسام میں اِک نورِ جاں ہے ضوفگن

१८

विद्या और विनययुत ब्राह्मण, धेनु और हाथी बलवान ।
कुक्कुर तथा श्वपच इन सबको देखें पंडित लोग समान ॥

¶In Brâhman wise . . . and humble, too, 18
in cow and lordly elephant,
In dog and dog's-flesh-eater both,
the Wisdom-Eyed perceive the SAME.

दोहा—ब्राह्मण पंडित हस्ति गौ कूकर भंगी देह ।
इन सममें इकरूपही लखै जीवको एह (ज्ञानी) ॥ १८ ॥

१८

जो अकर्ममें कर्म देखता और कर्ममें लखे अकर्म ।
सबमें ज्ञानी, युक्त, वही नर करनेवाला है सब कर्म ॥

Sages look equally on a Brahmana adorned with learning and humility, a cow, an elephant, and even a dog and an outcaste.* (18)

(१८)

विनयी विद्यावान विप्र या, गऊ, गज, श्वान, और चण्डाल:
सब को समता ही से देखें, वे ज्ञानी जन हैं नरपाल !

۱۸- ہو وِدوان برہمن کہ شریں مقال
و گج - گئو و کُتا وگر ہو چنڈال
نظر پنڈتوں کی رہے ایک سی
سبھوں کو یہ جانے ہے اپنی مثال

कुत्ते, हाथी, गौ: में, चाण्डालमें भी ।
ज्ञानी, नम्र सुभक्तवर, ब्राह्मण में इक ही ॥३५॥
पाते पण्डित आत्मा, देख उसी को सार ।
घृणा प्रेम करते नहीं, रहते हैं इक तार ॥३६॥
मन से समझते सभी को, पण्डित एक समान ।
आदर प्रेम से वर्तते, सभी से एक समान ॥३७॥

۱۸

پابندِ اصولِ بردباری — تصویرِ کمالِ انکساری
پوشاک سے علم کی مزیّن — انساں کوئی خواہ ہو برہمن
یا کوئی بشر ہو زشت اعمال — جس کو کہتے ہیں لوگ چنڈال
ہاتھی ہو، گائے، ہو کُتّا — سب ہیں یکساں بچشمِ بینا

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ॥ निर्दोषं हि समं ब्रह्म

तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥ १९ ॥

दोहा—समताप्रजिनकेहीयमें, तिनजीत्योसंसार ।
समताब्रह्माकोकहत, ब्रह्मलीननिरधार ॥ १९ ॥

जिनका मन ऐसी समतामें स्थित है उन्होंने इहांही संसार जीता है, जिसवास्ते कि, ब्रह्म निर्दोष सर्वत्र समानहै तिसासे वे ब्रह्मप्राप्तिनिमित्त स्थितहैं ॥१९॥

मन इक सम इक थां जो लांदे
एथे इ जनम मरन जित्त जांदे
ब्रह्म इक सम निर्दोश कहांदा
ज्ञानी ब्रह्म विच थिर हो जांदा । १६ ।

۱۹۔ یکسانیت میں جن کا ہے دھیان لگا — دنیا کو انہوں نے یہیں جیت لیا
بے عیب ہے برہم سبکہ اور یکساں ہے — ٹھہرا ہے نہ ہو برہم میں کیونکر ان کا

19. All things,[9] e'en here are overcome
By those whose minds are balanced well;
Balanced is Brahm, and with no stains,
Therefore at rest are they in Brahm.

१९

जिनने रखा साम्यमें मनको उनने जीत लिया संसार ।
सम निर्दोष ब्रह्म है, इससे, मिलता उन्हें ब्रह्म-आधार ॥

The Men whose Mind in SAMENESS dwells 19
transcend Creation here and now:-
Taint-free is BRAHM, and e'er the SAME,
therefore at Rest in BRAHM are they.

दोहा—सकल जीवको एकसम जानैं तिन भव नाहिं ।
ब्रह्मनिष्ठ हैं वे सदा, जीवरूप इकसाहिं ॥ १९ ॥

۱۹- جنہوں نے پا لیا من کو اس طور جیت
[illegible]
برہمن میں بھی قائم ہیں وہ نروش ہیں
[illegible]

काम-वासना-विरहित होते जिस नरके सारे उद्योग ।
ज्ञान-अग्निसे कर्म जले हों उसको बुध कहते बुध-लोग ॥

(۱۹)

اہلِ استغنا کو عالم پر حکومت ہے نصیب
بے ہمہ و با ہمہ شاہد کی قربت ہے نصیب

Even here on earth everything is overcome by those whose mind † remains balanced; the ETERNAL is incorruptible and balanced; therefore they are established in the ETERNAL. (19)

(१९)

जिन का मन समत्व भाव में, होता इस प्रकार है लीन,
विश्व जीत कर भव बन्धन से, होते वे ही मुक्त प्रवीन ।

19

رکھتے ہیں جو مسلکِ مساوات
آزاد بغیرِ ترکِ قالب
ذاتِ مطلق ہے چونکہ بے عیب
رہتے ہیں اسی میں وصل دایم

ہے دل سے جنہیں پسند یہ بات
آجاتے ہیں دہر پر وہ غالب
یکساں ہر حال میں ہے لاریب
جو ہیں یکسانیت میں قایم

समता में मन जस टिका, यहीं उन्हों ने जीत ।
लिया सकल संसार ही, जन्म लिया उन जीत ॥३८॥
परमात्मा इक रूप है, पापरहित सम भाव ।
इसी लिये वे ब्रह्म में, टिके हैं, जो समभाव ॥३९॥

६६८

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् ॥ स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः ॥ २० ॥

दोहा—सुखपायेहरषैनहीं, दुखपायेनरिसाय।
राखैथिरनिजबुद्धिको, ब्रह्महिरहैसमाय ॥ २० ॥

प्रिय वस्तुको पायके हर्षना नहीं और अप्रियको पायके व्याकुल नहोनां, ऐसा स्थिरबुद्धि, विचारशील ब्रह्मकाज्ञाता ब्रह्मप्राप्तिनिमित्त स्थितहै ॥ २० ॥

ब्रह्म विदे जो लीन है ज्ञानी
मोह विच भुल्या नहीं जो प्राणी
सुख पाके खुश होंदा नांहीं
दुख आवे ते रोंदा नांहीं । २० ।

۲۰۔ جو برہم کو پہنچا برہم گیانی ہو کر
اچھی شے پا کے وہ نہیں ہوتا خوش
قائم ہوئی عقل جہل چھوٹی یکسر
اور ناخوش بھی نہیں بری شے ہو اگر

20. Who's undeluded, firm in mind,
Who knoweth Brahm and rests in Brahm,
Is not elated nor depressed
When joy or woe befalls[10] to him.

(۲۰)
صابر و روشندل عارف ہو کے واصل ذات میں
بے اثر رہتا ہے آرام اور تکلیفات میں

२०

पा प्रिय वस्तु न हर्षित हो जो अप्रियको पा सुखसे हीन ।
स्थिर-मति, ब्रह्म-विज्ञ, निर्मोही वही ब्रह्ममें होता लीन ॥

Nor swayed by joy when glad things come, 20
nor losing heart when woe betides,
Such is the Rock-Willed BRAHMA-Know'r,
delusion-free, at Rest in BRAHM.

दोहा--अप्रियसों दुखि होय ना, प्रियसों ना सुखि होय ।
स्थिरमति मोहविहीन जो लखै जीव सम सोय ॥ २० ॥

२०

तज आसक्ति कर्मफलकी जो नित्य निराश्रय, तृप्त महान ।
मग्न हुआ भी वह कर्मोंमें कर्म नहीं कुछ करे सुजान ॥

With Reason ‡ firm, unperplexed, the knower of the ETERNAL, established in the ETERNAL, neither rejoiceth on obtaining what is pleasant, nor sorroweth on obtaining what is unpleasant. (20)

(२०)

हर्षित प्रिय से दुखित अप्रिय से, नहीं कभी हो, राग विराग;
मिलै ब्रह्म में ब्रह्म वेत्ता, थिर बुधि से सब संशय त्याग ।

۲۰- ملی پیاری وستو نہیں پھولتے
نہ غم اور چنتا پرتی کول تے
گیانی سدا رکھتے عقل سلیم
وہ پرماتما کو نہیں بھولتے

अत: मनुज घबराये न, बेप्यारा कर प्राप्त ।
न प्रसन्न होवे अती, प्यारा हो यदि प्राप्त ॥४०॥
परमात्मा को जानता, रहा ब्रह्म में टिक ।
बुद्धि रखकर ठीक ही, मोहरहित सुस्थिर ॥४१॥

۲۰

ہو کیسی ہی کوئی چیز مرغوب
رہتے ہیں اثر سے اس کے آزاد
جو چیز نہیں قبولِ خاطر
ثابت ادراک، وہم سے دور

کتنی ہی نگاہ میں ہو معیوب
ہوتے نہیں اس کو پا کے بھی شاد
رہتے ہیں اسے بھی پا کے شاکر
دایم ہیں وصالِ حق سے مسرور

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विंदत्यात्मनि यत्सुखम् ॥ स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षय्यमश्नुते ॥ २१ ॥

दोहा-बाहरकेसुखकोतजै, हियसुखरहैजुजानि ।
ब्रह्मविषेचितकोधरत, लेहिजुआनँदमानि ॥ २१॥

जो शब्दादिक विषयोंमें अनासक्त भया हुआ जो आत्मामें सुखको पावताहै सो ब्रह्मप्राप्ति उपाय चित्त-वाला पुरुष अक्षय सुखको पावेता है याने मोक्ष पाताहै॥

विषय भोग थों जो मन मोड़न
आत्मा दे विच जो सुख लोड़न
सो नर ब्रह्म नाल जुड़ जांदे
सदा ही सो नर आनंद पांदे । २१ ।

۲۱ لذّاتِ خارجی سے گر دل ہے جدا — ملتا باطن میں آتما کا ہے مزا
اور یوگ سے ہو کے آتما میں واصل — سُکھ گیانی کو ہے لایزالی ملتا

21. To outer contacts unattached,[11]
He finds the joy that's in the Self,
Whose self by *Yog* is merged in Brahm
Attains to everlasting joy.

(۲۱)
ماسوا کو چھوڑ کر جس کو لگن ہے ذات کی
علمِ عرفاں میں اُسے ملتی ہے لافانی خوشی

२१

विषय-भोगमें अनासक्तको आत्मामें जो सुख हो प्राप्त ।
वैसा ब्रह्म-योगयुत मानव पाता अक्षय सुख पर्याप्त ॥

21

O'er Him all outer contacts glide;
His mind is whole, at-One in BRAHM;
He quaffs the Wine of deathless JOY
upwelling from the SELF within.

दोहा--विषयभोगसों रोक मन जो आतमसुख पाय ।
ब्रह्मज्ञान अभ्यासकर परमधाम सो जाय ॥ २१ ॥

२१

आशारहित, सु-संयत मानस, तजकर सर्वपरिग्रह आप ।
केवल शारीरिक कर्मोंको करता, उसे न होता पाप ॥

He, whose self is unattached to external contacts and findeth joy in the SELF, having the self harmonised with the ETERNAL by yoga, enjoys imperishable bliss. (21)

(२१)

सब-भोगों का त्यागी पाता, भगवत्-ध्यान-जनित-सुख-कन्द;
ब्रह्मलीन हो जाता फिर वह, अनुभव कर अक्षय-आनन्द ।

۲۱- جنہیں جھوٹے سکھ کی تو پرواہ نہیں
کسی کی (بغیر آتما) چاہ نہیں
وہ پاتے سدا ہیں خوشی لازوال
بِنا بھگتی کے دوسری راہ نہیں

बाहर के न विषयमें, फंस कर आत्मा पा ।
लेता जो सुख आप में, सके कबहुं न बता ॥४२॥
परमात्मा से मेल के, सुख अनन्त से युक्त ।
हुआ वह आनन्द भोगतात्, नाशरहित ब्रह्मयुक्त ॥४३॥

۲۱

جو طالبِ دو جہاں نہیں ہے
مسرور ہے کیفِ باطنی سے
ذاتِ مطلق میں ہو کے داخل
بن کر تصویرِ سیر کامی

لذّت کش این و آں نہیں ہے
مخمور ہے کیفِ باطنی سے
معراجِ عمل یہ کر کے حاصل
پاتا ہے مسرت دوامی

६६२

५/२२

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते ॥ आद्यंतवंतः कौंतेय न तेषु रमते बुधः ॥ २२ ॥

दोहा--विषयतजैसंसारके, ते हैं दुखकोमूल ।
उपजतविनशतहैंतिन्हें, पंडितगहैनभूल ॥ २२ ॥

हे कुंतीपुत्र ! जे शब्दस्पर्शादिक भोगहैं वे दुःखके कारण आद्यंतवंत याने होते जाते रहते हैं अर्थात् अल्प-सुख हैं इस निश्चयसे उनमें पंडितजन नहीं रमते हैं २२

जो सुख विशय भोग थों लभ दे
दुख दलिद्दर मूल ने सभ दे
एह सुख नाशवान तूं जाणी
इस नूं सुख न समझन ज्ञानी । २२ ।

۲۲ - جو سکھ کہ حواس سے ہیں پیدا ہوتے
آغاز ہے اُن کا اور ارجن انجام
پیدا ہی دکھ بھی کرتے رہتے ہیں اُن سے
سامان خوشی نہیں یہ داناؤں کے

22. For all delights of contact born
Are verily the wombs of pain;
As surely as they're born they die,
Hence wise men find in them no joy.

२२

बाह्य-वस्तु-संयोग, भोग हैं दुखके कारण सभी यथार्थ ।
ये होते मिटते रहते हैं इनमें फँसे न बुधजन, पार्थ ! ॥

All pleasures contact-born are Wombs 22
where future pain in secret grows;
As sure as they begin, they end :—
not *there* does He that wakes seek JOY.

दोहा--विषयभोग दुःखहेतु हैं तथा विनाशी तात ।
तिन विषयन हरिभक्त ना हिय कबहूं ह लगात ॥ २२ ॥

.263

२२

मिले आपसे तुष्ट उसीमें द्वन्द्वरहित है निर्मत्सर।
सिद्धि असिद्धि समान माननेवाला बद्ध न होता नर॥

(۲۲)

نفس کی لذّات ہیں تکلیف دہ اور بے ثبات
اسلئے عارف نہیں کرتا ہے اُنپر التفات

The delights that are contact-born, they are verily wombs of pain, for they have beginning and ending, O Kaunteya; not in them may rejoice the wise. (22)

(२२)

सांसारिक अनित्य विषयों को, दुःख पाप का जानो मूल
हैं अर्जुन! धीमान विवेकी, लिप्त नहीं होते जो भूल।

۲۲ ـ یہ سُکھ اندریوں کے جو سارے ہیں بھوگ
انہیں جان دُکھ روپ کرکے وروگ
بُدہی وان ان کا نہ لالچ کریں
یہ آویں و جاویں کریں پید اسوگ

सङ्गस्पर्श से प्राप्त जो, होवें भोगानन्द।
दुःखका कारण सभी वे, निश्चयरहित आनन्द ॥४४॥
होते हैं हट जात हैं, हे अर्जुन! नहीं नित्य।
अतः न ज्ञानी उलझता, कभी वहां, वे अनित्य ॥४५॥

۲۲

محسوسات و حواس باہم
مِلتا ہے بظاہر ان سے آرام
اِک سمت ہیں ابتدا سے محدود
ارجن! ان کا ہے کیا ٹھکانا

کرتے ہیں جو لذّتیں فراہم
دراصل ہیں مصدرِ صد آلام
اِک سمت ہیں انتہا سے محدود
دیتے نہیں ان پہ جان دانا

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक् शरीर-
विमोक्षणात् ॥ कामक्रोधोद्भवं वेगं
स युक्तः स सुखी नरः ॥ २३ ॥

दोहा—कामक्रोधकेवेगको, जोसहिसकैस्वभाय ।
तेयोगीनितहीरहैं, थिरसुखमेंलपटाय ॥ २३ ॥

जो मनुष्य कामक्रोधके वेगको शरीरसे निकसनेके प्रथमें उसवेगको सहनेको सकताहै सो योगी है सो मनुष्यें इसी लोकें में सुखी है ॥ २३ ॥

23. Whoso can here on earth endure,
Ere casting off this mortal coil,
The impulses of lust and wrath.
He is a *Yogin*—full of joy.

देह त्यागण थों पहलों प्यारे
सबर सबूरी मन जो मारे
मन मारे संसारी होके
काम क्रोध दे वेग नूं रोके
ऐसा नर योगी सदवावे
सो नर परम शांती पावे । २३ ।

[illegible]

۲۳- سکتا ہے مرنے ہی سے پہلے جو یہاں — دنیا میں خواہش و غضب کے طوفاں
کہلاتا وہی ہے یوگ میں قائم بھی — وہ ہی ہے شانت اور وہی ہے شاداں

२३

काम-क्रोधके प्रबल वेगको मरण-कालतक जो मतिमान ।
हो समर्थ सहता इस जगमें युक्त वही नर सुखी महान ॥

Whoso can, here on earth, withstand, 23
ere casting off this mortal coil,
The tide of lust and wrath set loose,
made w h o l e is He,—a Man of JOY.

(۲۳) [illegible]

दोहा—क्रोधकामके वेगको जीतेजी जन जोय ।
रोकत सहत सदा, भलैं सुखी सुयोगी सोय ॥ २३ ॥

(२३)

काम-क्रोध-जनित-वेगों को, आजीवन जो करता वश्य:
वही सुखी है, पुरुष श्रेष्ट है, योग युक्त है वही अवश्य ।

He who is able to endure here on earth, ere he be liberated from the body, the force born from desire and passion, he is harmonised, he is a happy man. (23)

देह छुटने से ही प्रथम, इसी जन्म में जौन ।
गुस्से से अरु विषय से, जोश उत्पन्न हो जौन॥४६॥
सके सहार सदा उसे, सुखी उसेही जान ।
मनुज उसी धर्मात्मा, को तू योगी मान ॥४७॥

۲۳

اس جسم کی انتہا سے پہلے
جو خواہشوں کو دبا چکا ہے
دُنیا میں وہی ہے مرد عاقل
پیتا ہے مئے نشاط کے جام

یعنی اپنی قضا سے پہلے
غالب غصّہ پر آچکا ہے
کہتے ہیں اسی کو لوگ کامل
حاصل اس کو ہے نقد آرام

योंऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ॥ स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥ २४ ॥

दोहा—जाकेहियपरकाशहै, अंतरसुखआराम ।
वहयोगीपरब्रह्महै, लहैब्रह्मकोधाम ॥ २४ ॥

जो आत्माहीमें सुखी और आत्माहीमें है विश्राम जिनको तैसे ही जो अंतर्ज्योति याने आत्मज्ञान ही करके प्रकाशितहै सोई योगी ब्रह्मभांति उपाय तत्पर ब्रह्मवंत् मुक्तिको प्राप्त होताहै ॥ २४ ॥

जिस हिरदय विच आनंद वसदा
जिस विच ब्रह्म दा चानणा रसदा
सो योगी निर्वाण नूं पांदा
ब्रह्म जोत विच लीन हो जांदा । २४ ।

۲۴۔ اندر سے سکھی اور جو اندر خوش کام — اندر کے نور سے ہی سرمست مدام
وہ یوگی برہم ہو کے پربرہم کی بھی — پاتا ہے برہم روپ نروان کا دھام

24. The man who finds his joy within,
His pastime and his light within,[12]
This *Yogin*, thus transformed to Brahm,
Attains at last to Bliss of Brahm.

(۲۴)
جس کا دل معمور ہے علم و سرور و نور سے
محویت میں راحتِ جاوید حاصل ہو اُسے

२४

जो आपेमें सुखी, रमे जो अपनेमें ही ज्योति प्रकाश ।
ब्रह्म-रूप होते वे योगी पाते परम ब्रह्ममें वास ॥

The Man who finds His JOY within, 24
His PEACE within, His LIGHT within,
That Y ó g ī, Self-transformed to BRAHM,
attains to Final Rest in BRAHM.

दोहा—आत्मज्ञान साधे सुखी तासों हो नर जोय ।
आत्ममें रमतो, कहै आत्मदृष्टि सुख सोय ॥ २४ ॥

He who is happy within, who rejoiceth within, who is illuminated within, that Yogî, becoming the ETERNAL, goeth to the Peace* of the ETERNAL. (24)

(२४)

आत्म ज्ञान ही में जिस को सुख, ज्ञान और मिलता विश्राम:
सांख्य योग वाला वह पाता, शांत-ब्रह्म जो सुख का धाम ।

۲۴- جسے آتما میں سُکھ آنند ہے
جو آتم جیوتی سے خورسند ہے
وہی سچا یوگی ہے ایشور کا پیارا
ملے برہم کو وہ دانشمند ہے

अन्दर सुख आनन्द भी, अन्दर ही जो पाय ।
अन्दर ही से ज्ञान भी, जिस को मिलता जाय ॥४८॥
बना ब्रह्म योगी वही, ब्रह्ममुक्त हो जाय ।
अन्दर ही की ज्योत से, जगमगात हो जाय ॥४९॥

۲۴

حاصل جسے باطنی خوشی ہے — محو آرام دائمی ہے
معمور تجلّئ نہانی — ہے ضو کش علم جاودانی
وہ گامزنِ رہِ مساوات — ہوتا ہے فنا بجلوۂ ذات
کرتا ہے وہ خاص بات حاصل — ہوتی ہے اُسے نجات حاصل

ऋषि मुनी जो आनंद रचे
दुख पाप सब जावया कहे

लभंते ब्रह्म निर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ॥ छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥ २५ ॥

दोहा—जोज्ञानीपापनितजत, होतब्रह्ममेंलीन ।
भेदनतिनकेजीयमें, रहतसबनिसोंदीन ॥ २५ ॥

जिनके लाभअलाभ सुख दुःखादिक दो दो उपद्रव नष्टभये हैं जिनका मन ईश्वरमें लगाहै और सर्वभूतप्राणिमात्रके हितमें रहतेहैं इससे उनके पापक्षीण भयेहैं ऐसे ऋषिजन ब्रह्मसमान मुक्तिको पाते हैं ॥ २५ ॥

छड दुमदा वस मन चित करदे
प्राणी मात्र दा हित करदे
सो मुनी पद निर्वाण दा पांदे
ब्रह्म विच ओह लीन हो जांदे । २५ ।

۲۵- پاسکے نروان پاتے ہیں بس وہ ہی رشی
شک جن کو نہیں جنہوں نے مارا ہے نفس
جن میں کہ نہیں پاپ کا شمہ بھر بھی
ہے سب کی بھلائی جنہیں دل سے پیاری

Rishis, their sins destroyed, their duality removed, their selves controlled, intent upon the welfare of all beings, obtain the Peace * of the ETERNAL. (25)

२५

आत्मसंयमी, पापरहित जो होकर द्वन्द्व-बुद्धिसे हीन ।
सर्वभूत-हित रत रहते हैं वे ही होते ब्रह्म विलीन ॥

The Seers come to Rest in BRAHM 25
as in their sheaths all stain dissolves,—
Division dead, all pow'r controlled,
the Good of all that lives, their JOY.

(۲۵)
عارفاں پاک ہیں اغلاط و خطا سے نجات
نفس پر قابو ہے سب کا چاہتے ہیں بھلا

दोहा—द्वंद्वरहित चित वश किए सर्वभूतहित ठान ।
पापहीन ऋषिवर लहैं स्वदर्शनसुख जान ॥ २५ ॥

25. The wise whose sins have been destroyed,
Whose doubts are gone and selves restrained,
Whose only aim, the good of all,
Attain at last to Bliss of Brahm.

(२५)

संशय रहित, परोपकार में, जिन के हुए पाप सब क्षीण:
शांत ब्रह्म वे ही पाते हैं, ब्रह्म वेत्ता-पुरुष-प्रवीण।

۲۵- رشی گیانی جن کے مٹے پاپ ہیں
وہ برہم ہیں ملیں آپنا آپ ہیں
بھلا سب کا چاہیں نہ ہی دویش کچھ
ہٹے ان کے جانو تینوں تاپ ہیں

पाप दग्धकर मन्त्रदृक्, वश करके निज आत्म।
संशय दुविधा काट सब, ब्रह्ममोक्ष परमात्म ॥५०॥
करें प्राप्त सब ऋषिजन, साध सभी का प्रिय।
लगे प्राणियोंके सदा, हित ही में दे हिय ॥५१॥

۲۵

جو گردِ گناہ دھو چکے ہیں — ہر طرح سے پاک ہو چکے ہیں
جو توڑ چکے ہیں وہم کی قید — جن کے دل میں دوئی ہے ناپید
لذّت چش خدمت خلایق — ہیں وقف محبّت خلایق
وہ اہل خبر ریاض پیما — ثمرہ پاتے ہیں وصل حق کا

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ॥ अभितो ब्रह्म निर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥ २६ ॥

दोहा--कामक्रोधतेजेरहित, वशकीनोनिजचित्त ।
ज्ञानवंतजेहैंसदा, ब्रह्मचहूँदिशिमित्त ॥ २६ ॥

जो कामक्रोधरहित हैं और ईश्वरप्राप्तिके यत्नकरनेवाले हैं और चित्त जिनके वशहैं ऐसे आत्मज्ञानिनको सर्वप्रकारसे ब्रह्मसुख वर्त्तमान होरहाहै ॥ २६ ॥

काम क्रोध थों दूर जो रैहंदे
मन अपने नूं वस कर लैंदे
सो आतम ज्ञानी तर जांदे
सहज ब्रह्म निर्वाण नूं पांदे । २६ ।

۲۶۔ جانا ہے جنہوں نے آتما کو اپنے
جو ضبط یوگ میں لگے رہتے ہیں
جو خواہش اور غضب سے آزاد ہوئے
کچھ دور نہیں ہے موکش کا پیدا اُن سے

26. For those ascetics, mind-controlled
Who are from lust and wrath disjoined;
Who have full knowledge of the Self.
The Brahmic Bliss lies everywhere.[13]

(۲۶)
شوق و نفرت کی طرف سے جسنے روکا ہے خیال
ایسے حق بیں کو میسّر ہے سدا حق کا وصال

२६

तजकर काम, क्रोधको जो यति संयम आत्मज्ञान-सम्पन्न ।
चारों ओर ब्रह्मको पाता उभय लोकमें रहे प्रसन्न ॥

26
To Those who know Themselves, unyoked
from lust and anger, mind-controlled,
Heart-mastered, Final Rest in BRAHM
of Its own Self is drawing nigh.

दोहा—क्रोधकामसों हीन ह्वै जिन मन वशकर लीन ।
तिऊ ज्ञानिनने हाथपर आत्मदृष्टि सुख कीन ॥ २६ ॥

The peace * of the ETERNAL lies near to those who know themselves, who are disjoined from desire and passion, subdued in nature, of subdued thoughts. (26)

(२६)

काम क्रोध तज, मन वश कर के, प्रभु-साक्षात्कार में लीन-
-होकर ही, वे ज्ञानी पाते, शांत-ब्रह्म-गुण गरिमासीन ।

۲۶- جو شہوت و غصہ سے نیارے رہیں
جو من جیت ایشور کے پیارے رہیں
انہیں صاف درشن پربھو کا سدا
پرم برہم کے وہ دُلارے رہیں:

छुटे काम अरु क्रोधसे, वश कीना निज चित्त।
आत्माको लिया जान फिर, योगीजन स्थिर चित्त॥५२॥
रहें सदा ही ब्रह्म में, पाये ब्राह्म सुमोक्ष ।
सभी ओर उन के सदा, व्याप रहा ब्रह्ममोक्ष ॥५३॥

۲٦

جو غیض و غضب سے دور تر ہیں
دل کی کشتی ڈبو چکے ہیں
داناؤں میں انتخاب ہیں وہ
دور ان سے نہیں ہے منزلِ حق

بیگانۂ خواہش ثمر ہیں
عرفاں میں جو محو ہو چکے ہیں
ہر طرح سے کامیاب ہیں وہ
بنتے ہیں وہ جزو ذات مطلق

sire and passion, subdued in nature, of subdued
oughts. (26)

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवांतरे भ्रुवोः ॥ प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यंतरचारिणौ ॥ २७ ॥ यतें-

द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ॥ विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥ २८ ॥

दोहा--तजैविषयसंसारमें, दृष्टिभौंहमधिराखि ।
प्राणअपानहिसमकरै, नासामधिअभिलाखि ॥२७॥
जीतइंद्रियबुद्धिमन, मुक्तिहिमेंमनदेय ।
इच्छा भयक्रोधहितजै, मुक्तिपदारथलेय ॥२८॥

बाह्य इंद्रियोंके स्पर्श जो शब्दादिके विषय तिनको बाहेर याने त्याग करके फिरि भौहोंके मध्यमें दृष्टिको करके नासिकाके भितरही संचारकरै ऐसे प्राणापानोंको सम करके जो मुनि याने मननशील पुरुष इंद्रिय मन और बुद्धिको वशकरै मोक्षहीमें आसक्त इच्छा, भय और क्रोध करके रहित होइ सो सदामुक्तही है ॥ २७ ॥ २८ ॥

विषयां थों मन दूर हटा के
ध्यान भ्रुवां विचकार टिका के
स्वासां ताईं संयम करके
प्राण अपान नूं इक सम करके । २७ ।

इन्द्रे मन बुद्धी जिन जावे
मुक्ती मारग कदम वधावे
इच्छया भय क्रोध तज देवे
सो मुनी जीवन मुक्त सदेवे । २८

¶ 27. All outer contacts left without,[14]
The gaze betwixt the eyebrows fixed,
The dual tide of breath which flows
Between the nostrils, equalized,

28. With reason, mind and senses curbed,
And having Freedom for his goal,
With no desire or wrath or fear;
Such sage indeed is freed for aye.

(۲۷)
ابروؤں کے وسط میں لاکر نظر اطراف سے
توڑتا ہے جو نفس کو ناک سے چلتے ہوئے

(۳۸)

Having external contacts excluded, and with gaze fixed between the eyebrows; having made equal the outgoing and ingoing breaths moving within the nostrils; (27)

With senses, mind,* and Reason † ever controlled, the Sage, solely pursuing liberation, having for ever cast away desire, fear and passion, verily is liberated. (28)

दोहा—मन इंद्रियको रोक, चख नासिकाग्रमें लाय। (युग्मक)
प्राणापान समान कर आत्ममें मन नाय॥ २७॥
मोक्ष चाहना इक जिसे यतचितमाती मुनि जोय।
क्रोध काम भय हीन अरु, मुक्त सदा नर सोय॥ २८॥

¶All outer contacts locked without, 27
His 'Sight' at Poise 'twixt eyebrows twain,
Poised, too, to B r e a t h that makes, unmakes,*
at work, past nostrils, deep within,—

Sense-pow'rs, Mind, Will, all merged [in SELF], 28
of Thought deep-hushed, on Freedom bent,
The Man e'er loosed from wish, fear, wrath,—
that MAN, O Friend, in Truth is f r e e .†

२७

बाह्य-विषय कर दूर, दृष्टिको अपने भ्रकुटी-युगमें धार।
सम कर प्राण अपान, करे जो नासाके भीतर संचार॥

२८

इन्द्रिय, मन, मति रोक, क्रोध, भय तज, इच्छामें हो न प्रयुक्त।
मोक्ष-परायण ऐसे मुनिको जान सदा ही भवसे मुक्त॥

٢٧- وِشے واسنا کو ہٹا کر کے جو!
نظر دونوں چشموں کے درمیان ہو
کرے ایک رس دم کی رفتار کو
مشق جس دم میں وہ ہوشیار ہو

٢٨- مُنی جو کہ من اندری وش میں کرے
بُدھی شُدھ و نرمل بھرم کو ہرے
نہیں خوف نہ اچھا نہ غصہ ذرا
سدا شُدھ اس سے نہ مکتی پرے

(२८)
इन्द्रिय, बुद्धि और मन पर जय, पाकर, मोक्ष-परायण-ज्ञान:
क्रोध और भय रहित हुए से, मिलती मुक्ति सतत मतिमान!

(२७)
सांसारिक विषयों को तजकर, दृष्टि चढ़ावैं भौंह मँझार;
प्राण-अपान-वायु-सम करके, करै नासिका में संचार।

५
२६-२८

बाहर के विषय त्यागकर, मन से भी उन्हें निकाल ।
चक्षु: दोऊ के मध्यमें, दृष्टि सदा सम्भाल ॥५४॥
इक कर श्वासप्रश्वास को, नासिका चारी जौन ।
रोक दोऊ को सर्वथा. प्राणायामी जौन ॥५५॥

रोक सभी निज इन्द्रियां, मनबुद्धि भी सम्भाल ।
इक मुक्ति का ही आश्रय, मुनि समझे सुविशाल॥५६
डर त्यागे गुस्सा त्यजे, इच्छा दीं सभी त्याग ।
ऐसा मौनी मुक्तही, सभी काल, सविराग ॥५७॥
सरल उपायसे यह स्थिति, पा जाय जैसें भक्त ।
हे अर्जुन! सुन वह अभी, तू मुझ में अनुरक्त ॥५८॥

۲۷

اموالِ بروں سے دل ہٹائے — اسباب زبوں سے دل ہٹائے
اس نقطہ پر نظر جما کر — اس شمع کی سمت لو لگا کر
جو ہے مابین ہر دو ابرو — ہوتی ہے جہاں نگاہ یکسو
انفاس کو اپنے ضبط کر کے — قایم اک ان میں ربط کر کے

۲۸

دل کو جس نے کیا ہے تسخیر — ہے عقل و حواس کا عناں گیر
استغنا ہے پسند جس کو — اک بار ہے قید و بند جس کو
خواہش سے ہے بلند و برتر — ہے خوف و غضب سے دور یکسر
ہر وقت ہے محو حق گزاری — حاصل اس کو ہے رستگاری

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्व-

रम् ॥ सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शांतिमृच्छति ॥ २९ ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म-
विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णा-
र्जुनसंवादे कर्मसंन्यासयोगो-
नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दोहा—तपयज्ञनको भोगता, सबलोकनिकेईश ।
शांतिलहैयोंजानिकै, मोकोप्रभुजगदीश ॥ २९ ॥

अब औरभी अति सुगम मुक्तिका उपाय कहते हैं. सर्वयज्ञ और तपोंका भोक्ता सर्वलोकोंका महेश्वर याने लोकेश्वरोंकाभी ईश्वर सर्वभूतप्राणिनका सुहृद् ऐसा मे-रे को जानिकेभी मुक्तिको प्राप्त होताहै ॥ २९ ॥

यज्ञ तपां दा भोगन वाला
मैं सब सृष्टी दा रखवाला
सब संसार रचावण हारा
प्राणी मात्र दा मैं प्यारा
जो कोई मैंनूं ऐसा ध्यावे
सो नर परम शांती पावे । २६ ।

۲۹- میں بھوگتا یگیہ کا ہوں اور ہوں تپ کا بھی — ایشور عالم کا - دوست سب کا بھی
جس نے جانا ہے اس طرح سے مجھکو — اے ارجن شانتی وہی ہے پاتا

२६

भोक्ता मुझको यज्ञ तपोंका और नाथ लोकोंका, तात ! ।
जाने सुहृद प्राणियोंका भी, वही मोक्ष पाता अचिरात ॥

29. And knowing Me, the Lord Who loves
Austerities and sacrifice,
The Mighty Ruler of all worlds,
The Friend of all—he enters Peace.

(۲۹)
میں ہوں سب شغلوں کا مخزن مالک پروردگار
جس کا یہ ایمان ہے دل میں اسیکے ہے قرار

दोहा—यज्ञपुरुष प्रभु लोकको सर्वभूतहित राय ।
ऐसे मोकूं जानके कर्मयोग सुख पाय ॥ २९ ॥

Knowing ME, the Sole Enjoyer — 29
of all Sacrifice and Penance,
One O'erlord of every Cosmos,
[illegible]l Hearts' Lover,—He enters PEACE.

۲۹- میں ہوں سارے یگ اور پوجا کا مالک
سوامی سہرو لوک کا ہوں و پالک
مجھے جانکر پاوے شانتی نرنتر
میں ہوں سب کا ہتر سبھی ہیبر بالک

Having known Me, as the Enjoyer of sacrifice and of austerity, the mighty Ruler of all the worlds, and the Lover of all beings, he goeth to Peace. (29)

(२९)

यज्ञ–तपोबल–भोगी एवम्, सर्वेश्वर, प्रेमी–निस्स्वार्थ;
तत्व समझ अनुयायी मेरे, शांत–ब्रह्म पाते हैं पार्थ ! ।

۲۹

ہر یگیہ میں نذر پانے والا
بزم کون و مکاں کا مالک
برتر بالا بلند فائق
قائل جو مرے وجود کا ہے

تپ کی قسمت جگانے والا
یعنی سارے جہاں کا مالک
صرف بہبودی خلایق
دل اس کا سکوں سے آشنا ہے

मुझे जान कर मित्रही, सब प्राणि का ही एक ।
महा प्रभुसंसार का, सदा मुझे ही पेख ॥ ५९ ॥
सेवनकर्ता यज्ञ तप, सभी का मुझे को जान ।
पाता भक्त सुशांति: आश्रय मुझे पहिचान ॥ ६० ॥

٢١٤٧٥

پانچوان ادھیاے سنیاس جوگ

یعنی

موقع اور وقت کے مناسب کام کرنا

کہا یہ ارجن نے کرشن جی سے کہ شغل افعال اک طرف ہی
ہی ترک افعال دوسری شی پھر ان مین سے کون باشرف ہی

نصیحتین ہین کہ دو ضدون کو کیا ہی یکجا یہ بات کیا ہی
مفید جو ایک اُن مین سے ہو۔ کہو وہی اپنا مُدعا ہی

کہا سری کرشن نے کہ دونون ہی مکُت داتا ہین بہر انسان
ہی ترک افعال سے ہمیشہ بڑھی ہوئی کرم جوگ کی شان

نظر سے جس کے دوئی ہو رخصت وہی بس آزاد کرم سے ہی
بری ہر اک کاروبار سے ہی۔ نہ کام اُسے سخت و نرم سے ہی

جو کرم کانڈ اور گیان مین فرق جانتے ہین ہین طفل مکتب
جو باخبر ہین نظر مین اُنکی ۔ ہی صاف دونون کا ایک مطلب

جہان یہ گیانی کی ہو رسائی ۔ ہی وان گذر کرم کانڈی کا
الگ الگ انکو پھر سمجھنا ۔ سبب یہ ہی عقل کی کمی کا

جو کرم کرتا نہین ہی پہلے ۔ کبھی وہ ہوتا نہین ہی تیاگی
جو نیک افعال کا ہو فاعل وہ برمھ مین لین ہوگا بھاگی

جو کرتا ہی کرم جوگ پیارے ۔ دل اُسکا ہوتا ہی صاف بالکل
ہو قادر جسم و خواہش دل ۔ کرے نہ کچھ بھی خلاف بالکل

ہو دستگیر اُسکا خود ہی ایشر ۔ حساب سے فعل بد ہو منہا
جو نیکیون کی طرف ہو راغب ۔ وہی ہو انسان سب سے اچھا

ہوا جو آگاہ برمھ سے ہی ۔ ہی وہ بھی انسان ہی تو آخر
حواس کرتے ہین کام اپنا ۔ نہین ہی کچھ فرق بھی بظاہر

ہم چشم بنیا تو گوش شنوا زبان کو ہی ذائقے سے مطلب
ہی ناک سے کام سونگھنے کا ۔ سمجھنے کی بھی ہین طاقتین سب

یہ حال سب کچھ ہی لیکن اُسکی نظر مین کام اسکا کوئی کیا ہی
وہ فعل کا آپ ہی کو فاعل نہین سمجھتا یہی مزا ہی

کسیکو دینا کسی سے لینا ۔ کسیکا پردہ نہ فاش کرنا
کسی کی نگرانی یا کسی چیز کی جہان مین تلاش کرنا

یہ فعل جو ہین حواس کے ہین وہ جانتا ہین نہین ہون فاعل

اُسی سے وہ لین بڑھ ہین ہر اُسی سے پہنچا وہ سوئے منزل

جو کام کرتے ہین پھر بھی مجبور اپنے کو دل مین جانتے ہین

وہی بُرے کام سے جدا ہین۔ وہ ہی نصیحت یہ مانتے ہین

جو حق سے واصل ہر اُسکو اُلفت نہین جو اس دل و بدن سے

وہ کام کرتا ہر یو ہین مطلب نہین اوسے رحمت و محن سے

کنول کا پتا ہر آب ہی مین مگر یہ بے لوث آب سے ہر

یہی ہر تارک کا حال ارجن جدا ثواب و عذاب سے ہر

ہوا جو عارف اُسے نہین کچھ بھی اپنے افعال کی تمنا

جو تفرقے مین پھنسا ہوا ہر۔ اُسے ہر اشغال کی تمنا

ہوئی حکومت ہر جس کی دل پر وہ ترک کرتا ہر کام دل سے

پھر اُسکی آرام سے بسر ہر۔ مٹا تردد تمام دل سے

سجھاؤ نے راہ جو بتائی۔ اُسیکی لوگون نے پیروی کی

ہر اختیار آدمی کو حاصل ہر رائے غالب فقط اُسیکی

نہ لے عذاب و ثواب خالق اُسے نہ کچھ اُنکی آرزو ہر

جو غافل انسان ہو گیا ہر اسی سے آوارہ سو بسو ہر

اگر جہالت ہو دُور دل سے تو گیان کا آفتاب چمکے

سمجھ مین آجائے راز پنہان رہین نہ سامان غم و الم کے

جو اپنی ایشر سے لو لگائے وہ ویدنت صادق اوسے بنائے

یہ ڈیرا اپنا وہان جمائے۔ کہ لوٹکر خلق مین نہ آئے

جو مرد کامل ہین انکی نظرون مین سب برابر ہین فرق کیا ہی
برہمن و چھتری ہین یکسان یہان نہ چھوٹا نہ کچھ بڑا ہی
ہین مادہ و گاو فیل و سگ بھی برابر اہل خرد کے آگے
نہ انکو چنڈال سے ہی نفرت۔ نہ بڑھتے ہین اپنی حد سے آگے
جو سم درشٹی بشر ہو کوئی اُسیکو حاصل ہی فتحیابی
برابر اُسکو ہی دین دنیا نہین ہی اُسکے لیے خرابی
جو سم درشٹی ہوا ہی گیانی وہی تو ایشر مین لین ہوگا
جسے ہی سچی خوشی میسر وہ کاہیکو پھر ملین ہوگا
جو قید لذات دنیوی سے الگ رہے ہی وہ نام آور
ہی کرم جوگ ایک گیان جوگ ایک چاہے وہ جو کرے ہی بہتر
جو لذتین اندریون سے حاصل ہوئین وہی رنج کا سبب ہین
سمجھ کے عارف بس اُنکو فانی جہان مین راغب وہ انسے کب ہین
جو شہوت و غصہ پر ہو غالب۔ پس فنا پھر وہ کام کیا ہی
جو مرنے سے پہلے اونکو جیتے وہی تو اوتار گیان کا ہی
ہی جسکے باطن مین سچی راحت اُسیکو روشن ضمیر سمجھو
اُسیکو گیانی اُسیکو دھیانی اُسیکو حق کا خبیر سمجھو
جو شہوت و غصہ سے بری ہی دل پہ قایم حکومت اسکی
وہی ہی آگاہ آتما سے لگی ہی حق سے طبیعت اُسکی
جو غیر محسوس لذتون پر جھکا وہ اہل کمال ہوگا

کیا ہی قابو مین جس نے دم کو وہ حق سے ملکم نہال ہوگا
جو اندری اپنے بس مین کرلے جو پاوے انتہ کرن پر قابو
جو یاس و امید و رنج و غصہ سے دُور ہو موکش پائے خوشخو
جو دل سے ہو خیر خواہِ خلقت کرے جو بھگوان کی عبادت
جو ہی سدا مائلِ ریاضت ہی اُس سے پرماتما کو الفت
تمھین بھی ارجن یہی ہی واجب کہ کام ایسے ہی کیجئے اب
کہ جس سے ایشر ہو تم سے راضی ہو روبرو آکے تشکل مطلب

ادھیائے پنجم پرکرت جوگ نام

بگفتا ز ترکِ عمل و ز عمل — کدامی بود خوشتر و بے زلل
بخوبی ز ہم دست خود تا بکار — دلم را ز تشکیک بیرون بیار
بگفتش کہ کردن نکردن خوش ست — ولے دست در کار بُردن خوش ست
ہر آنکس کہ بے مدعا کار کرد — ز آزادگان ست آں نیکمرد
ز ترکِ عمل کار ہر کس بود — ز فضلِ خدا یار ہر کس بود
سزاوار ترکِ عمل آں بود — کہ عالم بر اش جملہ یکساں بود
بود دست دشمن برابر بریش — نباشد خیالِ دوئی در سرش
بود ہر کہ دارِ این غفلت شعار — جدا باشد از کار از ترکِ کار
بدانید کے ہر کہ دانا بود — کہ فہمید را از تبہ بالا بود
غرض بیغرض کار کُن ناجی ست — کہ از مزدِ ہر کار مستغنی ست
کمالاتِ جوگی شود چوں تمام — بود جوگ و سنیاس ایک مقام
ہر آنکس کش آں ہر دو دید یک بدید — ز آلام داد و ام ولی وا رہید
بجز جوگ سنیاس مشکل بود — چو فیلے کہ او پائے در گل بود
رسد نیز تر در مقامِ نجات — بہر دو صفت میشود محو ذات
نورزد بجز عشقِ ذاتِ خدا — ببیند تجلیش در ہر کجا

جزائے عمل ہیچنیں کس کجاست — کہ جان و دلش محوِ ذاتِ خداست
شنیدن بگوش ست دیدن بچشم — بدارد تعلق بدل ہر دو خشم
مساس اندر دست رفتن ز پا — بود از زباں لذتِ ہر غذا
ز بینی ست بو و قیاس از دماغ — درین جملہ جان ست مثلِ چراغ
اگرچند محسوس کس نیست جاں — ولے ہست از وے لبابِ جہاں
بود جوگیا نرا ہمیشہ فراغ — نشد زندہ بر کارِ دنیا دماغ
شغلہائے شاں بہرِ عرفاں بود — از ایشاں بود ہر کہ انساں بود
گرفتارِ خواہش بدامِ بلاست — گہے بادشاہ ست دگاہے گداست
بنہ ہر کہ غالب بجہدِ خویش — نگردد دل او ز اندوہ ریش
بود بود باشش چو نیلوفراں — کہ باشد در آب و نباشد فراں
تو ہم آنچناں کن کہ من میکنم — میانِ خطرگہ وطن میکنم
تنِ آدمی واں جہانِ صغیر — بود لغتۂ آں جہانِ کبیر
درش نہ بود شنوائے اہلِ ہوش — دو سوراخِ بینی دو چشم و دو گوش
دہان و مکانہائے بول و براز — بود جاں درو پرتوِ کارساز
سہ گونہ بود مردمِ ایں جہاں — یکے آنکہ بنعبہ دشمن میاں
دگر آنکہ جرأت نمی‌یابد اندر — سوم فقر دہ خواہ و نکو میدہ وجہ
یکے میکند کار و داند ز خویش — مدام ست از فہمِ خود بینیش
یکے می شناسد خدا میکند — بر بیشِ من ایں ہم خطا میکند

نه بیند انشی آیینه زنگ صحبت
بود صاف آیینه عارفان
برابر بر ایشان بود مور و فیل
بشه و گل الطف یکسان کند
نخواهند از بهر خود هیچ چیز
بلذت نداید دل آشنا
بشکر و شکایت نداده نه کار
ز لذات حسها نفور اند شان
سر انجام آرام اینجا غم است
هر آنکس که از حرص و خشم است دور
بدل میکند سیر محسوس ها
پراگنده خاطر نگردد خیال
شود حاکم مهر و ماه و فلک
نه کیهان عبادت نه دین گوشه گیر
بیاد خدا محو باشد شان
گروهی که مطلوب حرص همه است
ز شادی نه شادان نه از غم غمی
هر آنکس که مرد است شیرانه قیاس

هم از سنگ غفلت رسیدش شکست
که در وی بود مهر نورش عیان
که یکسان نست اینجا عزیز و ذلیل
مراعات بر دل پریشان کند
که مطلوب ایشان نشد هیچ چیز
بیابند ذوق بیاد خدا
همیشه بمانند بر یک قرار
نهادند عقل و شعور اندشان
جهان جملگی خانه ماتم است
توان گفت او را سراپا سرور
بداند که در اوست ارض و سما
که در عقل و هوشش درناید زبان
بود غالب جن و انس و ملک
نگردند در دام دنیا اسیر
نخواهند هرگز ریاض جهان
گرفتار در دام گاهی بلاست
بهمان است در پیش من آدمی
نصیبش شده جاودانی حیات

خیالات باطل ز سر وا کند
میان دو ابرو نظر دوخته
پران و اپان را برابر کشد
بدست آورد عقل و دل هم حواس
ز خوف و رجا و ز حرص و هوا
هر آنکس که جنگ میکند در جهان
چو عارف شود قدر من اند او

کناره ز لذات حسها کند
کند حبس دم باد دل سوخته
سبوی عشق بر سر کشد
همانست دانای یزدان شناس
نماید دل خویشتن را جدا
پس از مرگ یابد ریاض جنان
بنامی که داند مرا خواند او

گیتا کے ادھیائے پنجم کا مہاتم

کہا بھگوان نے پھر ازرہ ہوش ۔ سنو شری لچھمن جی یہ بصد جوش

برہمن تھا کہیں اک پنگلا نام ۔ سیہ بختی مین تھا وہ شہرۂ عام

رہا کرتا شریک صحبتِ بد ۔ گنہ اُس سے ہزارون ہوتے سرزد

خوشی سے اُس نے چھوڑا تھا وطن کو ۔ ملی اک صورتِ قوت اہل فن کو

کسی راجہ نے نوکر اُسکو رکھا ۔ معین اک جگہ پر اُسکو رکھا

برہمن مکر و فن سے اپنے دن رات ۔ کیا کرتا پے زر شوق سے گھات

غرض یون ہی بہت ساماں پایا — طریق بد مین لے لیکر اُٹھایا
کسی عورت سے کی خوش ہوکے شادی — مٹایا سب غبارِ نامرادی
مگر عورت ملی ناکارۂ دہر — کیا کرتی ہمیشہ گردشِ شہر
وہ شوہر زلف ساں ہوتا تھا برہم — سزا ناپاک کو دیتا تھا ہردم
حقیقت مین تھی وہ زن بانیِ قہر — دیا شوہر کو اپنے ایک دن زہر
لباسِ زندگی اُس کا ہوا چاک — گیا ملکِ عدم کو ہوکے غمناک
بداعمالی ہوئی اُسکی ہویدا — ہوا وہ قالبِ کرگس مین پیدا
لگی جب زن پہ باد قہر چلنے — لیا کھینچ اُسکو آغوشِ اجل نے
ہوئی طوطی وہ بدبختِ زمانہ — بنایا اک شجر پہ آشیانہ
وہین کرگس رہا کرتا تھا شب کو — لیا پہچان زوجِ بے ادب کو
جو دل پر صدمۂ رنج کہن تھا — برنگِ خار دل پر نیش زن تھا
سزا دینے لگا اُس بدگہر کو — رولایا شمع آسا چشم تر کو
سو مرگھٹ وہ بھاگی ہوکے مضطر — برہمن کا جہان تھا کاسۂ سر
وہ کاسہ آب بارش سے بھرا تھا — مریضِ غم کو ہمرنگِ دوا تھا
وہین پر جا کے پھر کرگس نے مارا — گری طوطی قریبِ سر قضارا
اُچھلکر وہ پڑا دونون پہ پانی — ہوا موجود نقدِ کامرانی
اُسی دم مکت دونون ہوگئے صاف — گناہونکے وہ دفتر دُہو گئے صاف
بوان آیا بصد شان و تجمل — گئے بیکنٹھ دونون بے تامل
مگن اُنکو لائے پیش دھرم راج اب — کہ تھا بیکنٹھ مین رکھنے کا مطلب

تعجب مین ہوے وہ صاحب ہوش — یہ دونون سے لگے کہنے بصد جوش
کہو اس جنم مین تب کون تھے تم — براہِ لطف ہو محوِ تکلم
کہا کرگس نے مین تو برہمن تھا — یہ زن تھی جس سے آزار و محن تھا
اسی نے زہر دیکر مجھکو مارا — کیا پھر اُس نے دنیا سے کنارا
غرض دونون نے بدلا قالب خاک — مین کرگس اور ہوئی طوطی یہ ناپاک
شجر پر دیکھا اس طوطی کو مین نے — ستایا خوب اس کے جی کو مین نے
پڑا تھا اک جگہ پر کاسۂ سر — وہین پر گر پڑی یہ جا کے مضطر
وہ پانی سے بھرا تھا کاسۂ سر — پڑا جو آکے دونون پہ اُچھلکر
میان سُرگ جاتے ہین اسی سے — مرادین دل کی پاتے ہین اسی سے
یہ سُنکر بول اُٹھے وہ صاحب فر — یہ تھا اک برہمن کا کاسۂ سر
برہمن تھا وہ خوش خو و نکو ذات — کیا کرتا تھا گیتا پاٹ دن رات
وہ پڑھتا پانچوان ادھیاے ہر روز — کنارِ گنگ رہتا جلوہ افروز
اسی سے وہ پڑا پانی جو اکبار — گئے بیکنٹھ کو دونون گنہگار
مرا یہ حکم تھا پہلے سے جاری — کہ گن ہائین براہِ انکساری
پڑھے گیتا جو کوئی مرد عاقل — اُسے بیکنٹھ مین کر دیتا داخل
غرض یہ راہ آسانی ہوئی خوب — بنے مجرم ہوا طرز خوش اسلوب

پانچویں اَدھیاے کا خلاصہ

۱۔ **سنیاس اور یوگ**۔ چونکہ سانکھیہ میں محض بچار کا کام ہے کچھ کرنا کرانا نہیں پڑتا۔ اس واسطے یوں سمجھنا چاہئے کہ اس میں سنیاس کی تعلیم ہے۔ اور یوگ میں کرم کی۔ اس لئے ارجن پوچھتا ہے۔ کہ ان میں سے جو بہتر و برتر ہو وہی مجھکو بتا دیجئے:۔

۲۔ **سانکھیہ اور یوگ ایک ہیں**۔ بھگوان جواب دیتے ہیں کہ سانکھیہ اور یوگ دونوں ایک ہیں +

(ا)۔ دونوں ایک منزل یعنی موکش پد پر پہنچانے والے ہیں۔ گیان موکش کا مکھیہ سادھن ہے اور کرم چونکہ من کو شدھ کرکے آدمی کو گیان کا ادھکاری بنا دیتا ہے۔ اس واسطے رستہ ایک ہی ٹھہرتا ہے +

(ب)۔ من کی شدھی کی ضرورت پہلے پڑتی ہے۔ اس واسطے یوگ مقدم ہے۔ پس ترک اعمال یعنی سنیاس سے یوگ بہتر ہے +

(ج)۔ یوگ کی امداد کے بغیر سنیاس مشکل ہے۔ ہاں جو یوگ میں لگے رہتے ہیں۔ وہ سنیاسی ہو کر جلد تر برہم پد کو پہنچ جاتے ہیں۔ کیونکہ اُن کا من صاف ہو جاتا ہے۔ من اور اندریوں پر قابو پا جاتے ہیں۔ اور اپنی ذات کو جزو کل کی ذات سمجھکر کرم بندھن سے نکل جاتے ہیں +

۳۔ **سنیاس کی توضیح**۔ سنیاس کی تعریف اور نتائج بیان کرتے ہیں:۔

(ا)۔ اصلی سنیاسی وہ ہے۔ جو کرموں کو چھوڑ بیٹھتا نہیں۔ بلکہ دل سے رغبت و نفرت کا خیال دور کر دیتا ہے۔ سکھ دکھ وغیرہ اضداد کے جوڑوں سے مضطرب نہیں ہوتا۔ اور لوک سنگرہ کے واسطے کرم کرتا ہے۔ ایسے یوگی یعنی کرم کرنے والے کو کرم بندھن کا باعث نہیں ہوتے وہ اپنے کو شدھ گیان سروپ آتما دیکھتا ہے۔ اور دیکھنے سننے۔ چکھنے چھونے لینے

دینے یہ سمجھتا ہے۔ کہ حواس اپنا عمل کر رہے ہیں۔ میں اکرتا ہوں +

(ب)۔ اسی طرح کرم بندھن اسے نہیں ہوتا۔ جو تمام کرم برہم آرپن کر دیتا ہے۔ اور تن سے یا من سے جو کرم کرتا ہے۔ اُن میں تعلق نہیں رکھتا۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے۔ کہ دوامی شانتی حاصل کرتا ہے +

۴۔ **گیانی اور اگیانی**۔ گیانی سمجھتا ہے کہ بدن انسانی میں وہ ایک آتما اکرتا ہے۔ نہ کسی سے کچھ مطلق کراتا ہے۔ نہ خود کچھ کرتا ہے۔ کام جو کچھ ہے۔ مایا میں ہوتا ہے۔ اور میں مایا کے تماشے دیکھنے والا ساکشی ہوں۔ اگیانی کرم پھل کی ہوس میں بندھا جاتا ہے۔ وہ سمجھتا ہے کہ فاعل میں ہوں۔ اور پاداش اعمال میں سکھ یا دکھ مجھے ہوگا۔ اس کا اپنے کو فاعل سمجھنا اس وجہ سے ہے۔ کہ گیان کو اگیان نے ڈھک رکھا ہے +

۵۔ **گیانی کے اوصاف**۔ گیانی نے چونکہ اپنا اگیان حق کرکے دور کر دیا ہے۔ اس واسطے آفتاب روشن کی طرح اس کو آتما کا جلوہ ہوتا ہے۔ اور اس میں مندرجہ ذیل اوصاف پیدا ہو جاتے ہیں:۔

(ا)۔ برہم کے دھیان یعنی سروپ آنند میں مگن رہتا ہے +

(ب)۔ سب کو ایک نظر یعنی برہم روپ سے دیکھتا ہے +

(ج)۔ اچھی چیز پاکر خوش اور بری شے پاکر ناخوش نہیں ہوتا +

(د)۔ بشیوں کے سکھ چونکہ ناپائدار ہیں۔ ان کی طرف دھیان نہیں دیتا۔ خواہش اور غصے سے آزاد رہتا ہے۔ اور اندرونی خوشی کرکے آتما نند کے سکھ میں مست رہتا ہے +

(ہ)۔ یہ سکھ انہیں کو نصیب ہوتا ہے۔ جو خواہش اور غضب کو چھوڑ چکے ہیں۔ جنہوں نے نفس کو جیت لیا ہے جن میں پاپ کا شائبہ نہیں ہے۔ سب کی بھلائی میں لگے رہتے ہیں جنہیں کچھ شک و شبہ نہیں ہے۔ اور جو آتم گیانی ہیں +

۶۔ **دھیان جمانے کے طریق**۔ یہ شانتی کی حالت دو طرح پیدا ہو سکتی ہے +

(ا)۔ بشیوں کا خیال اور خواہش و غضب کو طبیعت سے دور کر کے۔ اندریہ مین اور بدھی کو روک کر دونوں بھووں کے بیچ میں نظر کر کے۔ اور پران اپان کو ناک کے اندر ہی یکساں چلا کر۔ آدمی موکش پدیا اپنے سروپ کا دھیان کرے +

(ب) بھگوان کا اس طرح دھیان کرے کہ یگیہ اور تپ کے بھوگتا ہیں۔ جگدیشور ہیں۔ سب کے ہی خواہ ہیں۔ غرض وہی سب کچھ ہیں +

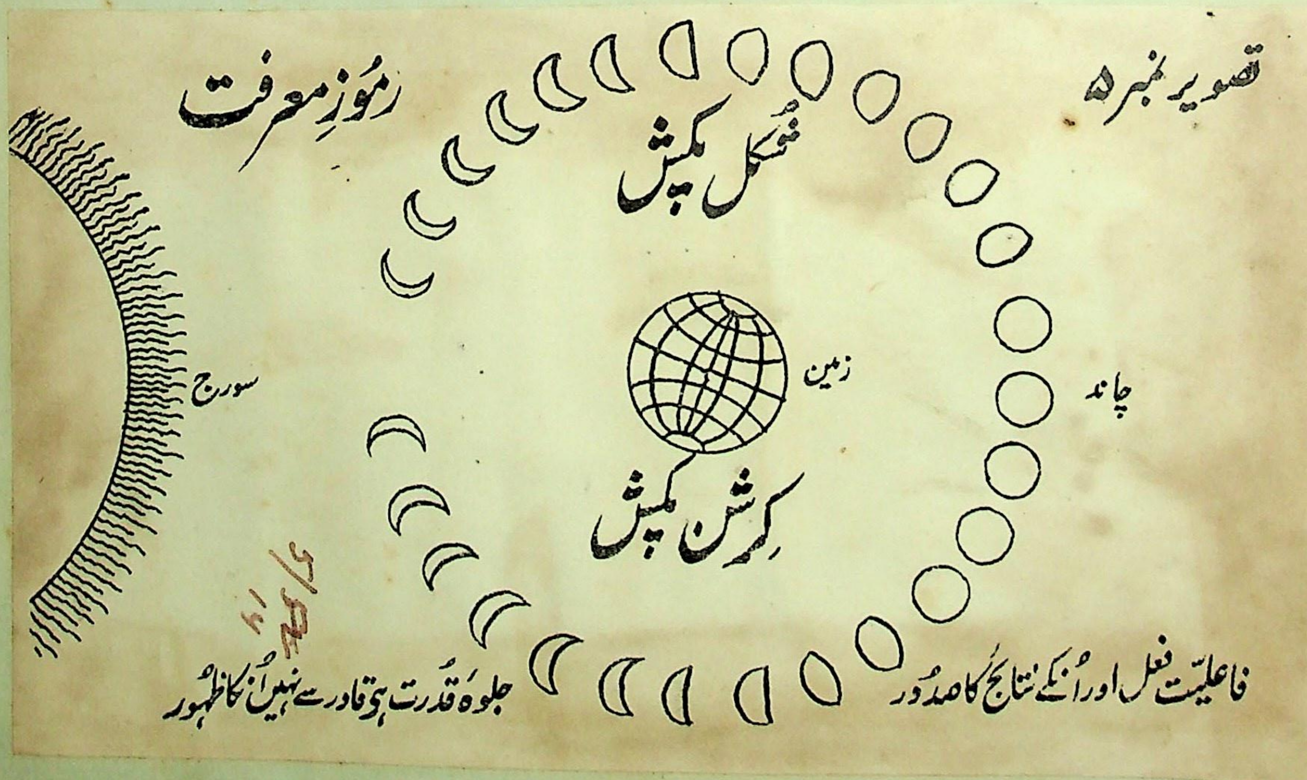
602

تصویر نمبر ۵ - رموزِ معرفت

ماہتاب نکشتروں کے دائرے میں گردش کرتا ہوا اپنی سرد کرنوں سے روئے زمین کا غایزہ تیار کرتا ہے یعنی سمندروں میں جزر و مد پیدا کرتا ہے۔ نباتات کو تازگی بخشتا ہے اور حیوانات میں افزائشِ نسل کا باعث ہوتا ہے جیسے پندرہ دن تک وہ اپنی رویت میں ترقی کرتا ہُوا ہلال سے بدر ہو جاتا ہے اور دوسرے پندرہ دن میں گھٹتا ہُوا بدر سے ہلال رہجاتا ہے ویسے ہی دل انسان جُزویت سے کُلّیت کی طرف رجوع کرتا ہوا معراج پر پہنچتا ہے اور پھر کُلّیت سے جُزویت کی

جانب متوجہ ہو کر نزول کے مدارج طے کرتا ہے۔ عارفوں نے پہلے نظارے کو جلالی اور دوسرے کو جمالی بیان کیا ہے۔ ماہتاب اپنی مُختلف اشکال دکھانے پر بھی ایسے تغیرات سے بے اثر رہتا ہے کہ اُس کا نصف حِصّہ ہمیشہ آفتاب سے نور اقتباس کرتا ہے۔ اسی طرح ذاتِ پاک جُزو کُل اور حق و باطل کو نمود دیتی ہوئی ایسے تعیّنات سے بالاتر ہے۔ یہ تصویر ترکِ تمنّا کے اُصول کو خودشناسی کا وسیلہ ثابت کرتی ہے۔

603


تصویر نمبر ۵
رموزِ معرفت
شُکل پکش
کرشن پکش
زمین
چاند
سورج
فاعلیت فعل اور اُنکے نتائج کا صدور
جلوہ قدرت ہی قادر سے ہیں اُنکا ظہور

ओ३म्

श्रीमद्भगवद्गीता

ध्यानयोग अध्याय ॥ ६ ॥

पृष्ठ ६०६ से ८२२ तक

व्रजराज



आजको रूप लखे व्रजराजको आजहि आँखिनको फल पायो ।

چھٹا ادھیائے

آتم سنجم یوگ یا ضبط نفس

پانچویں ادھیائے کے آخر کے تین منتروں میں بھگوان نے دھیان کا طریقہ بتایا ہے۔ چھٹا ادھیائے اسی طریق کی تشریح ہے۔ جیسے دھیان کے لئے بیٹھنے۔ دھیانی کے کھانے پینے۔ دھیان لگانے آنند آنے۔ اور یکساں نظر ہو جانے کا بیان ہے۔ ساتھ ہی من کے روکنے اور یوگ کی تکمیل کا ذکر ہے۔ کہ نامکمل یوگی کو جنم جنمانتر میں کیونکر سدھی حاصل ہوتی ہے۔ اس دھیان کی علت غائی یہ ہے کہ آدمی سب طرف سے توجہ ہٹا کر آتما کی طرف لگائے۔ اور آتم گیانی ہو جائے۔ چونکہ دھیان کا عمل کرم ہی میں داخل ہے۔ اور آتم گیانی ہو کر کرم چھوڑنا پڑتا ہے۔ اس واسطے کرم کرنے اور سنیاس کی بحث کو پہلے اٹھاتے ہیں +

६१०

६/१

श्रीभगवानुवाच ।

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ॥ स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ॥ १ ॥

दोहा—कर्मफलनिचाहैनहीं, करैकर्मनिह्काम ।
योगीसंन्यासीवही, पावतुहैसुखधाम ॥ १ ॥

कर्मयोग कहिके अब ज्ञानकर्म साध्य आत्मदर्शनरूप योगाभ्यास कहते हैं. तहां कर्मयोगकी अपेक्षा रहित योगसाधनत्व दृढ करनेको ज्ञानाकार कर्मयोगको योग शिरोमणि कहते हैं सो ऐसे कि, जो कर्मफलको नचाहताभया स्ववर्णाश्रमोचित करने योग्य कर्मको करता है सो संन्यासी है और योगी है. जिसने अग्निकर्मको त्यागा है सो संन्यासी और योगी नहींहै और जिसने क्रियाकर्मको त्यागाहै सोभी संन्यासी योगी नहींहै ॥ १ ॥

"यहां एक श्रीकृष्णका अभिप्राय औरभी दीखताहै कि, कलियुगमें संन्यासका निर्वाह होगा नहीं. क्योंकि मनुष्योंकी बुद्धि चंचल होगी. सो देखनेमेंभी आता है कि, जो घर छोडते हैं तौ संन्यासी होके मठ बाँधिके व्यापार करते हैं. जो स्त्रीविवाहित नहीं तौ परस्त्रीगमन करते हैं. पुत्रोंकी जगह शिष्य करते हैं; ऐसेही औरभी सामानगृहस्थोंसे अधिक रखके केवल प्रपंचरत होते हैं इससे श्रीकृष्णने निष्कामकर्म कर्त्ताहीको संन्यासी योगी कहा है और अग्निकर्म तथा क्रियात्यागनेका निषेध किया है" ॥ १

۱۔ کرم میں نہ پھل کی رکھے جو کہ آس
فرض جان کر کرم کرتا ہے خاص
وہ سنیاسی سچا وُہی یوگی سچا
نہ وہ جو کہ اگنی کے جاوے نہ پاس

۱۔ جو ثمرۂ فعل کا تعلق چھوڑے — ہاں کارکردنی کرے بھی سارے
وہ سنیاسی ہے اور یوگی نہ کہ وہ — جو چھوڑے اگنی ہو تریا کچھ نہ کرے

He that performeth such action as his duty, independently of the fruit of action, he is an ascetic,* he is a Yogi, not he that is without fire, and without rites. (1)

The Blessed Lord said :—

1. Who doeth work which should be done,
Not seeking "fruits," a *Yogin* is,
And a renouncer [1] too : not he
Who lights not ritual fires,[2] nor works.

छेवां अध्याय

श्री भगवानोवाच

छड्ड के आसरा कर्म फलां दा
करन योग जो कर्म कमांदा
ओह है त्यागी ते सन्यासी
ओह है पूरन योगाभ्यासी
करम हीन निरअग्नी भोगी
न सन्यासी न ओह योगी । १ ।

(۱)

تارکِ مسرور ہے بے واسطہ افعال سے
وہ نہیں تارک جو آدابِ شریعت چھوڑ دے

The Blessed One resumed.

WHOSO, without concern for gain,
takes up such Work as needs be done, 1
Is true Renouncer,—Worker, too—
Not so the homeless, shiftless drone.

केवल किया, अग्नि के त्यागी, योगी नहीं सुना है पार्थ !
फल आशा तज कर्म किए हो, योगी सन्यासी निस्वार्थ ।

फल तज योग्य कर्म जो करता वह योगी संन्यासी जान ।
हवन, कर्म तजनेवालेको सच्चा योगी कभी न मान ॥

दोहा—कर्मयोगको जो करै फलइच्छाको त्याग ।
सो ज्ञानी अरु योगयुत कीने तिन सभ याग ॥ १ ॥

ہو کر بے لوث فکر انجام — کرنے والے جو کرتے ہیں کام
از سرتاپا ہیں ترک کامل — در اصل ہیں جوگیوں میں شامل
بن کر دنیا میں ترک مشرب — رکھتا نہیں آگ سے جو مطلب
گو قائل کردنی نہیں ہے — ہرگز مرد غنی نہیں ہے

जो करता कर्तव्य निज, फल की इच्छा त्याग ।
संन्यासी योगी वही, अरु ज्ञानी महाभाग ॥१॥
जो करता शुभ कर्म न, करता न अग्नि प्रचण्ड ।
नहीं महात्मा सिद्ध वह, जन है निरा उद्दण्ड ॥२॥

जिस नूं सब सन्यास बुलावन
योग उस्से नूं जाण तूं अर्जुन
जो संकल्प न त्यागे मन दा
सो नर योगी कदे न बणदा । २ ।

۲- سنیاس ہے جس چیز کا اے ارجن نام   یوگ اس کو ہی تو جان کسے اس میں کلام
جس نے چھوڑی نہ کرم پھل کی خواہش   یوگی کب ہو سکا وہ اے نیک انجام

यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पांडव ॥ न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन ॥ २ ॥

दोहा--जाकोसंन्यासीकहैं, वहयोगीतूजानि ।
विनुसंन्यासहिंयोगनहिं, यहैसाँचतूमानि ॥ २ ॥

अब कहेभये कर्मयोगमें ज्ञानभी दिखातेहैं. हे पांडुपुत्र ! जिसको संन्यास कहतेहैं उसको अभेदकरके योग जानो जिसवास्ते कि, कर्मफल संकल्पत्यागेबिनाँ कोईभी योगी नहीं होतोहै. अर्थात् कर्मफलको ईश्वरार्पण कियेविना योगी संन्यासी होता नहीं. जो कर्मफलको ईश्वरार्पण करताहै वही योगी और संन्यासीहै ॥ २ ॥

That which people call 'renouncing' 2.
is truest 'grasping,' be thou sure.*
None, indeed, becomes 'God-Grasper'
with selfish forethought unrenounced.

२

जिसे कहें संन्यास उसे ही योग चाहिये कहना वीर ! ।
संकल्पोंके त्याग बिना नर योगी होता कभी न धीर ॥

दोहा--कर्मयोग अरु ज्ञान ये दोनों एकसुरूप ।
आत्मज्ञानविन ना बने कर्मयोगको रूप ॥ २ ॥

۲ وہ سنیاسی جس کو پکارے ہے وید
وہی یوگی اس میں ذرا ناہیں بھید
وہ یوگی جو سنکلپ کو تیاگ دے
نہ وہ جو کہ کاموں کو کرتا ہے چھید

That which is called renunciation, know thou that as Yoga, O Pândava; nor doth any one become a Yogî with the formative will † unrenounced. (2)

2. What people call renouncing works,
O Pāṇḍav, know that that is *Yog*;
No man a *Yogin*, e'er can be,
Who all his thoughts [3] has not renounced.

(२)

कहते हो सन्यास जिसे तुम, कहलाता है वह ही योग;
संकल्पों का त्याग किए ही, मिलता है योगी को योग।

(۲)

ترک کہتے ہیں جسے وہ درحقیقت ہے وصال
کوئی واصل ہو نہیں سکتا بلا ترکِ خیال

योग उसे ही जानिये, कहा जाय संन्यास।
हे पाण्डु के वीर सुत! फल त्याग संन्यास ॥३॥
फुरना मन का त्याग न, करे जो कई अधीर।
योगी कबहुं न हो सके, चाहे सहे लख पीर ॥४॥

۲

ارجن جو اصولِ ترک کا ہے — اک نام عمل کا دوسرا ہے
رستے یہ جُدا جُدا نہیں ہیں — یکساں باہم یہ بالیقیں ہیں
آئینہ صفت یہ صاف ہے بات — جب تک نہ ہو تارکِ خیالات
عامل انساں نہیں ہے کوئی — کامل انساں نہیں ہے کوئی

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते ॥ योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥ ३ ॥

दोहा--योगहिकर्मनितेलहत, ज्ञानीचित्तविचारि।
योगलहैशान्तिहिगहै, विषयइंद्रियनिमारि॥ ३ ॥

आत्मज्ञानकी प्राप्ति चाहनेवाले मननशीलको ज्ञानप्राप्तिकारण कर्म कहाहै उसी ज्ञानप्राप्तिभयेको मुक्तिकारण संकल्पविकल्पत्यागपूर्वक कर्महीं कहाहै ॥ ३ ॥

For th' aspirant in search of P o i s e §, 3
the means laid down is [selfless] Work;
The same, once grown *Adept* in P o i s e,
finds Peace laid down as means for h i m.

३

योगसिद्धि-इच्छुक मानवके लिये कर्म कारण है, पार्थ !।
योग सिद्ध होनेके पीछे कारण होती शान्ति यथार्थ ॥

दोहा--आतमदर्शनक मना जिस सो साधे धर्म।
आतमदर्शन साधके दृढ हो तहँ तज कर्म ॥ ३ ॥

۳- رہنا چاہے جو یوگ کا شہسوار
کرم روپ چابک رہے ہاتھ دھار
جو پھر یوگ میں پختہ رہنا چاہے
تو شم دم کو اپنا رہنا لیوے یار

For a sage who is seeking Yoga, action is called the means; for the same Sage, when he is enthroned in yoga, serenity is called the means. (3)

(۳)

شوق جبتک ہے پسِ پردہ جمالِ یار ہے
ہٹ گیا پردہ تو پھر دیدار ہی دیدار ہے

۳ - ہے یوگ پہ جس شخص کو چڑھنا منظور
اعمال ہی بس اُس کا وسیلہ ہیں ضرور
ہاں چڑھ گیا جب یوگ کے درجوں پر وہ
ہوتا ہے وسیلہ شانتی یعنی سرور

3. For that wise man who seeketh *Yog*,
The means [4] is action said to be;
For that same sage when Yog-enthroned,
'Tis said, the means quiescence is.

योग मारग जो कदम उठांदा
उस दा साधन कर्म कहांदा
जद मुनी योग रूड़ हो जावे
उस दा साधन शमां कहावे । ३ ।

(३)

करें कर्म्म निष्काम भाव से, पाते वही योग अनुराग;
योगारूढ़ नरों को हितकर, होता संकल्पों का त्याग।

चढना चाहे सीढियां, योग की मुनि सुजान।
कर्म ही करे सहायता, गुर मोटा पहिचान ॥५॥
योगविषय जब चुके कर, साधक साधन सर्व।
सिद्ध हुए को शान्त ही, रहना ठीक सगर्व ॥६॥

ہر اک حالت میں رہ کے یکساں
ہے اس عارف کے حق میں یہ خوب
اس شمع سے جس کو لو لگی ہے
بحرِ دل ہو کبھی نہ موّاج

جو یوگ میں وصل کا ہے خواہاں
عامل رہے بے نیازِ مطلوب
انسب اس کے لئے یہی ہے
ہاتھ آجائے سکوں کی معراج

इन्द्रियां थों जो मन मोड़े
कर्म फलां विच चित्त न जोड़े
सब संकल्प त्याग दिखलावे
सो नर योगा रूढ़ कहावे । ४ ।

۴۔ اعمال میں جب پھنسے نہ انساں کا دل
اور وہ نہ ہو لذّات کی جانب مائل
اُٹھ جائے خیال ثمرۂ فعل تمام
یہ یوگ آروڑھ کی ہے آخر منزل

यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ॥ सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥

दोहा--विषयनिसोंअरुकर्मसों, होइप्रीतिजबदूरि ।
सबसंकल्पनिकोतजै, योगरहैभरपूरि ॥ ४ ॥

जबै नै इंद्रियोंकें विषयनमें नैं कर्मोंमें आसक्तहोय तब सर्वसंकल्पोंका त्यागी योगारूढ कहाताहै इससे कर्मकरना अवश्य है ॥ ४ ॥

When man no longer is attached 4
to things of sense or fruits of act,
All selfish forethought given up,
Adept in Poise is He then called.

४

अनासक्त विषयोंमें रहकर कर्मोंमें भी रखे विरक्ति ।
तज देवे संकल्प सभी तब योगारूढ़ कहाता व्यक्ति ॥

दोहा—बाह्यविषय अरु कर्मसे आपहि संग छुट जाय ।
तजैं कामना सकल तब योगारूढ कहाय ॥ ४ ॥

۴۔ وشے اندریوں کے گراتے نہیں
کرم ہیں بھی جس کو پھنساتے نہیں
اُسے کہتے ہیں یوگ کا شاہ سوار
کہ سنکلپ نزدیک آتے نہیں

When a man feeleth no attachment either for the objects of sense or for actions, renouncing the formative will,* then, he is said to be enthroned in yoga. (4)

4. A man when he is not attached
To action, nor to things of sense;
When all his thoughts [5] he has forsworn,
He then is called the *Yog*-enthroned.

(४)

कर्म्म और विषयों से मन को, जो नर कर देते हैं दूर;
सब संकल्पों को तज देते, योग वही पाते भरपूर ।

(۵)

وسوسہ جب دل سے مٹ جاتا ہے آتی ہے نظر
جملہ نیرنگِ جہاں میں ذاتِ واحد جلوہ گر

योग में पूरा उसे ही, कहेंगे तब जन सिद्ध ।
जब मन के फुरने सभी, होने दे न प्रबुद्ध ॥७॥
इन्द्रियगण के विषय में, फंसे कर्म में भी न ।
तब निश्चय ही महात्मा, सिद्ध अन्यथा न ॥८॥

۴

دیتا نہیں جب حواس کو دل — ہوتا نہیں لذتوں میں شامل
بیگانہ ذکر و فکر انجام — کرنے لگتا ہے جب ہر اک کام
اس وقت وہ محو ترک انساں — نیرنگ خیال سے گریزاں
ہو جاتا ہے وصال منزل — کر لیتا ہے کمال حاصل

६१८

६/५

आत्मक बल दा आसरा फड़ के
आत्मा दा उद्धार तूं कर के
आत्मा उत्तम उच हो जावे
आत्मा अधोगती न पावे
आत्मा ही है अपना सज्जण
आत्मा अपना वैरी दुश्मण । ५ ।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसा-
दयेत् ॥ आत्मैव ह्यात्मनो बंधुरात्मैव
रिपुरात्मनः ॥ ५ ॥

दोहा-निजआत्माकोउद्धरत, अधोगमननहिंदेय ।
आतमहीरिपुआपको, आतमहीसुखदेय ॥ ५ ॥

ऐसे आपके वश मनकरके आपको उद्धार करना, आपका अवसाद याने घात याने अधोगति नकरना. कारण कि, आपका मनही आपको मित्र है और वह मनही आपका शत्रुहै ॥ ५ ॥

۵۔ انساں کرے آتما سے تحصیل کمال
اور نہ اپنی آتما کو خود کرے زوال
دشمن بھی آتما کا خود آتما ہے
اور دوست بھی خودی سے خودی اس کا ہے

¶Let self in man be raised by Self, 5
let him not make a hell for self‡.
For Self alone is self's true friend:
Self also is the foe of self.‡

५

निज उद्धार करे निजसे नित, निजको नहीं गिरावे, तात !।
आत्मा ही आत्माका वैरी आत्मा ही आत्माका भ्रात ॥

दोहा--मनशुद्धसोंउद्धारकर अपने नाश न ठान ।
मन शुध बंधु अशुद्ध मन अपनो वैरी मान ॥ ५ ॥

۵۔ اگر چاہے تو آتما کو بچا لے
نہ واجب کہ تو اپنے کو گرا لے
یہی آتما آتما کا ہے مِتر
یہی آپ کو اپنا دشمن بنا لے

Let him raise the self by the SELF and not let the self become depressed; for verily is the SELF the friend of the self, and also the SELF the self's enemy; (5)

5. Let each man raise himself by self,
Let him not trample on the self;
For self alone is friend of self,
And self too is the foe of self.

(५)

जीवात्मा ही, मित्र शत्रु है, नहीं अधोगति को हो प्राप्त:
निज उद्धार करें वे जग से, हुआ ज्ञान जिन को यह व्याप्त ।

(۵)

دل ہے اپنا دوست تا وقتیکہ بے پندار ہے
دشمن اپنا دل ہے جب افعال کا مختار ہے

निज आत्मा करे उच्च ही, आत्मसहायता पाय ।
दु:खी न आत्मा को करे, कष्ट चाहे लख आय ॥९॥
कारण यह कि यह आत्मा, ही है वास्तव भ्रात ।
यही शत्रु भी परम है, अरु करे आत्मघात ॥१०॥

۵

انساں کی ہے اس میں ہوشمندی — خود ہی حاصل کرے بلندی
مائل نہ کبھی ہو سوئے پستی — دیکھے ہرگز نہ روئے پستی
سود و بہبود کا سزاوار — ہے خود اپنا یہ دوست و غمخوار
کرتا ہے زیاں یہ خود ہی اپنا — ہے دشمن جاں یہ خود ہی اپنا

620

६/६

बंधुरात्मात्मनस्तस्य येनैनात्मैवात्मना जितः ॥ अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥ ६ ॥

दोहा—आपुहिजीतै आपुको, सोईबंधुजुयाहि ।
जिनजीत्योहैआतमा, अरिह्वैवर्त्ततताहि ॥ ६ ॥

जिसने बुद्धिकरके निश्चय मनैं जीताहै उसै जीवात्माँका मनै मित्रहै और जिसने मन नहीं जीताहै उसका मनै शत्रुत्वमें शत्रुसरीखा होताहै ॥ ६ ॥

Self is self's closest Friend for Him 6
in whom self bends to yoke of SELF;
But for the man who SELF disowns,
in menace as a foe stands Self.*

६

जिसने जीता स्वयं आपको है वह अपना बन्धु महान ।
बिन जाने वह स्वयं आपसे करे शत्रुता शत्रुसमान ॥

दोहा—मन जिन रोक्यो बाह्य सों तिस मन बंधु समान ।
विषयनसों जस ना रुके मन तिस शत्रु महान ॥ ६ ॥

۶- جنہوں نے لیا آپ سے آپ جیت
بنا آتما ان کا بندھو و میت!
نہ جیتا تو وہ آپ کا آپ دشمن
گزارا کرے جیسے دشمن کی ریت

The SELF is the friend of the self of him in whom the self by the SELF is vanquished; but to the unsubdued self*, the self verily becometh hostile as an enemy. (6)

۶- جو آتمن سے آتما کو جیت سکا اس آتمن کا آتما ہے یار سدا
اور جسے پر مطلق نا جیت سکا ہو آپ آتما ہی دشمن اس کا

आत्मा अपना मीत कहावे
जब नर अपना मन जित जावे
जब एह मन बस आवे नांहीं
आत्मा शत्रु अपने तांईं । ६ ।

(٦)

اپنے بس میں کرلیا جسنے اُسی کا دل ہے یار
جب یہ قابو میں نہیں آزار ہے اِسکا شعار

6. Self is self's friend of him in whom
The self has vanquished been by self,[6]
But of the self that's unsubdued,
The foe is verily the self.

(६)

निज सुबुद्धि से जिसने मन को, जीत, किया वश में मतिमान!
मित्र समान वही मन होता, नहीं वही हो शत्रु समान ।

٦

مالک جو خود اپنی ذات کا ہے — جس نے اسے فتح کرلیا ہے
ہے وہ اپنا ہی آپ بھائی — کرتا ہے وہ خود بخود بھلائی
لیکن جو نہیں ہے خود یہ قادر — ہے اپنی ہی معرفت سے قاصر
ناکارہ ہے خوار ہے دنی ہے — اپنے سے خود اس کو دشمنی ہے

निज आत्मा वश जिस किया, आत्मा बना तिस भ्रात ।
जो नहीं आत्मावान् है, आत्मा करे तिस घात ॥११॥
ज्यों शत्रु रहे ताक में, करने लिये कसु हानि ।
अयति का त्यों ही आत्मा, सदा ही करता हानि॥१२॥

622

जो मन जीते शान्ती पावे
द्वंदों थों जो दूर हो जावे
सरदी, गरमी, मान अपमाना
सुख दुख तिस नूं एक समाना । ७ ।

जितात्मनः प्रशांतस्य परमात्मा स-

माहितः ॥ शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा
मानापमानयोः ॥ ७ ॥

दोहा--जिनजीत्योहैआतमा, शांतिलहैबहुज्ञान ।
शीतउष्णसुखदुखजुसम, अपमानाजूमान ॥७॥

शीत उष्ण सुख और दुःखमें तैसे ही मान अपमानोंमें जीता है मन जिसने ऐसे शांतकी बुद्धि अतिशय परिपूर्ण रहती है ॥ ७ ॥

The Self-Lord, self at peace with Self, 7
a deeper SELF enshrines, e'er poised
In cold and heat, in joy and grief—
yea, poised in fame and shame as well.

७

आत्मजयी, अतिशान्त पुरुषका आत्मा रहता सदा समान ।
शीत, उष्ण, सुख, दुख भी पाकर मान तथा अपमान महान ॥

दोहा--शीत उष्ण सुखदुःख अरु मानाऽमान समान ।
समझे जो तिस ध्यानको जीव विषय हौं मान ॥ ७ ॥

۷۔ وہ جتاتما شانتی مورت سدا
دھیان اس کا ایشور میں ہووے لگا
رہے مان اپمان میں ایک رس
سکے گرمی سردی نہ سکھ دکھ گرا

The higher Self of him who is SELF-controlled and peaceful is uniform in cold and heat, pleasure and pain, as well as in honour and dishonour. (7)

(۷)

جسکو اپنے دل پہ قبضہ اور اطمینان ہے
گرم و سرد و رنج و راحت میں اُسے عرفان ہے

7. The Self [7] of him who is serene,
And self-subdued, is equipoised,
In heat and cold, in joy and pain,
In honour too and in disgrace.[8]

(७)

शीत, उष्ण, सुख, दुख, आदर भी, और अनादर द्रौपदि-कन्त !
इन को जो समान ही देखें, वही शांति पाते हैं अन्त ।

۷

گرما ہو کہ موسم زمستاں
بے قدری ہو جہاں میں یا قدر
ہر حال میں جس کا دل ہے قایم
وہ نفس کو فتح کرنے والا

ہوں رنج کے یا خوشی کے ساماں
بن جائے ہلال خواہ ہو بدر
رکھتا ہے سکوں سے کام دایم
قائل ہے فقط وجود حق کا

अन्तर आत्मा रहे टिका, दुःखसुख में इकसार ।
अपमान अरु मान में, गर्म न सर्द इकतार ॥१३॥
उस का ही जिस वश किया, पूर्णतया निज आत्म ।
किया सर्वथा शान्त ही, निस्तरङ्ग निजी आत्म॥१४॥

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेंद्रियः ॥ युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकांचनः ॥ ८ ॥

दोहा—जानतज्ञानविज्ञानको, अरुइंद्रियजितहोय ।
सोनोपाहनएकसम, गनैजुयोगीकोय ॥ ८ ॥

ज्ञान जो आत्मज्ञान विज्ञान जो विशेषज्ञान याने अनात्म आत्मविवेक इन करके जिसका मन तृप्त होय कूटस्थ याने सर्व शरीरोंमें आत्माको समान जानिके निर्विकार इसीसे जितेंद्रियत्वसे जो ठीकरी पत्थर और सोना इनको सम जान रहौ है ऐसा योगी युक्त याने आत्मदर्शनयोगयुक्त कहाँताहै ॥ ८ ॥

دوہا—آتم گیانسوں تریت چت جت اندری سمیوگ

۸۔ علم و اشراق سے ہے جس کو تسکیں ہے نفس کش اور جس کو ہل چل ہی نہیں
یکساں ہے خاک سنگ اور زر جس کو واصل کہتے اسی کو ہیں اہل یقیں

८

ज्ञान तथा विज्ञान-पूर्ण जो हो कूटस्थ, जितेन्द्रिय, पार्थ ! ।
मिट्टी, पत्थर, स्वर्ण एक-सा जो जाने सो युक्त यथार्थ ॥

ज्ञान अते विज्ञान वधावे
थिर चित्त हो के तृप्ती पावे
जती जितेन्द्री तत्त पछाणे
मिट्टी सोना इक सम जाणे
जो इस ज्ञान तत्त नूं पावे
सो पूरण योगी सदवावे । ८ ।

¶ Content with SELF, and Knowledge true, 8
Rock-steady, senses well in hand,
The Poised One† is 'at-One,' they say,—
clod, nugget, stone, the SAME to Him.

दोहा—आत्मज्ञानसों तृप्तचित जित इन्द्रिय समयोग ।
कनकमृत्तिका तुल्य जिस सो निजदर्शन जोग ॥ ८ ॥

¶ 8. With wisdom and with knowledge filled [9]
Unwavering and sense-subdued,
The *Yogin* who regards alike
Gold, stone, or clod is saint [10] indeed.

۸ - جسے گیان و گیان کا ہے دو بیک

جو اندریوں کو جیتے پرش کوئی نیک
سچا یوگی کہتے ہیں اس کو پیارے
جو لوہے و سونے کو جانے ہے ایک

The Yogi † who is satisfied with wisdom and knowledge, unwavering,‡ whose senses are subdued, to whom a lump of earth, a stone and gold are the same, is said to be harmonised. (8)

(۸)

ہے وہ واصل جسکا دل ہے مرکزِ علم و سُرور
بے تعلّق بے غرض بے نفس ہے مستِ حضور

(८)

हुए तृप्त विज्ञान ज्ञान से, इन्द्रियजित, विकार से हीन;
पाहन, मिट्टी, कंचन सम कर, देखें योगीराज प्रवीन।

۸

علمِ حق سے ہے جس کا دل سیر — جس کے سارے حواس ہیں زیر
جو اصل جہاں سے آشنا ہے — اُس کی تہ تک پہونچ گیا ہے
مٹی سونا ہو خواہ پتھر — سب جس کی نظر میں ہیں برابر
عامل وہ بشر ہے برگزیدہ — کہتے ہیں سب اُس کو حق رسیدہ

पूर्णतया जिस जीत लीं, हैं इन्द्रिय निज सर्व।
बुद्धि मन सन्तुष्ट हो, गये ज्ञान पा सर्व ॥१५॥
विज्ञान भी प्राप्त कर, हुआ जो स्वात्मप्रविष्ट।
जुडा हुआ परमात्म से, योगी कहा विशिष्ट ॥१६॥
सोना मिट्टी दीखते, पत्थर भी तद्रूप।
आत्मा नहीं तिस डोलता, लखे जो सब इक रूप॥[illegible]

६/८

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबंधु-
षु ॥ साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धि-
र्विशिष्यते ॥ ९ ॥

दोहा–मित्रउदासीशत्रुपुनि, अरुनिजबंधुसमान।
साधोपापीचित्तमें, गनैयेकछुउनमान ॥ ९ ॥

सुहृद् जो प्रत्युपकारविना हितकारक मित्र परस्पर उपकारी अरि शत्रु उदासीन जो प्रीति वैर रहित मध्यस्थ जो सर्वकाल प्रीति वैर समान द्वेष्य जो सदा ईर्षा करता होय सो जो सदाहितेच्छु सो बंधु जो धर्म शील सो, साधु और जो पापशील सो पापी इन सबोंमें भी जो समबुद्धि होयँ सो श्रेष्ठ है ॥ ९ ॥

सुहृद, मित्र, मध्यस्थ, उदासी
बंधू, वैरी, साधू, पापी
सभनां वल इक सम जो वेखे
सो नर योग तत्त नूं भेखे। ६।

Elect, who bears Good-Will alike
to friends, well-wishers, ill-wishers; 9
To strangers, neutrals, foes, allies;
to saints,—to sinners just the same.

۹۔ وہ اس سے بھی برتر ہے نظر میں جسکی
نیک و بد و خیر خواہ و یار و اعدا
یکساں ہے ہر ایک اور یکساں ہیں سبھی
بے مطلب و ثالث و حسود اور بھائی

६

सुहृद, मित्र, मध्यस्थ, बन्धुसे, उदासीन, रिपुसे न द्वेष।
साधु, दुष्टमें सम मति जिसकी वही पुरुष है योग्य विशेष ॥

दोहा–मित्र सुहृद अरि बंधु अरु द्वेष्य उदास समान (मध्यस्थ)।
साधु पापजन इन विषय सममति पुरुष प्रधान॥ ९ ॥

۹۔ جو اپنے پرائے متر یار ہیں
بھلے اور بُرے یار اغیار ہیں
رکھے ایک بُدھی برابر برابر
سچا یوگی جانو وہ سنسار ہیں

He who regards impartially lovers, friends, and foes, strangers, neutrals, foreigners and relatives, also the righteous and unrighteous, he excelleth. (9)

(۹)

جان لیتا ہے مساوی سب کو مردِ باکمال
اُسکو کثرت میں نظر آتا ہے وحدت کا جمال

(६)

सुहृद, मित्र, वैरी, निष्पक्षी, द्वेषी, धर्मात्मा विद्वान;
पापी, मध्यस्थी को सम कर, जो देखें हैं श्रेष्ट महान।

9. Who views alike friends lovers, foes,
And strangers, neutrals, hated ones,
Relations, good and evil men,
He is 'mongst *Yogins* most esteemed.

उत्तम वही जो समझता, पापी, साधुसमान।
भ्राता, वैरि, मित्र, प्रिय, द्वेषी को भी समान ॥ १८ ॥
जिसको वैर न प्यार है, पक्ष न किसी का ले।
योगी उससे भी सदा, उसे रीति बर्त्ते ॥ १९ ॥

۹

ہمدرد دانیں باوفا ہو بیگانہ ہو خواہ آشنا ہو
ہو صلح پسند یا طرفدار یا رشک و حسد میں ہو گرفتار
مرد صالح ہو خواہ بدکار ہو کوئی عزیز خواہ غمخوار
سب پر ہے نگاہ جس کی یکساں بیشک ہے وہ مردِ فخرِ دوراں

६/१०

आशा तज के बंधन हर के
मन चित्त अपने नूं वस कर के
वखरा बैठ एकान्त नूं लोड़े
योगी ध्यान ब्रम्ह विच जोड़े । १० ।

योगी युंजीत सततमात्मानं रहसि स्थितः ॥ एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥ १० ॥

दोहा--बैठिइकैसेइकाचितै, योगीसाधैयोग ।
एकाकीचाहनकछू, जोरैंनहिंसुखभोग ॥ १० ॥
एकेही बैठा स्ववश चित्तमनेवाला सांसारिक आशा-रहित आत्मा विना परिग्रहहितें ऐसो योगी एकांतमें बैठाभैया मनको निरंतर परमात्मामें लगातारहै ॥ १० ॥

۱۰- یوگی کو یہ لازم ہے کرے دھیان سدا کنج تنہائی میں اکیلا بیٹھا
نفس سرکش کو ہر طرح سے روکے لالچ بھی نہ ہو اور نہ خواہش اصلا

¶ The Poised One, in his Secret Place, 10
should constantly for W h o l e n e s s strive,
Alone, his mind and heart at-One,—
nor hope for self, nor thought of gain.

१०

योगी चित्तजयी एकाकी, करे सदा एकान्तनिवास ।
तजकर आशा, संग्रह सारे, करे निरन्तर योगाभ्यास ॥

दोहा—एकाकी जितचित्त मन इच्छा ममता छोड ।
नित मनको निजदर्शमें योगकालमें जोड ॥ १० ॥

۱۰- سدا آتما کو جو وس میں کرے
اکیلا رہے آس سب پہ ہرے
ضرورت سے زیادہ رکھے نا ہیں پاس
اسی یوگ مارگ سے یوگی ترے

Let the Yogi constantly engage himself in yoga, remaining in a secret place by himself, with thought and self subdued, free from hope and greed. (10)

(۱۰)

بیٹھکر گوشہ میں تنہا۔ باندھ کر اپنا خیال
فارغ از بیم و رجا رہنے میں ہے رازِ کمال

¶ 10. Alone and in a secret place,
A *Yogin* should compose his mind [11]
Unceasingly : with mind and self [12]
Restrained : and free from hope and greed.

(१०)

मन, शरीर, इन्द्रिय को वश कर, त्याग वासना संग्रह भोग;
आशा तज एकाकी हो कर, शुद्ध हृदय से साधै योग।

۱۰

یوگی کے لئے ہے یہی زیبا
دِل جسم حواس سب پہ غالب
پابندئ مُدعا سے آزاد
رکھے شغل توازن دل

اِک کونے میں بیٹھ کر اکیلا
ہوکر نہ کسی بھی شے کا طالب
دامِ بیم و رجا سے آزاد
ہر طرح سے یوگ میں ہو کامل

लालच त्यज अरु आस त्यज, वश कर मन अरु आत्म।
रहे अकेला एकान्त में, जोड आत्म परमात्म ॥ १० ॥

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासन-
मात्मनः ॥ नात्युच्छ्रितं नातिनीचं
चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥ ११ ॥ तत्रै-
काग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रिय-
क्रियः ॥ उपविश्यासने युञ्ज्याद्यो-
गमात्मविशुद्धये ॥ १२ ॥

दोहा—ठौरपुनीतनिहारिकै, करिआसनविस्तार।
नहिंऊँचौनीचौनहीं, पटकुशअजनविथार ॥११॥
करिबैठैमनकोजुथिर, सबइंद्रियनकोजीति।
करिकैआतमशुद्धको, योगकरैइहिरीति ॥ १२ ॥

अब योगाभ्यासमें आसन नियम कहतेहैं. जैसे कि, पवित्रस्थानमें न अति ऊंचो न अतिनीचा कुशासनपर

मृगचर्मादिक उसे पर वस्त्र ऐसा और थिर आपका आसन बिछाईके उसे आसनेपर बैठिके मनको एकाग्रकरैके चित्त और इंद्रियोंके कर्म स्ववशकिये भैया अपना बंधन छूटनेके वास्ते योगको करै ॥ ११॥१२॥

۱۱- ہو صاف جگہ لگائے آسن وہ جہاں
ہلنے جلنے کا جس میں مطلق نہ گماں
نیچا ہو بہت اور نہ وہ اونچا ہو بہت
ہو گھاس پہ کپڑا اور کپڑے پر کھال وہاں

۱۲- قلب صافی کو اپنے یکسو وہ رکھے
روکے سارے حواس اور من روکے
اور یاں اپنی صفائے باطن کے لئے
آسن پر بیٹھ کر ریاضت وہ کرے

११

योगी अपने आसनको स्थिर करे देख सम, पावन देश।
प्रथम कुशा, कुशपर मृगछाला, उसपर डाले वस्त्र विशेष ॥

१२

मनको कर एकाग्र, रोककर चित्त और इन्द्रिय-व्यापार।
आत्म-शुद्धि-हित उस आसनपर जचकर साधे योगाचार ॥

۱۱- رچ آسن لگاوے جگہ پاک میں
نہ نیچی جگہ ہو نہ افلاک میں
کشا پہ مرگ چھال اوپر ہو کپڑا
وہاں بیٹھ رہے ایش کی تاک میں

11. Established on a seat secure
Too lofty neither nor too low;
And in some clean place, and covered o'er
With cloth and skin and *kusha* grass.[13]

34

६
११—१२

631

शुद्ध, पवित्तर थां ते जावे
थिर चित्त हो के आसन लावे
हेठ कुशा उप्पर मृग शाला
उप्पर इक वस्तर उज्याला
आसन इक सम सुचा होवे
न नींवां न उच्चा होवे
उस पर बैठ एकागर होके
इन्द्रियां दी बिरती रोके
आतम शुद्धि विच चित्त लावे
योगी योगाभ्यास कमावे । ११ । १२ ।

11
In a *pure* Spot, having raised him
a Platform firm on which to sit,
Nor too high, nor too low, decked with
cloth, deerskin, lastly *kusha*-mat ;—

12
There, his mind in o n e Point focussed,
all thought and sense-impulse reined in,
Settled on his Seat, he'll labour
In Yóga to wash out his stains.

दोहा—ना ऊंचा ना निम्न अति वसन चर्म कुश लाय ।
शुद्धभूमिमें आपनो आसन लेय बिछाय ॥ ११ ॥
यत चित्त इंद्रिय एकाग्र तिस (आसन) पर बैठे आय ॥
बंधमुक्तिके हेतु मन निजदर्शनमें लाय ॥ १२ ॥

12. He should, his mind one-pointed made,
Its workings and of sense restrained,
There firmly seated, practise Yog,
For thorough cleansing of the self.

With cloth and skin and *kusha* grass.[13]

632

६

११-१२

(۱۱)

چاہیے مرگ چرم گاڑھا یا کُشا کا بندوبست
پاک مسکن میں بہت اونچی نہ نیچی ہو نشست

(۱۲)

لوحِ خاطر سے مٹا کر وسوسے اور خواہشیں
فرض انسانی ہے مشغولی صفائے قلب میں

(११)

नहीं अधिक ऊँचा नीचा हो, शुद्धि भूमि करके निर्धार;
कुश मृग छाला की आसन युत, उपरोपरि वस्त्रों को धार।

(१२)

मन इन्द्रिय को बश में करके, बैठे आसन पर गुण रास !
अंतःकरण शुद्ध करने को, करै योग का फिर अभ्यास।

In a pure place, established on a fixed seat of his own, neither very much raised nor very low, made of a cloth, black antelope skin, and Kusha grass, one over the other; (11)

There, having made the mind * one-pointed, with thought and the functions of the senses subdued, steady on his seat, he should practise yoga for the purification of the self. (12)

योगी ऐसा मेल ही, साधे सदा चित्त लाय।
देश पवित्र में वास कर, दृढ आसन ही जमाय॥२१॥
आसन ऊंचा हो नहीं, नीचा भी नहीं होय।
कुशा बिछी मृगछाल पुनः, वस्त्र पुनः शुभ हो ॥२२॥

उस आसन पर बैठ कर, इन्द्रिय चेष्टा रोक।
एक नोक पर मन टिका, चिंताएं सभी रोक ॥२३॥
सुपवित्रता प्राप्त ही, करने निजी निमित्त।
आत्मिक संयम् योग शुभ, साधे ईशनिमित्त ॥२४॥

۱۱

ہو ایسی جگہ نشست اس کی — جو آئینہ ساں ہو صاف ستھری
یہ بات بھی ہے بہت ضروری — نیچی ہو جگہ بہت نہ اونچی
اس طرح نشست پھر جمائے — پہلے سب سے کشا بچھائے
ہو بیچ کا فرش مرگ چھالا — کپڑے کا ہو فرش فرش بالا

۱۲

یوں جب سر فرش بیٹھ جائے — دھیان ایک طرف فقط جمائے
ہو جائیں دل و دماغ یکسو — افعال حواس پر ہو قابو
بھٹکیں نہ ادھر اُدھر خیالات — ہرگز نہ ہوں منتشر خیالات
مشغول مزاولت ہو شاغل — جس سے ہو صفائے قلب حاصل

638

६
१३—18

बैठे योगी धारनां धर के
सिर, धड़, गल, इक सेधे कर के
चित थिर कर इक पासे लावे
नक दे सिरे ते ध्यान जमावे
आसियों पासियों बिरती रोके
ब्रह्म चितारे योगी हो के ।१३।

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरम् ॥ संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥ १३ ॥ प्रशांतात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ॥ मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥ १४ ॥

दोहा–कायाशिरअरुग्रीवको, राखैएकसमान ।
डीठिधरै निजनासिका, पेखैनहिंदिशिआन ॥ १३ ॥
शांतिगहैभवकोतजै, ब्रह्मचर्य्यव्रतलेय ।
मोमेंराखैरोकिमन, लैहैयोगकोसेय ॥ १४ ॥

अब बैठनेका नेम कहतेहैं–काया जो मध्यशरीर शिर और ग्रीवा इनको अचेल थिर और सम राखे भये आपके नासिकाग्रको देखिके और औरें ओर नदेखताभया प्रशांतचित्त भयरहित ब्रह्मचर्यव्रतमें स्थित मेरेमें चित्तलगाये भये मनको नियमितकरके आत्मनिष्ठ पुरुष मेरेमें लीनभयाहुआ बैठारहै ॥ १३ ॥ १४ ॥

۱۳۔ یکساں رکھے جسم و سر و گردن کو تن / ایسا کہ ہلے جلے نہیں وہ اصلا
اگلے حصے کو ناک کے آپ وہ دیکھے / جائے نظر اسکی ادھر جانب نہ ذرا

आतमा जिस दा शान्ती पावे
जो प्राणी निरभय हो जावे
ब्रह्मचर्य्य ब्रत विच्च थिर हो के
मन नूं आसियों पासियों रोके
मुझ विच्च ही चित्त आपना जोड़े
सर्व स्रेष्ट मुझ नूं जो लोड़े
सो नर परम शान्ती पाके
बैठे योग समाधी लाके । १४ ।

With body, head and neck held straight 13
and steady, sitting motionless,
His gaze fixed where the B r e a t h flows forth,
and not allowed to roam in space.

At peace with Self, all fear long past, 14
in steadfast vow of Continence,
His mind reined in while full of ME
let him sit rapt in ME, at-One.

१३

धड़को, शिरको, ग्रीवाको फिर रख सीधी सुस्थिर होकर ।
दृष्टि नाकके अग्रभागमें जमा, न देखे इधर उधर ॥

१४

शान्तचित्त हो ब्रह्मचर्य-व्रत रखता हुआ निडर होकर ।
मन-संयम कर, मुझमें चित दे युक्त बने होकर मत्पर ॥

दोहा—स्थिर सीधा अरु अचलकर शिर ग्रीवा अरु काय । (युग्मक)
नासिकाग्रमें दृष्टिधर इत उत कछु न दिखाय ॥ १३ ॥
मन प्रसन्न संयत कर ब्रह्मचर्यव्रत ठान ।
मोमें चित्त लगायके सदा करै मम ध्यान ॥ १४ ॥

Holding the body, head and neck erect, immovably steady, looking fixedly at the point of the nose, with unseeing gaze. (13)

The self serene, fearless, firm in the view of the Brahmachari,* the mind † controlled, thinking of Me, harmonised, let him sit aspiring after Me. (14)

(۱۳)
راست قائم کر کے اپنا جسم گردن اور سر
شاغل اپنی ناک کے بانسہ پہ ٹھیرائے نظر

(۱۴)
بیم اور امید سے جب قلب اُسکا پاک ہو
جلوۂ وحدت میں نورِ ذات کا ادراک ہو

६३६

६
१३–१४

13. With body, head and neck erect
And steady, sitting motionless,
The gaze upon the nose-tip fixed,
And wand'ring not to things around,

14. With self serene, and free from fear,
Firm in the *Brahmachāri's* vows [14]
The mind controlled and on Me fixed,
Let him, attuned, sit wrapt in Me.[15]

(१३)

काया, शिर, ग्रीवा को थिर कर, अन्य दिशाओं से तेज ध्यान;
रक्खे ग्रीवा-अग्र-भाग पर, दृष्टि अचल दृढ़ हो मतिमान !

(१४)

भय तज शांत चित्त हो बैठे, वर व्रत ब्रह्मचर्य्य में लीन;
मन थिर करके हो जावे फिर, योग ज्ञान में वह आसीन।

۱۳

گردن سر پشت سب ہوں ہموار — جھکنے پائے نہ کوئی زنہار
جنبش نہ ہو جسم کو ذرا بھی — جاری رہے مشق ضبط دل کی
ڈھونڈھیں نہ اِدھر اُدھر کی راہیں — ہوں ناک کی نوک پر نگاہیں
اٹکیں تو وہیں پہ جا کے اٹکیں — پھر اور کسی طرف نہ بھٹکیں

۱۴

نفس حیواں کی گرد سے پاک — پابند تجرّد اور بیباک
مسرورِ سکونِ قلب ہُشیار — مالک مرضی کا دل کا مختار
خاطر رکھے اپنی ہر طرح جمع — لو مجھ سے لگائے صورتِ شمع
اس طرح ہو بحر عشق میں غرق — مجھ میں اس میں نہ کچھ رہے فرق

धड गरदन सिर एकही, रेखा में हो समान ।
टिकें रहें सु अडोल ही, हों न चलायमान ॥ २५ ॥
निजी नाक की नोक ही, दिखती रहे इक सार ।
इधर उधर कुछ दिखे न, सर्व दिशा हों असार ॥ (13) ॥

ब्रह्मचर्यके नियम में, पक्का रहे सुदृढ ।
पूर्णतया भय त्याग दे, मन वश करे सुदृढ ॥ २७ ॥
चिंताएं तव कृष्णकी, हीं उठतीं चित्त मांह ।
उस योगीके मानता, जो मुझ को ही छांह ॥ (14) ॥

शांत हुआ तिस आत्मा, पूर्णतया सुखी शांत ।
ऐसी स्थितिमें टिक रहे, जुडा ब्रह्मसे सुशांत ॥ 14 ॥

632

६ / १५

युंजन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः ॥ शांतिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति ॥ १५ ॥

दोहा-याहिविधिकरैजुयोगको, निजमनकोथिरराखि ।
शांतिलहैसोकोमिलै, रहैअसीरसचाखि ॥ १५ ॥

ऐसे नियममें मनहै जिसका ऐसा योगी ऐसें ही सर्वकालमें मनको मेरेमें लगाताभया आनंदहै परमजिसमें ऐसी मेरेसदृश शांतिको पावंताहै ॥ १५ ॥

योगी मन नूं वस कर लैंदा
सदा आतमा विच रम रहंदा
तद ओह परम शान्ती पांदा
ब्रह्म लीन तद मुक्त हो जांदा । १५ ।

۱۵- اس طرح سے من روک کے اپنا یوگی || جس کی ہے آتما سدا مجھ میں لگی
پاتا ہے وہ شانتی کہ نروان ہے نام || جو میری ہے ذات جو ہے مجھ میں رہتی

Thus, for W h o l e n e s s ever striving, 15
the Will-Poised Sage, of mind restrained,
Enters PEACE, in ALL-REST§ ending,
that nowhere but in ME abides.

१५

नियत-चित्त जो योगी ऐसे सन्तत रहता योगासक्त ।
मुझमें स्थित, निर्वाण-रूपिणी शान्ति वही पाता है भक्त ॥

दोहा—मोमें चित्त लगायके इसविध संतत हि तात ।
परमशान्तिमयिमुक्तिको जितचित योगी पात ॥ १९ ॥

۱۵- جو ایسا کرے کوئی ابھیاس کو
و من قابو کرے جیتے وسواس کو
پرم پد کی مکتی وہ حاصل کرے
ہیرے دھام سندر کو اور خاص کو

The Yogi ever united thus with the SELF, with the mind† controlled, goeth to Peace, to the supreme Bliss‡ that abideth in Me. (15)

(۱۵)

ضبطِ دل کا ورد جو انسان کرتا ہے مُدام
اُس کو باطن میں نظر آتا ہے جاناں کا مقام

15. Thus e'er attunèd with the Self,
With mind brought under full control,
The *Yogin* doth attain that Peace,
The Bliss Supreme [16] which dwells in Me.

(१५)

इस प्रकार आत्मा को प्रभु में, सतत लगाता जो नर श्रेष्ट;
वह स्वाधीन चित्त का योगी, परम शांति पाता मति जेष्ट !

۱۵

رہ کر مشغُول شغل شاغل
سے جادہ ضبط دل کا سالک
پاتا ہے وہ سکون کامل
جس کا منبع ہے ذات میری

ذات برتر میں ہو کے واصل
اس مِلک کا بن کے آپ مالک
کرتا ہے وہ سرور حاصل
یعنی جو ہے کائنات میری

यूं निज आत्माको सदा, योगी जो रहा जोड ।
मन वशकर निज सर्वथा, जगसे नाता तोड ॥[illegible]॥

मोक्ष ही परम सुशांति, परमात्माश्रित् जौन ।
मुझे प्राप्त कर पाय वह, योगी सदा रहे मौन ॥[illegible]॥

६/१६

अन्न खावन अन्न भोजन त्यागणा
यों अन्न सौवणा यों अन्न जागणा
इस अन्न थीं कम चलदा नाहीं
योग तिन्हां दा फलदा नाहीं । १६ ।

۱۶۔ یوگ اس کے لئے نہیں جو بہت کھائے ۔ یا بھوک سے جس کی جان پہ بن جائے
جس کی عادت ہو بہت سونے کی ۔ یا جو جاگے نہ نیند اس کو آئے

नात्यश्नतस्तुयोगोऽस्ति न चैकांत-
मनश्नतः ॥ न चातिस्वप्नशीलस्य
जाग्रतो नैव चार्जुन ॥ १६ ॥

दोहा—योगलहैनहिंवहुसखे, विनभाषेतूमित्त ।
सोवतहूंसोवैनहीं, अतिजागतहूंमित्त ॥ १६ ॥

अब योगीके आहारादिकोंका नियम कहते हैं—जैसे कि, हे अर्जुन ! जो अतिभोजन करता है उसका योग नहीं सिद्धहोता है और जो कुछभी भोजन नकरै उसकाभी योग नहीं सिद्धहोताहै और अतिसोनेवालेका योग नहीं सिद्धहोताहै; अतिजागनेवालेका भी योग नहीं सिद्धहोताहै ॥ १६ ॥

Now Yóga's not a glutton's meed, 16
nor prize for fool who starves himself;
It shuns the man who sleeps o'ermuch,
yet courts not him that sleepless waits;—

१६

अति खाने, भूखे रहनेसे या अति सोनेसे भी, पार्थ ! ।
अथवा अति जगते रहनेसे योग सिद्ध हो नहीं यथार्थ ॥

दोहा—अधिकहि भोजन जो करै जो नर कछहु न खाय ।
वहुत सोय अथ सोय ना योग न तिसहु वनाय ॥ १६ ॥

۱۶ - نہ یوگی بنے دیکھو بسیار خوار
نہ ایسا کہ کھانے سے بالکل بیزار
نہیں بہت سونا بھلا یوگ میں

نہ ایسا کہ بیداری میں دے گذار

Verily yoga is not for him who eateth too much, nor who abstaineth to excess, nor who is too much addicted to sleep, nor even to wakefulness, O Arjuna. (16)

(۱۶)

کم خوری سے ہے اور نہ کم خوابی ریاضت کا حصول
پرخوری سے ہے نہ پرخوابی سے راحت کا حصول

16. O Arjun, *Yog* is not for him,
Who eats too much, who starves himself,
Nor yet for him who slumbers much,
Or who excessive vigils keeps.

(१६)

अति भोजन करने वाले या, क्षुधावन्त भी हे मतिमान !
अधिक जागने सोने वाले, पाते नहीं योग का ज्ञान ।

۱۶

دانستہ و دیدہ بالارادہ ہے جس کی غذا بہت زیادہ
خوراک قلیل یا ہے جس کی مقدار میں کم غذا ہے جس کی
یا جس کا ہے شغل خواب بسیار یا رہتا ہے زیادہ بیدار
ارجن انساں کوئی بھی ایسا ہرگز نہیں کامیاب ہوتا

बहुभोजीको योग न. निराहारीको न ।
जो सोवे दिन रैन ही, पाय योग कबहुं न ॥ ३२ ॥
जो इकतार ही जागता, रहे सदा दिन रैन ।
योग न कबहुं पा सके, पाय न अर्जुन! चैन ॥ [illegible] ॥

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ॥ युक्तस्वप्नाऽवबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ १७ ॥

दोहा--युक्तअहारविहारजो, कर्मयुक्तपुनिहोय ।
जागतसोवतजोजुगत, सोडारतदुखधोय ॥१७॥

जो आहार और स्त्रीप्रसंग प्रमाणसे करैगो "आहारका प्रमाण यह कि, आधापेट अन्नसे और चौथाई जलसे भरके चौथाई पवनसंचारके वास्ते खाली राखै, स्त्रीप्रसंगप्रमाण यह कि, अतिकामकी इच्छा होनेसे स्त्रीसंग करै. जो कोई यहां शंका करै कि, योगीको तो ब्रह्मचर्य कहि आये हैं; जैसे कि, इसी अध्यायके चौदहवें श्लोकमें कहाहै सो सत्य है; परंतु "ऋतौ भार्यामुपेयात्" इस श्रुतिप्रमाणसे ऋतुसमयमें स्त्रीप्रसंग करनेमेंभी एक ब्रह्मचर्य है; औरभी कहाहै कि, "इंद्रियाणींद्रियार्थेषु वर्त्तंत इति धारयन् ॥ कर्मेंद्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन" इत्यादि तथा कहेंगे कि, "अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्" तो जो योगी स्त्री प्रसंग न करैगा तो उसके कुलमें जन्म कैसे होगा ? इत्यादि प्रमाणोंसे योगी स्त्रीप्रसंग प्रमाणसे करै यह विहारशब्दका अर्थ सिद्धहै ऐसेही--कर्ममेंभी चेष्टा प्रमाणहीसे करै अति परिश्रम न करैना यहाँ भागवतका प्रमाण देते हैं "सिद्धेऽन्यथार्थे न यतेत तत्र परिश्रमं तत्र समीक्षमाणः" ऐसा द्वितीयस्कंधके दूसरे अध्यायके तीसरे श्लोकमें कहाहै ऐसेही जो प्रमाणसे सोवै और प्रमाणहीसे जागै उसैका दुःखनाशक योग सिद्ध होताहै ॥

Yoga killeth out all pain for him who is regulated in eating and amusement, regulated in performing actions, regulated in sleeping and waking. (17)

युक्त आहार विहार जिन्हांदे
नेम नाल जो करम कमांदे
नेम नाल जो सौंवण जागण
सो योगी दुख पीड़ न भागण । १७ ।

श्रम भोजन सञ्चार (गमन) औ सोना जगना जोय ।
इन मेँ मित रूप तिस योग अघहर होय ॥ १७ ॥

17
But He that's p o i s e d, at food or rest,
whose Will is poised in all he does,
Who sleeps in Poise, and wakes in Poise,—
this Y ó g a's *His* . . . and wipes out pain.

१७
हो आहार, विहार युक्त सब, और युक्त ही हों सब कार्य ।
सोना, जगना भी परिमित हो, दुख-हर योग तभी हो आर्य ! ॥

(۱۷)

اعتدالِ خواب و خور تفریح و محنت چاہیئے
لازمی ہے ارتکابِ فعل شاغل کیلئے ۔

17. The man who moderation knows,
In play, in work, in daily food;
In sleeping and in wakefulness,
Attains to *Yog* that wipes out pain.

(१७)

कर्मों में रत रहै, करै नित, यथा योग्य आहार विहार;
सोवै जागै सदा नियम से, पाता वही योग का सार।

۱۷

یہ یوگ کہ دافع الم ہے
داروئے تعب دوائے غم ہے
ہوتا ہے فقط انہیں کو حاصل
ہیں ایسے ہی لوگ اس کے قابل
باقاعدہ جن کی ہے ہر اک بات
ہے جاگنے سونے میں مساوات
کھانا پینا مشقّت آرام
لیتے ہیں جو سب میں ضبط سے کام

ठीक तरह रहा कर्म कर, ठीक रहा सो जाग।
ठीक रहा खा अरु विचर, योगी वही बडभाग ॥३४॥
योग करे सभी दुःखही, उस योगी के नाश।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति में, जिसका योगप्रकाश ॥३५॥

यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते ॥ निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥ १८ ॥

योगी चित नूं जद बस करदा
ध्यान आत्मा दे विच धरदा
इच्छिया तृष्णा नूं छड जांदा
तद पुरुष योगी सद्वांदा । १८ ।

दोहा—जोनिजचितकोरोकिकै, राखैआतममाहिं ।
तजैसवैजोकामना, सोयोगीनरनाहिं ॥ १८ ॥

जब आत्माहीमें अतिनिश्चल चित्त लगरहताहै तब सर्वकामनाओंसे निःस्पृह हुआभया वह पुरुष युक्त ऐसा कहाताहै ॥ १८ ॥

۱۸۔ روکا ہوا نفس یوگ کی مشق سے جب
قائم ہو آتما میں بے رنج و تعب
اور سب شہوات دل سے ہو جائیں ترک
واصل کہتے ہیں ایسے یوگی کو سب

When his mind, reined in from objects, 18
on purest SELFHOOD takes its stand,
When he covets naught that's longed for,—
then only man is 'p o i s e d,' they say.

१८

यह संयत मन आत्माहीमें स्थिरतासे होता जब युक्त ।
और कामना सब हट जाती, पुरुष 'कहाता' है तब युक्त ॥

दोहा—विषयनसों हट हिय रहा आत्मामें लगजाय ।
सकलकामनिष्काम तब योगसुयोग्य कहाय ॥ १८ ॥

۱۸۔ جبھی من بھگت کا وشوں سے ہٹ کے
سارے جگت کی کامنا بھی مٹ کے
ٹکے آتما ہیں یہ من آپنا
کہو یوگی ساری یگت کر چکے

When his subdued thought is fixed on the SELF, free from longing after all desirable things, then it is said, "he is harmonised". (18)

(۱۸)

ذات کے اِدراک میں ہو جائے جب ساکن خیال
اور دِل سے شوقِ لذّت دُور ہو تب ہو کمال

18. And when his mind full well-restrained,
Established is in Self alone,
And craveth not for things of sense,
Then is he called the man attuned.

(१८)

योग-ज्ञान से जब हो जाता, चित्त आत्मा ही में युक्त;
रहित कामनाओं से वह नर, कहलाता है योग प्रयुक्त ।

۱۸

ہوتا ہے عیاں کمال انساں — بندھتا ہے جب خیال انساں
ہوتا ہے جب اک جگہ پہ قایم — رہتا ہے فنائے ذات دایم
اس وقت ہوس کی گرد سے پاک — لذات جہاں پہ ڈال کر خاک
ہوتا ہے وہ کامران منزل — پا جاتا ہے نشانِ منزل

सभी कामना त्याग कर, कर नहीं कबहुं चाह ।
चिंताए वश कर सभी, आत्माकी ही रख चाह ।।३६।।
जब टिकता चित्त सर्वथा, इस आत्मा में अडोल ।
त्यज कर सारी कामना, अरु उनसे नहीं डोल ।।३७।।

६४६

६
२८

यथा दीपो निवातस्थो नेंगते सोप-
मा स्मृता ॥ योगिनो यतचित्तस्य
युंजतो योगमात्मनः ॥ १९ ॥

दोहा--जैसेदीपसमीरबिनु, रहैज्योतिठहराय ।
योगीनिश्चलचित्तको, उपमाहैयहभाय ॥ १९ ॥

जैसे निवातस्थानमें धराभया दीपक नहीं हालता तथा डोलता है तैसेही वशहै चित्त जिसका ऐसे योगके करनेवाले योगीके मनकी जो उपमा सोई कही है॥ १९॥

जिम ज्यों पवन बगैरों नांहीं
दीपक न डोले उस थांईं
एह उपमा सो योगी पावे
ब्रह्म विखे जो लीन हो जावे । १९ ।

۱۹۔ جب کرتا ہے وصل آتما میں یوگی روکے ہوئے نفس کی ہے مثیل یہی
جیسے ہوئے ہوا جگہ اور رواں شمع روشن ہو رہے جلے نہیں تو اس کی

'As lamp, placed where no draught can reach, 19
shines steady . . .' —such the simile
Of this Yógī of mind restrained,
at work, to make His nature *whole*.

१९

ज्यों निर्वात स्थानमें दीपक-ज्योति सदा रहती, अभ्राम्य ।
चित्त नियत कर योग साधते, योगीका वैसा है साम्य ॥

दोहा—वातहीनथलमें यथा दीप न डगमग होय ॥
योगयुक्त नरका तथा जीव प्रकाशित होय ॥ १९ ॥

۱۹۔ جلے دیپ جیسے شمعدان میں
مزے سے بنا وایو استھان میں
کیا من کو قابو ہے جس بھگت نے
وہ یوگی رہے ویسے بھگوان میں

As a lamp in windless place flickereth not, to such is likened the Yogi of subdued thought, absorbed in the yoga of the SELF. (19

(۱۹)

ایسے شاغل کو نہیں ہلتا ذرا جبکا خیال
شمع کی لا جنب روشن لو سے دیتے ہیں مثال

19. The *Yogin* who with mind controlled,
Becomes absorbed in *Yog* of Self,
Has been to that bright flame compared,
Which sheltered flickers not at all.

(१६)

दीपक-ज्योति रहे निश्चल ही, मंद पवन में जिसी प्रकार;
ध्यानावस्थित योगी का चित, रहता है थिर उसी प्रकार।

۱۹

جیسے ہنگام بارش ضو یکسو رہ کر چراغ کی لو
جنباں نہ ہو بندش ہوا میں لرزاں نہ ہو بندش ہوا میں
بالکل اسی طرح سے وہ شاغل ہے جس کو سکونِ قلب حاصل
رہتا ہے فنائے قلزم ذات کرتا ہے بسر اسی میں اوقات

योगयुक्त कहते सभी, ऋषि, योगी वही चित्त।
दीपशिखा दृष्टांतसे, वरणों योगी चित्त ॥ ३८॥
वायुरहित्, यदि स्थानमें, नहीं कांपे ज्यों ज्योति।
दीपक की, नहीं कांपता, त्यों वही चित्त सुद्योत् ॥ ३९॥
जो आत्माका योग ही, रहा सर्वथा साध।
चित्त जिसका रुका सर्वथा, योगी वही अगाध ॥४०॥

६४८

६/२०

यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया ॥ यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥ २० ॥

दोहा--योगीसेवतयोगको, चित्तजहाँठहराय ।
निरखतआतमकोतहाँ,रहतसदासुखपाय ॥२०॥

योगसेवन करके विषयोंसे रोकाभया चित्त जहां विभामको प्राप्त होता है और जहां बुद्धिकरके आत्मस्वरूपको निश्चय करता भया मन हीमें संतुष्ट होय ॥ २० ॥

योगी दा चित्त शांती पावे
विशय वासनां दूर हो जावे
तद अपने विच्च आप पतीजे
आत्मा विच्च तद आत्मा रीझे । २० ।

(۲۰)
شغل کے رشتہ سے جب مضبوط ہوتا ہے خیال
قلب صافی میں نظر آتا ہے شاہد کا جمال

۲۰ اس یوگ کی مشق سے رکا خوب جہاں
جب اپنے آپ ذات کو اپنی ہی
اور نفس مسکن ہوا اسے شیر جواں
دیکھے اور آتما میں خوش ہو انساں

When Mind, by long Probation stilled— 20
in Yóga—comes to Rest at last,
And when, beholding SELF by Self,
it dwells, content, in Self alone;—

२०

संयत होकर योग युक्तिसे लेता चित्त जहाँ विश्राम ।
जहाँ तुष्ट होकर आत्मामें आत्माको देखे अविराम ॥

दोहा--विषयनसों रोक्यों मन लगै योगकें राहँ (मार्ग)
देख आपको चित्तसे हर्ष होय मनमाहँ ॥ २० ॥

۲۰- جہاں یوگ سیوا سے چت صاف ہو
ہردے میں سچائی و انصاف ہو
جو سنتشٹ ہو آپنے آپ میں
تو درشن پربھو صاف و شفاف ہو

That in which the mind finds rest, quieted by the practice of yoga: that in which he, seeing the SELF by the SELF, in the SELF is satisfied; (20)

20. That state in which his mind finds rest,
By *Yogic* practices restrained,
In which by self beholding Self,
He rests content in Self alone,

(२०)
योगाभ्यास किए जब होता, मन उपराम निरुद्ध विशिष्ट;
सूक्ष्म विशुद्ध बुद्धि से तब नर, प्रभु दर्शन कर हो संतुष्ट ।

योग निरंतर सेव कर, रुकने लगे जभी चित्त ।
जब विलीन हो जाय फिर, चिंतारहित हुआ चित्त ॥४४॥
आत्माद्वारा आत्म ही, करता साक्षात्कार ।
पा रहा सन्तुष्टि परम, आत्मामें ही सुखसार ॥४५॥

۲۰

ہاں وہ حالت کہ قلبِ انساں　　جس میں نہ ذرا بھی ہو پریشاں
آرام دوام پا چکا ہو　　انعام یہ ہاتھ آ چکا ہو
شاغل پئے شغل جس میں دن رات　　چشمِ دل سے ہو شاہدِ ذات
حاصل تسکینِ ذات کر لے　　ساغر اس مے سے اپنا بھر لے

650

६/२१

सुखमात्यंतिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतींद्रियम् ॥ वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्वतः ॥ २१ ॥

दोहा–जोसुखइंद्रिनतेपरे, बहुतबुद्धिगहिलेत ।
वासुखकोजानैतबै, तापाछेइहनेत ॥ २१ ॥

जो इंद्रियोंके जाननेमें न आवै बुद्धिकरके ग्रहण करनेमें आवै ऐसा अत्यंत सुख उसको जिसयोगमें स्थितभया हुआ यह पुरुष जाने है ऐसा निश्चय और फिर आत्मस्वरूपसे न चलायमान होय ॥ २१ ॥

۲۱۔ جب بے حد سکھ کہ بس مانے بُدھی
محسوس ہو اور ایسا ہو ٹھہرا جیول
اور واں تک دسترس نہ ہو حسّوں کی
من کو کہ حقیقت سے نہ لغزش ہو کبھی

That in which he findeth the supreme delight which the Reason* can grasp beyond the senses, wherein established he moveth not from the Reality; (21)

योगी परम अनंत सुख पावे
बुद्धी बिना जो समझ न आवे
इन्द्रियां जिस नूं न जानण
जिस सुख दा न तत्त पछानण
उस सुख नूं जद योगी पावन
असल तत्त थों दूर न जावन। २१।

[illegible]

When it knows the JOY unending, 21
sense-transcending, Heart-encompassed,
And, at home therein once settled,
from its True State swerves no longer,—

इन्द्रियगणसे परे बुद्धिसे यह अनन्त सुख जाना जाय ।
और जहाँपर तत्वज्ञानसे निश्चलता इसको आ जाय ॥

निजमतिवेद्य असीमसुख मिलतो जिसमें तात ।
चित्त लग्यो जिस योगमें तासों पुनि न हटात ॥ २१

(۲۱)

عالمِ اشراق کی بے انتہا راحت وہاں
ذات کے دیدار میں افکار سے فرصت وہاں

21. Wherein he finds that joy supreme [17]
Which reason, not the senses, can
Enjoy : in which established well
The Truth [18] he never then forsakes,

(२१)

परे इन्द्रियों से है, होता, शुद्ध सूक्ष्म बुद्धि से ज्ञात;
परमानन्द प्राप्त कर योगी, विचलित नहीं कभी हो तात !,

۲۱

پنجاب حواس سے گزر کر — اِن دریاؤں سے پار اُتر کر
طے کر کے حدود عقل و ادراک — جس میں ملتی ہے راحت پاک
جس میں اک بار ہو کے ساکن — مرد ہشیار ہو کے ساکن
کرتا نہیں ترک جادۂ حق — رہتا ہے نثارِ بادۂ حق

जहां, जो परमानन्द है, ज्ञानसे ही जो है प्राप्य ।
निरा ही जो सुखरूप है, इन्द्रियोंसे नहीं प्राप्य ॥४३॥
जिसमें टिक नहीं डोलता, मूल आत्मसे धीर ।
जहां ही अनुभवकर रहा, आत्मानन्द सुधीर ॥ ४४ ॥

622

6/22

यं लब्ध्वा चाऽपरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ॥ यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते ॥ २२ ॥

दोहा—जोपायेलाभनअधिक, औरजानिरेमित्त ।
स्थिरतागाहिडोलैनहीं, बहुदुखपायेचित्त ॥ २२ ॥

जिसको पायके फिर उससे अधिक श्रेष्ठ लाभ नहीं मानताहै जिसमें प्रवृत्त हुआ भारीभी दुःखकरके नहीं घबराता है ॥ २२ ॥

۲۲۔ اس طرح کا سکھ کہ اس کو یوگی پاکر — مانے نہیں اور سکھ کو ہرگز برتر
جس میں کر کے حصول اپنا ٹھہراؤ — تکلیف عظیم سے نہ ہو پھر مضطر

जद योगी लभदा सुख तांई
जाणे होर परे कुझ नाहीं
तद ओह सुख विच मगन हो जावे
दुख दरद सब दूर हटावे । २२ ।

Which having gained, it cannot dream
of any 'gain' transcending this,
Its own True State, wherein once fixed,
it dwells, by direst pain unmoved:— 22

२२

पाकर जिसे लाभ फिर जगमें अधिक नहीं माने कुछ और ।
जिसमें स्थित हो विचलित होता कभी न पाकर दुख भी घोर ॥

काहूमें जिस योगसों सुख ना अधिक मनाय ।
जामें ठगि दुख गुरुहुसा तनिकहु हियन हटाय ॥ २२ ॥

۲۲- جسے پاکے پھر کوئی آشا نہ باقی
ملے شانتی میٹ کر سب چالاکی
بڑا دکھ بھی اس کو ہلاتا نہیں
جھلک جس نے پالی ہے پرماتما کی

Which, having obtained, he thinketh there is no greater gain beyond it; wherein established, he is not shaken even by heavy sorrow; (22)

(۲۲)

شغل سا اِک گوہرِ نایاب جس کو مل گیا
ہر بلائے ناگہاں سے اُسکا چھٹکارا ہوا

22. Which having gained, he is assured
He can obtain no greater thing,

In which when he is firmly based
By direst pain he is unmoved,

(२२)

जग के सब लाभों से बढ़ कर, मानते योगी-वृन्द;
परमानन्द प्राप्त योगी को, नहीं डिगा सकते दुख द्वंद ।

۲۲

ہاں وہ منزل پہونچ کے جس پر ہوتا ہے خیال دل میں اکثر
کہتا ہے بشر یہ اپنے جی میں ہے فائدہ کچھ تو بس اسی میں
ہاں وہ منزل کہ جس پہ جاکر ایسا اعلیٰ مقام پاکر
پروا کرتا نہیں کچھ انساں ہوں کیسے ہی رنج وغم کے ساماں

प्राप्त जिसे कर लाभ कुछ, उससे बडा न मान।
सके कभी योगी कोई, परम लाभ पहिचान ।।४५।।
महां दुख भी यदि पडे, डिगे जहां से न ।
टिका हुआ जिस परम सुख, में योगी गिरे न ।।४६।।

६/२३

दुख दरद थीं दूर हो जाणा
इस दा नाम है योग कमाणा
निश्चय कर के योग कमा तूं
मन दे संशय भरम मिटा तूं । २३ ।

तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम् ॥ स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥

दोहा--दुखहूकेसंयोगको, मानजुलेतवियोग ।
निश्चयकरियोगहिकहे, ताकोकहतजुयोग ॥२३॥

उसको दुःखसंयोग वियोगकारक योगनासक जानना सो योग निर्विकल्प चित्तसे निश्चयकरके करनेही योग्यहै ॥ २३ ॥

۲۳۔ کہلاتا ہے بس نام اسی کا تو یوگ
کرنے لائق یہی ہے کرکر کے یقیں

اور اس میں ہی ہوتا ہے ہر اک کا یوگ
اس طرح کہ اضطراب کا کچھ نہ ہو روگ

Be *this* known as the Y ó g a-State, 23
unyoking Man from yoke of pain.
This Yóga must be striven for
with fixed resolve, and dauntless heart.

२३

उसको जान योग-संज्ञक तू सकल दुखोंसे रहित नितान्त ।
साधन करने योग्य वही है निश्चय मनको करके शान्त ॥

ऐसे योगहि योग तू जान जु दुःख हरेय ।
हर्षित चितसों योग इह अवसहि नर करलेय ॥ २३ ॥

(۲۳) جس تعلق قطع ہو جاتا ہے محسوسات کا
قلب کی اس کیفیت کو وصل کہنا چاہیے

That should be known by the name of yoga, this disconnection from the union with pain. This yoga must be clung to with a firm conviction and with undesponding mind.† (23)

23. *This* state—the breaking loose from pain—
Let it be known is named as *Yog*;
This *Yog* should e'er be practisèd
With dauntless heart and firm resolve.

(२३)

दुख संयोग वियोग रहित वे, कहलाते हैं योगी राज;
निश्चय निर्विकल्प मन से वे, तत्पर हो कर करते काज।

۲۳

بیگانگیٔ غم آشنائی — اس منزل پاک پر رسائی
روگردانی غم و تعب سے — مشہور ہے جوگ کے لقب سے
دل سے ایمان اس پہ لے آئے — اس سے انساں کبھی نہ گھبرائے
پیدا کرے اعتقاد کامل — مضبوطی سے ہو اُس پہ عامل

उसका नाम ही योग है, जाने मुनि सुजान।
जिसमें दुःखका लेश न, दुःखवियोग पहिचान ॥४७॥
योग करो दृढ भक्तिसे, बिना चित्त उकताय।
निश्चय रख दृढ ही सदा, योगी परम सुख पाय ॥[illegible]॥

675

६
२४—२५

संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः ॥ मनसैवेंद्रियग्रामं विनियम्य समंततः ॥ २४ ॥ शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया ॥ आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिंतयेत् ॥ २५ ॥

दोहा—संकल्पनिजोकामना, तिन्हैंतजेचितचाय ।
मनसोंरोकैइंद्रियनि, योगकरैयाभाय ॥ २४ ॥
धीरजधरिअरुबुद्धिकरि, हरैहरैसबत्यागि ।
कछुवैकरैनकामना, आतमसोअनुरागि ॥ २५ ॥

स्पर्शजन्य और संकल्पज ऐसे भेदसे कामना दो प्रकारकी है, तिनमें स्पर्शज शीतउष्णादिक, संकल्पज पुत्रवित्तादिक इनमें स्पर्शजका त्याग स्वरूपसे नहीं हो सकता इससे संकल्पज सर्व कामनाओंको समग्रतासे मनहीसे त्यागिके सर्व इंद्रियोंको सर्वत्रसे नियमित करके विवेकशुद्ध बुद्धिकरके धीरे धीरे विश्रामको प्राप्त होना फिर मनको आत्मस्वरूपमें स्थिरकरके आत्मस्वरूपविना किसीकोभी न चिंतवनकरना ॥ २४ ॥ २५ ॥

۲۴ - پیدا ہوتی خیال سے ہیں جو جو خطرمیں کامنائیں چھوڑ ان سب کو
اور من سے روک کر تمام اپنے حواس اس طرح ادھر ادھر نہیں جائیں وہ

۲۵ - ہولے ہولے سے شانتی میں ہو جائے یوگی اپنی ہی مستقل بدھی سے
ٹھیرائے آتما میں اپنے من کو اور دل میں وسوسہ نہ کوئی لائے

دوہا-۲۴-۲۵ جس طرح کامناؤں کو روکے
واسناؤں کو روکے
یکسوئی من کی حاصل کرے
باتوں کو روکے

दोहा—सकल मनोरथके विषय हियसों त्याग अशेष ।
मनसों इंद्रियग्रामको बहुंदिश रोक विशेष ॥ २४ ॥

विवेककुशलमतिसों शनैः (धीरेधीरे) विषयनसों हटजाय ।
आतमामें मन लायके मति मति अनत लगाय ॥ २५ ॥

संशय कामना त्याग तूं अर्जुन
मन नूं जित्त उठ जाग तूं अर्जुन

इन्द्रियां सब मन वस कर लै
योग दे मारग ते पग धर लै । २४ ।

तद जद थिर बुद्धी हो जावें
बुद्धी द्वारा धीरज पावें
हौली हौली धीरज पाके
आत्मा दे विच ध्यान लगा के
आत्मा दे विच्च तृप्ती पावें
आशा चिन्ता मनों भुलावें । २५ ।

¶ Having cast out without remains — 24
all longings born of thought for self,
Having drawn in by mind alone
his team of senses from all sides,—

By slow approaches let him come — 25
to Rest, with patient, Rock-poised Will;
His Mind at home in Selfhood pure,
let him create no *thought* at all.

२४

संकल्पोंसे होनेवाली सभी वासनाएँ तब छोड़ ।
सकल इन्द्रियोंको फिर मनसे सभी ओरसे लेवे मोड़ ॥

२५

धीरे धीरे धैर्य-बुद्धिसे मनको करे आत्म-संयुक्त ।
हो उपराम, चित्तको कर दे अन्य विषय-चिन्तनसे मुक्त ॥

Abandoning without reserve all desires born of the imagination,* by the mind † curbing in the aggregate of the senses on every side; (24)

Little by little let him gain tranquillity, by means of Reason ‡ controlled by steadiness; having made the mind † abide in the SELF, let him not think of anything. (25)

(۲۴)

دُنیوی لذّات سے دل کو ہٹانا چاہیئے
اور پھر دل سے پریشانی گنوانا چاہیئے

(۲۵)

جسم کی اُلفت کو شاغل رفتہ رفتہ چھوڑ دے
آرزوئے دیدِ حق میں چشمِ باطن وا کرے

¶ 24. Without exception, leaving all
Desires which from the fancy spring
Restraining by the mind alone
Each of his senses from all sides,

25. By reason held in firm control,
He slowly tranquil should become.[19]
With mind established in the Self,
On nought his thoughts should ever dwell

(२४)

मन से तज संकल्प कामना, जो नर करें योग भरपूर;
जय कर सभी इन्द्रियों को वे, सुख दुख करें हृदय से दूर ।

(२५)

क्रम क्रम से अभ्यास बढ़ा कर, हों वे आत्मज्ञान में लीन;
अन्य सभी चिन्ताएँ तज कर, धरैं धैर्य्य, हो योगासीन ।

फुरने उठ इच्छा हुई, जो दिलमें उत्पन्न।
निःशेष उन सभी को, त्यज, हो सत्त्वसम्पन्न ॥४९॥
सभी ओरसे सर्वथा, इन्द्रियगण को रोक,
मनके द्वारा ही सदा, सब इन्द्रिय को टोक ॥५०॥

फुरनोंसे उपराम हो, जा शनैः शनैः वीर।
धैर्ययुक्त शुभ बुद्धिसे आत्मवान् ऋषि धीर ॥५१॥
मनआत्मामें टिकाय फिर, कुछ भी सोच विचार।
करे कबहुं नहीं मुनिवर, योगआत्मका धार ॥५२॥

۲۴

ہر اک خواہش ہر اک تمنّا ہوتی ہے خیال سے جو پیدا
پیچھا اس سے چھڑا کے اپنا دامن اِس سے بچا کے اپنا
محصور حصار دل بنا کر قابو میں حواس اپنے لا کر
جس میں نہ یہ سر اُٹھانے پائیں حد سے باہر نہ جانے پائیں

۲۵

مشق اس کی رہے جو یونہیں جاری رفتہ رفتہ ہو پُختہ کاری
کافور سب انتشار ہو جائے دل کو حاصل قرار ہو جائے
نور ادراک سے مُنوّر استقلالِ مزاج رکھ کر
ذاتِ برتر میں دل لگائے یہ اور طرف نہ جانے پائے

यतो यतो निश्चरति मनश्चंचलमस्थिे-२६

रम् ॥ ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव
वशं नयेत् ॥ २६ ॥

दोहा–मनचंचलजिततितचलै, ताकोराखैरोकि ।
करिसंयमनिजआतमा, सजैजुताकोठोकि ॥२६॥

यह मन चंचलहै इसीसे आत्मस्वरूपमें थिर नहीं रहताहै.. सो यह मन जहांजहां लगै तहांतहांसे इसको फिरायके आत्मस्वरूपहीमें लगाना ॥ २६ ॥

एह मन चंचल टिकदा नांहीं
नित्त उठ दौड़े उलटी रांहीं
मन नूं रोक ते वागां फड़ लै
मन नूं आतमा दे वस कर लै । २६ ।

۲۶- من جب پر اضطرار اور چنچل ہو
اور جائے جہاں جہاں وہیں سے اس کو
لے آئے پکڑ کے آتما میں ہی لگائے
اور جانے نہ دے کہیں اسے خوش خو

Though o'er and o'er the fickle mind, 26
all restlessness, a-wandering goes,
Still o'er and o'er let him regain
control, and poise it back in Self.

२६

यह मन अस्थिर अति चञ्चल फिर जहाँ जहाँसे करे निकास ।
वहाँ वहाँसे रोक इसे, वश करके लावे आत्मा-पास ॥

दोहा—मन हटतो जिस ओरसों तासों नियत हटाय ।
मन चंचलको जीवमें धीरहिं इहविध लाय ॥ २६ ॥

۲۶- یہ من گرچہ چنچل نہ پکڑے قرار
نکل جاتا ہے قابو سے بار بار
مگر ساودھانی سے قابو کرے
اسے آتما میں کرے استوار

As often as the wavering and unsteady mind † goeth forth, so often reining it in, let him bring it under the control of the SELF. (26)

(۲۶)

چار سو سے دل میں کوئی اضطراب آنے سے
خلوتِ جاناں سے واپس شوق کو جانے نہ دے

26. And from whatsoever cause the mind,
Unsteady, wavering, wand'ring goes,
He should restrain and bring it back
To Self's direct and sole control.

(२६)

वश में हुआ नहीं हो, फिर भी, जिसका यह चित चंचल चोर:
उन्हें चाहिए सब कार्यों से, खींच, लगावें प्रभुकी ओर।

۲۶

یہ مضطر و بیقرار و حیراں　سیماب آسا دل پریشاں
ہو مرغ صفت جدھر پریدہ　ہمرنگ غزال ہو رمیدہ
شاغل اسے روک کر اُدھر سے　اوجھل ہونے نہ دے نظر سے
ہو کر ہر طرح اُس پہ قادر　کرے اُسے محو ذات آخر

जहां जहांसे निकसता, हो चञ्चल, मन, डोल।
वहीं से इसको लौटाय पुन, करे आत्मामें अडोल॥२३॥
इस विध मन जब हो गया, पूर्णतिया सुखी शांत।
रज विकार संकल्प सब, भी हो चुके सुशान्त॥२४॥ (26)

मन चंचल जद शान्त हो जावे
रजगुण जिस नूं न भरमावे
जद नर पाप रहित हो जांदा
तद फिर ब्रह्मानंद नूं पांदा । २७ ।

६/२६

प्रशांतमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ॥ उपैति शांतरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥ २७ ॥

दोहा—जाकेमनमेंशांतिहै, पापरहितजोहोय ।
मगनजुब्रह्मानंदमें, तायोगीकोहोय ॥ २७ ॥

कारण कि, जिसका मन आत्मस्वरूपमें स्थिर है उसीसे उसका रजोगुणभी नष्ट भयाहै, उससे वह निष्पाप है, उससे वह आपके स्वरूपमें स्थिरहै ऐसे इस योगीको उत्तम याने आत्मानुभवरूप सुख प्राप्त होताहै ॥ २७ ॥

Yea, utter JOY is drawing nigh
to this Yógī whose Mind is stilled, 27
All passion turned to perfect PEACE,
at-One with BRAHMA, void of stain.

२७

जो रजसे है रहित, शान्त-मन ब्रह्मभूत भी, है निष्पाप ।
उस योगीको वह उत्तम सुख मिल जाता है अपने आप ॥

दोहा—शांतचित्त रजहीन अरु जो जोगी हतपाप ।
आतमरूप देखे तिसे निजसुख मिलतो आप ॥ २७ ।

۲۷- ہوا شانت من جس بھگت کا ذرا
اُسے مل گیا سُکھ اُتم اور کھرا
جو رج گن رہتا پاپ کیسے رہے
یہ درجہ سمجھ تو بڑے سے بڑا

Supreme joy is for this Yogi whose mind † is peaceful, whose passion-nature is calmed, who is sinless and of the nature of the ETERNAL. (27)

(۲۷)

جب قرار آجائے اور دل سے طلب جاتی رہے
شغل کی تکمیل میں تب وصل کا عُقدہ کھُلے

27. The *Yogin* who has stilled the mind,
And all his passions has suppressed,
Who has no sins, and Brahm become,
Finds verily the Bliss Supreme.

(२७)

पाप-रजोगुण-हीन, चित्त में, शांति-धारण: जिन के ध्यान:
ब्रह्मभूत-योगी अवश्य वे, उत्तम सुख करते हैं प्राप्त

۲۷

ہے جس کا سکوں سے آشنا دل
ہر قسم کے انتشار سے دور
مسرور خمار بادۂ حق
ہوتا ہے فراغ اُسے مُیسّر

جو سوئے گُنہ نہیں ہے مائل
دل جس کا ہے اضطرار سے دور
ہے مست وصال ذات مُطلق
جس کا پایہ ہے سب سے برتر

पापरहित् हुआ सर्वथा, योगी बना तब ब्रह्म ।
यह् उत्तम अरु परम सुख, भोगे पा परब्रह्म ॥२७॥
उससे हुआ सम्बद्ध तब, करे अनुभव ब्रह्मस्पर्श ।
सुगमतया अत्यंत सुख, भोगे वही सुखस्पर्श ॥२८॥

युंजन्नेवं सदात्मानं योगी विगतक-
ल्मषः ॥ सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यंतं सु-
खमश्नुते ॥ २८ ॥

दोहा–जोयोगीइहविधिकरै, योगपापकोत्यागि ।
सहजहिब्रह्महिकेसुखहिं, लहेरहतअनुरागि २८॥
ऐसे निष्पाप योगी इसीतरहँ सर्वदाँ मनकों स्वरूप-
ज्ञानमें युक्त करताकरतां ब्रह्मानुभवरूपं अत्यंतसुर्खकों
सुखेसे पांवंताहै ॥ २८ ॥

سब पापां तों दूर रहे जो
ब्रह्म विखे भरपूर रहे जो
सो नर ब्रह्म नाल जुड़ जावे
तद ओह ब्रह्मानंद नूं पावे । २८ ।

۲۸- اس طرح سے یوگ آتما کا کر لے یوگی بے پاپ ہو کے آسانی سے
بےحد سکھ کو حصول کرتا ہے سدا جو برہم کی ذات کا کلام اسمیں کہے

Thus e'er creating himself w h o l e, 28
the Poised One, every stain washed clean,
Drifts gently into th' Endless JOY
that springs of inner T o u c h with BRAHM.

योगाभ्यास निरन्तर ऐसे करनेवाले योगी लोग ।
पापरहित हो ब्रह्म-स्पर्शके अति सुखका करते उपभोग ॥

दोहा—इसविध निजके दर्शमें लग्यो पापसों हिन ।
ब्रह्मदर्शसुख पाव तो वहु योगी तहँ लीन ॥ २८ ॥

۲۸- جو نشٹ پاپ یوگی کرے ایسی کار
کرے یوگ ابھیاس کر کے وچار
برہم پراپتی کا مزا پائے گا
مہا سکھ کا بھاگی وہ ہو نروکار

The Yogi who thus, ever harmonising the self, hath put away sin, he easily enjoyeth the infinite bliss of contact with the ETERNAL. (28)

(۲۸)

آب استغراق میں دُھلتے ہیں انساں کے گناہ
شغل کی راحت فزا منزل میں ملتی ہے پناہ

28. Thus keeping steadfast e'er the self,
And from his sins the *Yogin* cleansed,
With ease attains the Final Joy
Of coming into touch with Brahm.

(२८)

पाप रहित होने से योगी, पा जाता है ब्रह्मानन्द;
करता सुखद सहर्ष सर्वदा, वह अनुभव अनन्त आनन्द;

۲۸

اس طرح سے حظِ شغل اُٹھاکر
جو صورتِ شب سیہ نہیں ہے
ہے رہروِ راہِ کامرانی
ثمرہ جو وصالِ ذات کا ہے

خود اپنے پر نگہ جماکر
بدمستِ مئے گنہ نہیں ہے
پاتا ہے وہ لطف جاودانی
یعنی حاصل نجات کا ہے

पापरहित् जो योगीवर, साधे सदाआत्मिक योग।
उपरोक्त शुभ विधिसे, परमात्मा सह् योग ।।५७।।
जिसका आत्मा जुडा यूं, योग आत्मिक् सम्पन्न।
इकरस ही वह देखता, सभी स्थान प्रच्छन्न ।।५८।।

644

६/२५

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ॥ ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥ २९ ॥

दोहा--मोहिंलखैसबठौरजो, सबकोमोहीमाहिं।
मोकोदेखतसोसदा, हौंहूँदेखतताहिं ॥ २९ ॥

सर्वत्र शत्रुमित्रादिकोंमें समदृष्टि योग जो "द्वासुपर्णासयुजौसखाया" इस श्रुतिप्रमाणसे सखित्वरूप संयोग उसमें लगायाहै मन जिसने सो आपरूपको आकाशादि सर्वभूतोंमें स्थित और उनका आकाशादि सर्वभूतोंको आपमें देखताहै ॥ २९ ॥

योगी योग तन नूं मेथे
आत्मा विच सब सूझी वेखे
सब सूझी विच आत्मा जाणे
सो समदर्शी तन पछाणे । २९ ।

۲۹۔ یوں یوگ میں محو آتما ہووے جب
رہتی ہے ایک ہی نظر روز و شب
سب میں نظر آتی ہے اسے اپنی ذات
اور اپنی ذات میں نظر آتے ہیں سب

His own SELF shrined in all that lives, 29
all creatures shrined within HIMSELF,—
Thus sees the Man in Poise at-One,
with Eye of Sameness viewing All.

२९

योगयुक्त सम-दर्शी मानव लगे देखने यों सर्वत्र ।
सब जीवोंमें मैं हूँ, मुझमें हैं सारे प्राणी एकत्र ॥

दोहा—सर्वजीवसम आपको औरन आपसमान ।
योगलग्यो समदृष्टि जन निरखत निपुण सयान ॥ २९ ॥

۲۹۔ وہ دیکھے سکل میں ہے رنج آتما
جگت دیکھے آتم میں بستا ہوا

وہ سم درشی ہو جائے ہر حال میں
اسے بہاستا ہے نہیں دوسرا

The self, harmonised by yoga, seeth the SELF abiding in all beings, all beings in the SELF; everywhere he seeth same. (29)

(۲۹)

جلوۂ کثرت ہے عارف کی نظر میں ایک سا
کُل کے اندر جُزو ہے اور جُزو میں کُل ہے چھپا

29. Whose self has been attuned by *Yog*,
Who looks alike on everything;
The Self in every creature sees,
And every creature in the Self.[20]

(२९)

मुझ ही को सब में वह देखै, सब को मुझ ही में सविवेक;
सब में व्यापक मानै चेतन, उस अनन्त आत्मा को एक।

۲۹

جو یوگ میں وصل ہو چکا ہے ‏ گم اس میں در اصل ہو چکا ہے
حاصل اس کو ہے چشمِ عرفاں ‏ رکھتا ہے نظر وہ سب پہ یکساں
جتنی بھی یہ ہستیاں ہیں مشہود ‏ سب میں پاتا ہے خود کو موجود
رازِ وحدت سے آشنا ہے ‏ سب کو اپنے میں دیکھتا ہے

आत्माको ही देखता, भूतसभीमें वह धीर।
सभी भूत पुनः देखता, इक आत्मामें ही वीर॥५९॥
अतः सभीसे ही आत्मसम, करे वह सद् व्यवहार।
करे कबहुं नहीं शोक वा, चिन्ता कुव्यवहार॥६०॥

योः मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि
पश्यति ॥ तस्याहं न प्रणश्यामि स च
मे न प्रणश्यति ॥ ३० ॥

दोहा—व्यापकहौंसबजीवमें, मोकोसवैकोय ।
कैसेहूँकितहूँरहौं, ताकोमोमेंजोय ॥ ३० ॥

ऐसे जो मेरे को सर्वत्र मालाके मणिकोंमें सूत्रकी तरह देखता है और सर्वजगत् सूत्रमें मणिकोंकी तरह मेरेमें देखताहै मैं उसके अदृश्य नहीं होताहूँ और वह मेरे नहीं अदृश्य है ॥ ३० ॥

۳۰۔ جو مجھ کو دیکھتا ہے سب میں یکساں | اور سب کو دیکھتا ہے مجھ میں ہی عیاں
وہ مجھ سے جدا ہوتا نہیں ہو سکتا | میں اس سے جدا ہوں یہ نہیں ہے امکاں

۳۰۔ مجھے ہر جگہ جو کہ ہے دیکھتا
ہر اک چیز میں میرا نور صفا
میں اس سے ذرا بھی نہیں دور ہوں
وہ مجھ سے نہیں ایک پل بھر جدا

जो योगी मुझ विच चित्त धरदा
घट घट विच्च मेरा दरशन करदा
जो कोई योग युक्त हो जावे
सब सृष्टी नूं मुझ विच्च पावे
मेथों दूर ओह होंदा नांहीं
न मैं दूर होवां उस तांई । ३० ।

Whoso in All beholds but ME, 30
and sees all things held safe in ME,
From Him I ne'er can be cut off,
nor can He be cut off from ME.

३०

जो नर देखे मुझको सबमें स्थित, मुझमें सबको भरपूर ।
वह जन मुझसे दूर नहीं है मैं भी उससे रहूँ न दूर ।

दोहा—मोसम जो सम जीवको सभजीवनसम मोय ।
निरखत, देखै आपको अरु देखै मोहि सोय ॥ ३० ॥

He who seeth Me everywhere, and seeth every thing in Me, of him will I never lose hold, and he shall never lose hold of Me. (30)

(۳۰)

مجھکو سب میں سب کو مجھ میں جسنے دیکھا بر ملاَ
وہ نہیں مجھ سے جُدا اور میں نہیں اُس سے جُدا

30. Whoso beholds Me everywhere,
And seeth everything in Me;
To him I never can be lost,
Nor he be ever lost to Me.

(३०)

जो मुझको सर्वत्र देखता, मुझ में हो जिस को सब दृष्ट;
उस से नहीं अदृष्य रहूँ मैं, वह भी रहै न मुझे अदृष्ट ।

۳۰

اِس سیر سے ہے جو حظّ اُٹھاتا
کرتا ہے جو مجھ میں سب کا دیدار
مجھ میں اس میں نہیں ہے تمیز
اک حالتِ وصل بالیقیں ہے

ہر چیز میں ہے جو مجھکو پاتا
رکھتا نہیں غیر سے سروکار
دونوں ہیں درصل ایک ہی چیز
امکان فراق ہی نہیں ہے

यूं मुझ आत्म को देखता, सभी स्थान में जोय।
अरु सबको ही देखता, मुझ आत्मा में ही सोय ॥६१॥
नष्ट न हूं मैं कभी भी, उसके लिये हे पार्थ!
मेरे लिये पुनः नष्ट न, हो वह सके कभी पार्थ! ॥६२॥

thing in Me, of him will I never lose hold, and he shall never lose hold of Me. (30)

६/३१

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमा-
स्थितः ॥ सर्वथा वर्त्तमानोपि स
योगी मयि वर्त्तते ॥ ३१ ॥

दोहा—सर्वविषेअस्थितजुहों, इकलखिभजैजुमोहिं ।
रहौंकौनहूँभाँतिवह, मोमेंवर्त्ततुजोहिं ॥ ३१ ॥

जो एकत्वं याने सर्वसे मित्रभाव, (एकत्वका अर्थ जो स्वरूपकी एकता करै तौ भजन किसका करै ? इससे मित्रताही अर्थहै. वाल्मीकीयसुंदरकांडमें भी "रामसु-ग्रीवयोरैक्यं देव्येवं समजायत" इस हनुमानके वाक्य करके एकताका अर्थ मित्रताही सिद्ध होताहै इससे) जो सर्वकी मित्रतामें रहाभया सर्वभूतोंमें व्यापक मेरेकों भजताहै निश्चयँ सो योगी सर्व आचरण करताभयाँ मेरेमें वर्त्तमान है याने मेरे हृदयमें वसता रहताहै ॥ ३१ ॥

जो योगी इक ब्रह्म पछाणे
घट घट व्यापक मैंनू जाणे
कर निश्चय मेरा भजन करेंदा
ब्रह्म रूप विच्च मगन हो रैंहदा
जग झंजट विच्च सो नहीं फसदा
सो नर सदा ही ब्रह्म विच्च वसदा । ३१ ।

۳۱- یکتائی میں قیام اپنا کرکے — جو مجھکو ہی ہر چیز کے اندر دیکھے
ایسا یوگی جہاں کہیں رہتا ہے — رہتا ہوا مجھ ہی میں سمجھ بس تو اُسے

Whoso on ONENESS takes His stand, 31
and worships ME as shrined in All,—
No matter what His Life may be,
that Yógī lives and moves in ME.

۳۱- سرو ہیں دیاپک مجھے ایک رس
جو سمرن کرے پریم سے کوئی کس
بھگت ایسا خواہ کیسی حالت میں ہو
میرے آتما میں رہا گویا بس

He who, established in unity, worshippeth Me abiding in all beings, that Yogi liveth in Me, whatever his mode of living. (31)

३१

जो एकत्व-बुद्धिसे मुझको भजता सब जीवोंमें जान ।
करता हुआ कार्य भी सारे वह मुझमें ही रहे निदान ।

दोहा—अंतर्यामीरूप जो निरखत सभमें सोय ।
व्यवहारहुके कालमें ध्यान कर मम सोय ॥ ३१ ॥

(۳۱)

جانتا ہے جو موحد میرا ہر شے میں قیام
موردِ اعمال ہو کر مجھ میں واصل ہے مدام

31. The man who holds that all is one,
And worships Me enshrined in all,
This *Yogin* lives in Me indeed,
Whate'er his mode of life may be.

(३१)

आत्म रूप देखे जीवों को, भजै मुझे वह योग-प्रवीन;
करता हुआ जगत कार्य्यों को, रहता है वह मुझ में लीन।

۳۱

ہے یکتائیٔ مقام جس کا — اک حال میں ہے قیام جس کا
میری وحدت کو آزماکر — مجھ کو موجود کل میں پاکر
مشغول جو میرے ذکر میں ہے — مصروف جو میری فکر میں ہے
کچھ بھی اس کا ہو طرز ہستی — حاصل اسے وصل کی ہے مستی

एकपने में ही यूं टिका, सेवे मुझे सप्रेम।
जान बसा सभी भूत में, इक रस ही सप्रेम ॥६३॥
वर्त रहा ज्यों त्यों पुनः, कर रहा सब व्यवहार।
वह योगी रहा मुझी में, वर्त इक रस लगातार ॥६४॥

६
32

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ॥ सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥ ३२ ॥

दोहा–सबकोदेखतआपसम, दुखसुखएकैभाय ।
सोयोगीसबतेबडो, मोमेंरहैसमाय ॥ ३२ ॥

हे अर्जुन ! जो सुख अथवा दुःखको आपके समत्व करके सर्वत्र समान देखता है सो योगी उत्तमहै. यह श्लोक उनतीसवें श्लोकका खुलासा करनेवालाहै ॥ ३२॥

घट घट विच जो एकता वेखे
सर्व आत्मा इक सम वेखे
सुख दुख विच वी एकता पावे
सो पूरण योगी सदवावे । ३२ ।

۳۲۔ جس شخص نے سکھ کو اور دکھ کو بھی سدا
یکساں اپنی مثال سے ہے دیکھا
ہر ایک بشر میں اور ہر ایک جگہ
رتبہ ہے اسی کا یوگیوں میں اعلےٰ

Whoso but takes himself as Type, 32
and on all sides beholds the SAME,
Whate'er He looks on—joy or pain—
foremost of Poised Ones *He* is deemed.

३२

जो औरोंके सुख वा दुखको समझे निज सुख-दुःख समान
हे भारत ! वह निःसंशय ही होता योगी सर्वप्रधान

दोहा—अपने दुःखसुखके सम परके दुख सुख जोय ।
समदर्शी ह्वै निरखतो उत्तम योगी सोय ॥ ३२ ॥

۳۲۔ جو جانے کوئی سب کو اپنے سمان
سرو میں رہا آتما ایک مان
وہ یوگی تو اوتم بڈھی مان ہے
کہ سُکھ دکھ میں بھی جس کا قائم گیان

He who, through the likeness of the SELF,* O Arjuna, seeth equality in everything whether pleasant or painful, he is considered a perfect Yogi. (32)

(۳۲)

رنج و راحت میں جو رکھتا ہے نگہ توحید کی
بیشک ارجنؔ شغل میں حاصل ہے اُسکو پختگی

32. Who knoweth that all other things
Affected are as he himself,
By pleasure, Arjun, or by pain,[21]
He is the best of *Yogins* deemed.

(३२)

प्राणिमात्र को सम कर लेखै, मानै सुख दुख एक समानः
माना गया वही सर्वोत्तम, योगी हे पाण्डव संतान।

अर्जुन:—

۳۲

یکساں سب کو جو مانتا ہے — اپنی مانند جانتا ہے
ارجن ظاہر ہے جس پہ یہ بات — سب میں پنہاں ہے ایک ہی ذات
جو سب کی خوشی کو جانے اپنی — ان کی تکلیف مانے اپنی
ہے اس شاغل کا بول بالا — سب جانتے ہیں اسی کو اعلیٰ

सब से बडा माना गया, योगी वही सुजान।
हे अर्जुन ! जो आत्मवत्, देखे सब को समान ॥६५॥
सुखीदुःखी ही सभी को, समझे अपने समान।
त्यूं उत्तम व्यवहार ही, सबसे करे समान ॥६६॥

अर्जुनोवाच

हे भगवान ! देवकी जाया
तूं जो योग उपदेश सुणाया
उस दी नींह थिर नज़र न आवे
चंचलता मन नूं डोलावे । ३३ ।

۳۳۔ یہ یوگ جو کرشن آپ نے بتلایا یکساں نظری کا مری سنئے تو ذرا
ٹھیراؤ نہ ہو گا یہاں بااستقلال کیا وجہ کہ اضطراب ہے ساتھ لگا

अर्जुन उवाच ।
योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ॥ एतस्याहं न पश्यामि चंचलत्वात्स्थितिं स्थिराम् ॥ ३३ ॥

दोहा—योगकह्योतुमकृष्णजू, सोकोएकसमान ।
रहैनमोचितचंचलहि, जोतुमकियोबखान॥३३॥

श्रीकृष्णके वाक्य सुनके अर्जुन बोलते भये कि, हे मधुसूदन ! जो यह योग समताकैरके तुमने कहा सो मनके चंचलत्वसे मैं इसकी स्थिर स्थिति नहीं देखताहौं॥

Arjuna said :

For this At-One-ment by Sameness
which Thou, O Master, dost proclaim, 33
I see no trustworthy basis
amid the shifting seas of mind.

३३

अर्जुनने कहा—

साम्य-बुद्धिसे प्राप्य योग यह जो बतलाया तुमने तात !
मनकी चंचलताके कारण मुझे हो रहा अस्थिर ज्ञात

दोहा—सकलजीव अरु ईशको समदर्शन जो योग ।
तिस दृढता मन आयना चंचलता चितरोग ॥ ३३ ॥

۳۳- پربھو آپ نے جو کہ مارگ بتایا
کہ کلیان کاری سکھوں کو جتایا

مجھے من کے چنچل پنے کے ہی کارن
مشکل بڑا یوگ یہ نظر آیا

This yoga which Thou hast declared to be by equanimity, O Madhusûdana, I see not a stable foundation for it, owing to restlessness ; (33)

(۳۳)

آپ نے تو مجکو تسلیم و رضا تلقین کی
لیکن اپنا دل ہے مُتحرک یہ دِقّت آپڑی

33. O Mādhu's Slayer, for this *Yog*
By evenness, now taught by thee,
I do not see a basis firm,
Because of mental restlessness.

(३३)

समत्व भाव से ध्यान योग जो, कहा आपने हे यदुनाथ !
मन चंचलता वश वह देगा, नहीं विशेष काल तक साथ।

۳۳

ارجن نے دیا جواب اب یوں
محسن سے کیا خطاب اب یوں
ہے جوگ کا علم قابلِ داد
یکسانیت ہے اس کی بنیاد
اے مدھ سودن یہ میں نے مانا
دل کا نہیں پھر بھی کچھ ٹھکانا
رہتا ہے یہ مدام بے کل
پڑتی ہی نہیں کبھی اسے کل

मधु-दैत्य-संहार-कर ! योगिराज श्रीकृष्ण ! ।
समता का यह योग शुभ, कहा आप जो कृष्ण! ॥८७॥
चञ्चलताको जानता, अस्थिरता मन की । (33)
नींव नहीं मैं देखता, सुदृढ योग इसकी ॥८८॥

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ॥ तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ ३४ ॥

दोहा–मनहैचंचलकृष्णजू, बहुक्षोभकदृढजानि ।
ताकोरोकनपवनसम, है अतिकठिनजुमानि॥३४

हे कृष्ण ! जिससे कि यह मन चंचल इंद्रियोंका क्षोभक दृढ़ बली है मैं इसको रोकना पवनका रोकना जैसा दुष्कर मानताहों ॥ ३४ ॥

۳۴۔ چنچل ہے من کرشن اور طوفانی — شہ زوری و مضبوطی ہے یاں لاثانی
من کا مشکل ہے روکنا بس اس طرح — جس طرح کہ مٹھی میں ہوا لے آنی

Restless, O Kṛṣhṇa, is this mind, 34
headstrong, powerful, strenuous :
To curb it seems to me as hard
as to hold back the wayward wind.

३४

क्योंकि कृष्ण! यह मन चंचल है, दृढ़ है, हठी और बलवान
इसका निग्रह वायु-सरीखा दिखता मुझको कठिन महान

अति ही चंचल कृष्ण! मन बलकर विषयन जाय ।
मन चंचलको वायुसम निग्रह नाहिं बनाय ॥ ३४ ॥

۳۴۔ کرشن دیکھو من تو ہے چنچل بڑا
نہیں اس کا ثانی کوئی دوسرا
ہوا کو جو روکے تو آسان ہے
مگر من کا رکنا ہے کارج کڑا

For the mind * is very restless, O Krishna; it is impetuous, strong and difficult to bend. I deem it as hard to curb as the wind. (34)

एह मन चंचल नंद दे लाला
एह मन हठी बहुत बल वाला
एह मन मोड़िआं मुड़दा नांहीं
रात दिने उठ पैंदा गांहीं

चंचलता थीं एह नहीं उकदा
पवन वेग सम एह न रुकदा । ३४ ।

(۳۴)

دل ہے سرکش مُفسد و عیّارا اے عالی مقام
باد پائے بے عناں مُشکل سے لیتا ہے لگام

34. O Kṛishṇa, restless is the mind,
Perverse, impetuous, obstinate,
To curb it seems to me as hard,
As to control the wayward wind.

(३४)

यह मन चंचल इन्द्रिय क्षोभक, सुदृढ़ वली है पवन समान;
इस पर जय पाना है दुष्कर, मेरे मत में है भगवान!

श्रीभगवान:—

۳۴

اے کرشن یہ دل بڑا دنی ہے
سرکش بیباک فتنہ پرداز
لیتا ہے یہ ضد سے کام دایم
قبضہ اس پر بشر کا پانا

ادراک سے اس کو دشمنی ہے
آتا ہی نہیں فساد سے باز
رہتا نہیں اک جگہ یہ قایم
قابو میں ہے ہوا کو لانا

मन अतिशय बलवान् है, चञ्चल पुनः अतीव।
सुदृढ तीरसमान वह, मथ डाले सभी जीव ॥६९॥
उसका संशम मानता, मैं दुष्कर ज्यों वेग।
वायुका ही हो ऐकना, सातिशय कष्ट उद्वेग ।[illegible]॥

66c

६/३५

श्रीभगवानुवाच ।

**असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं च-
लम् ॥ अभ्यासेन तु कौंतेय वैरा-
ग्येण च गृह्यते ॥ ३५ ॥**

दोहा–अर्जुनतुमसाँचीकही, मनचंचलनमहाय ।
योगकियेवैरागसों, नीकैपकरोजाय ॥ ३५ ॥

ऐसा सुन श्रीकृष्णभगवान् बोले कि, हे महाबाहो ! यह मन चंचल है इसीसे रोकनेमें आना कठिन है. यहां संशय नहीं तो भी हे कुंतीपुत्र ! अभ्यासकरके और वैराग्यकरके रोकनेमें आताहै ॥ ३५ ॥

۳۵۔ اے ارجن کام ہے یہ بیشک مشکل
پر دو ہیں طریق اُن کے ابھیاس اور بیراگ
مضطر ہے بہت رکنا ہے مشکل ہی دل
ان دونوں سے ہو جاتا ہے مطلب حاصل

The Blessed One replied : 35

Without doubt, O long-armed Hero,
the mind is restless, hard to curb.
Yet by constant E f f o r t , Pārtha,
matched with Indifference,—curbed it *is*.

२४

भगवान्‌ने कहा—

अर्जुन ! मन चंचल है इसका निग्रह करना कठिन अवश्य ।
किन्तु पार्थ ! अभ्यास तथा वैराग्य कियेसे हो यह वश्य ॥

[illegible]

श्री भगवानोवाच

**सच पारथ एह कम्म नहीं सौखा
मन चंचल वस करना औखा
फेर वी हे वड्ड बाहू अर्जुन
मन वैराग अभ्यास दे कारण
चंचलता थों दूर हो जांदा
एह मन चंचल वस विच्च आंदा । ३५ ।**

दोहा—मन चंचलको कठिन है निग्रह यद्यपि तात ।
तद्यपि मन अभ्यासतें विषयनसौं हट जात ॥ ३५ ॥

Without doubt, O mighty armed, the mind* is hard to curb and restless; but it may be curbed by constant practice and by dispassion. (35)

(۳۵)

فطرتاً گو شوق و رم ہے مرکبِ دل کا شعار
بھُولتا ہے چوکڑی جب عشق کی پڑتی ہے مار

The Blessed Lord said:—

35. O stalwart-armed, undoubtedly
The mind is restless, hard to curb,
Yet, Kunti's son, it can be checked
By effort and indifference.[22]

(३५).

सचमुच मन चंचल होता है, इसे जीतना दुष्कर कार्य्य:
अभ्यासों वैराग्यों ही से, रोका जाता है वह आर्य्य ।

۳۵

بھگوان نے کی جو لب کشائی — پھر یوں راہِ عمل دکھائی
ارجن بیشک ہے ٹھیک یہ بات — جاری پیہم ہیں دل کی حرکات
پھنستا نہیں مُرغ یہ قفس میں — آتا ہی نہیں کسی کے بس میں
پھر بھی جو وہ ترک میں ہو کامل — ممکن ہے کہ قید کر سکے دل

महाराज कृष्ण साक्षात् लक्ष्मीनारायण उत्तर देते भए-
बडी भुजासे युक्त हे! पार्थवीर सुश्रेष्ठ! ।
निश्चय ही अति कठिन है, मन रोकना प्रेष्ठ ॥७१॥
है चञ्चल पर जाय रुक, वासना त्याग से वीर ।
वार बार के यत्न से, हे कुंतिसुत धीर! ॥ [illegible] ॥

अंसंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः ॥ वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः ॥३६ ॥

दोहा–जिनपकरयोनहिंचित्तनिजु, तापैयोगनहोय ।
जिनअपनोमनवशकियो, लहतजगतसोसोय ३६॥

यह योग जिसने मन वश न किया उसेकरके प्राप्त होनेका नहीं ऐसी मेरी मति है और जिनने मनको वश किया है उसकरके यत्न करते करते उपायसे प्राप्ति होनेको सकताहै ॥ ३६ ॥

۳۶۔ من جس کا نہیں ہے بس میں مشکل ہے اُسے
ہے میری رائے یوگ کہتے ہیں جسے
من بس میں ہو کرتا رہے سعی پیہم
تجویز یہ ثمرہ نہیں دیتی ہے کسے

3

दोहा—वह नाहिं जिसके चित्त तिस योगवशे ना तात ।
कर्मयोगते चित्तको वसकर वह बनजात ॥ ३६ ॥

8

एह मन जिसदा वस विच्च नाँहीं
योग नहीं लभदा उस ताँईं
एह मन जिसदा वस विच आवे
उस दा योग सफल हो जावे । ३६ ।

6

36

For the man of mind unmastered,
At-One-ment is past reach, I deem ;
While for him that rules his Kingdom,
—if he try hard,—there is a way.

13

३६

7

चंचल मनवाले मानवको मेरे मतसे दुर्लभ योग ।
मनको वश रख, यत्न कियेसे इसे प्राप्त करते हैं लोग ॥

۳۶- جو محنت سے من کو نہ قابو کرے
سمجھ پیارے یہ یوگ اس سے پرے
یتن سے لیا جس نے من اپنا جیت
پرم یوگ کو وہ تو حاصل کرے

Yoga is hard to attain, methinks, by a self that is uncontrolled: but by the SELF-controlled it is attainable by properly directed energy. (36)

(३६)

मन पर जय जो नहीं पा सका, उसे कठिन है पाना योग;
पर स्वाधीन मनस्वी उसको, पाते हैं कर के उद्योग।

अर्जुनः—

(۳۶)

ضبطِ دل پر منحصر ہے علمِ باطن کا حصول
دل ہے بے قابو تو کوشش اسمیں ہوتی ہے فضول

36. Methinks that *Yog*-attainment is
Not easy for the uncontrolled,
But by the self-controlled who strive,
It may by proper means[23] be won.

۳۶

میرا تو یہی ہے بس عقیدہ
بس میں رہتے ہیں اس کے جو لوگ
پھر بھی جو اس کے ہیں گرہ گیر
ہو کر مصروف سعی کامل

ہر چند ہے مرغ دل پریدہ
ان کی تقدیر میں نہیں یوگ
ہیں کر چکے اس بلا کو تسخیر
کر سکتے ہیں وہ یوگ حاصل

मिलना योग है कठिन ही, जिस जीता न निजात्म।
सम्मति मेरी है यही, कहां योग क्व अनात्म ॥७३॥
वैराग्यअभ्याससे, सदुपाय सह यत्न।
आत्मवशी सके योग पा, कर अनेक सुप्रयत्न॥७४॥

622

अर्जुन उवाच

श्रद्धा नाल जो योग नूं लोड़े
कर कर यतन जो मन नूं मोड़े
जेकर फेर वी योग न पावे
जेकर फेर वी मन भरमावे
सो नर कौन गतीं नूं पांदा
हे भगवन ! दस हाल तिन्हां दा । ३७ ।

۳۷ - شردھا جس کے من میں بھری ہے بڑی
مگر یوگ کی جان منزل کڑی
اُدھورا کرم چھوڑ دے جو پرش
گتی اس کی کیا ہوگی کہ دو بہری

अर्जुन उवाच ।

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः ॥ अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ॥ ३७ ॥

दोहा—अयतीअरुश्रद्धासहित, योगभ्रष्टतापाय ।
लहैनसिद्धसुयोगकी, कौनगतिहिकोजाय ॥ ३७ ॥

"नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते" इत्यादि वाक्यों करके योगमाहात्म्य सुनाथा तौभी विशेषज्ञानके वास्ते फिर पूंछतेहैं—जैसे कि, हे कृष्ण ! जो श्रद्धाकरके युक्त और यत्ननकरसकों इससे योगसे मन चलायमान भया इससे योग सिद्धिको नपायके किस गतिको जाता है ॥ ३७ ॥

۳۷- جسکا عقیدہ تو بہت ہے اچھا
پر یوگ سے من ہٹ گیا جو رہا
اور یوگ کی تکمیل نہ ہونے پائی
کیا ہوتا ہے حال کرشن اُس یوگی کا

Arjuna said :

He that has faith, but no control, 37
whose mind from Y ó g a goes astray,
Whose bid for Y ó g a fails at last,—
what path, O Krṣhṇa, treads that man?

३७

अर्जुनने कहा—

विचलित हुआ योगसे अनियत मनवाला श्रद्धाके साथ ।
योगसिद्धिको प्राप्त न करफिर किस गतिको पाता, हे नाथ ! ॥

दोहा—श्रद्धाकर जो योगमें मन निग्रह बिन लाय ।
बीचहिमें हटजाय पुनि तिस गति कह हो काय ॥ ३७ ॥

He who is unsubdued but who possesseth faith, with the mind* wandering away from yoga, failing to attain perfection in yoga, what path doth he tread, O Krishna? (37)

(۳۷)

شاغلِ ناکام جسکا ہے پراگندہ خیال
کیا بنے گا شغل میں حاصل نہ ہونے سے کمال

Arjun asked :—

37. He who has faith but will not strive,
Whose mind from *Yog* is turned away,

Who fails to perfect be in Yog,
Which way, O Krishna does he go?

(३७)

श्रद्धायुक्त यत्न करने से, यदि मन डुगा तो फिर हे श्याम!
योग-सिद्धि मग-विचलित होने; से क्या गति मिलती घनश्याम!

۳۷

ارجن نے کیا سوال اے کرشن
ایسے بھی جہاں میں کچھ ہیں انساں
لیکن تدبیر کی کمی سے
تکمیل میں جوگ کی ہیں ناکام

اے راہبر کمال اے کرشن
جن کے دل میں ہے نور ایماں
تنگ آکے یہ اس کی برہمی سے
کیا ہوتا ہے آخر ان کا انجام

आत्मावश नहीं कर सका, पर श्रद्धा भरपूर।
चञ्चल मन गया डोल जिस, योगमार्गसे दूर ॥३७॥
योगसिद्धि नहीं प्राप्त हो, जिसको सकी यथार्थ।
कौनसी गति वह पायगा, कृष्ण! यह पूछे पार्थ ॥७६॥

कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति ॥ अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥ ३८ ॥

दोहा–किधौंदुहुनितेभ्रष्टहै, बादललौंविनशाय ।
ताकोकछूनआसरो, रह्योंमूढ़केभाय ॥ ३८ ॥

हे महाबाहो ! वेदके मार्गमें भूलाभया याने स्वर्गादि प्राप्तिनिमित्त कर्म त्यागके निष्कामककर्मरूप योगको भी न प्राप्तभया इसीसे वह अप्रतिष्ठित और उभयभ्रष्ट याने स्वर्गादिप्राप्तिकारक कर्मभी छोडा और योगभी न मिला इसीसे कदाँचित् छिन्नाभ्रकी तरह जैसे बड़े मेघमेंसे निकसिके मेघका टुकडा दूसरे मेघको न प्राप्तहोके बीचहीमें नष्ट होताहै तैसे नै नष्टहोइ ॥ ३८ ॥

۳۸۔ کیا ہو کر منتشر وہ بادل جیسا
ملتی ہی نہیں پناہ اور جائے قیام
رہتا ہے ادھر کا نہ ادھر کا اصلا
اور برہم کی راہ میں بھٹکتا پھرتا

दोहा—योगमार्गमें मूढ भक स्थिरताहीन अजान ।
इतसों उतसों भ्रष्ट क्या नष्ट छि होत सुजान ॥ ३८ ॥

Might he not, cast adrift from 'both',* 38
be riven like a scattered cloud,
Of standing reft, All-Reaching Lord,
and mazed past hope on BRAHMA's Path ?

सो नर हो निर आसरा रुलके
ब्रह्म दे मारग विच्च भुल भुल के
बद्दल सम छिन्न भिन्न हो जावे
यां की होर गती ओह पावे । ३८ ।

३८

ब्रह्म-मार्गसे अज्ञ निराश्रय उभय ओरसे होकर भ्रष्ट ।
छिन्न-भिन्न बादल-समान वह क्या हो जाता है फिर नष्ट ? ॥

Fallen from both, is he destroyed like a rent cloud, unsteadfast, O mighty armed, deluded in the path of the ETERNAL? (38)

(۳۸)

جو ہے دل میں مضطرب ور وصل سے نا آشنا
آپ اپنے نقص سے کیا ہو نہیں جاتا فنا

Who fails to perfect be in *Yog*,
Which way, O Kṛishṇa, doth he go?

38. Is he for having failed in both [24]
Destroyèd like a riven cloud;
Benighted on the path to Brahm
Has he no prop, O stalwart-armed?

(३८)

छिन्न भिन्न होने से माधव ! हो न जायँ दोनों ही नष्ट;
छिन्न मेघ गण के समान ही, योग भोग दोनों से भ्रष्ट ?

۳۸

اے مخزنِ طاقت اے قوی بال
کیا وہ صبر و سکوں سے محروم
دین و دنیا کو اپنی کھو کر
ہو جاتے ہیں تباہ ایسے

ہوتا ہے بالآخراں کا کیا حال
دشواری عشق حق سے مغموم
دونوں چیزوں سے ہاتھ دھو کر
بادل مٹ جائیں پھٹ کے جیسے

संसार अरु मोक्षके, दोऊ मार्गसे भ्रष्ट ।
क्या वह नहीं हो जायगा, सम्पूर्णतया नष्ट ॥७७॥
कटी टुकडियां मेघ की, त्यों वही योगसे भ्रष्ट ।
परमात्माके मार्गसे, मूढ हुआ पथभ्रष्ट ॥७८॥

एतन्मे संशयं कृष्ण च्छेत्तुमर्हस्यशेषतः ॥ त्वदन्यः संशयस्यास्य च्छेत्ता नह्युपपद्यते ॥ ३९ ॥

दोहा--मेरेयासंदेहको, करोदूरिजगदीस ।
मेटोयासंदेहको, कौनकरैतुवरीस ॥ ३९ ॥

हे कृष्ण ! इसे मेरे संशयको अच्छीतरहसे छेदन करनेको योग्यहो क्योंकि, इस संशयका छेदनेवाला तुमबिन दूसरा नहीं मिलेगा ॥ ३९ ॥

۳۹۔ درخواست مہاراج یہ کیجے منظور
پوری طرح اس شک کو مرے کیجے دور
دور ایسے شک کو راست کہتا ہوں میں
کرسکتا ہے آپ کے سوا کون حضور

O Kṛshṇa, Thou hast surely pow'r 39
to solve my doubt for good and all!
Apart from Thee, none may be found
with skill to lay a doubt like this.

VI,39,
Be pleased ,O Krishna to dispel, This doubt by which
I am assailed;
None other can except thyself
Succeed in chasing it away.

हे भगवन एह गल समझा दे
मेरे मन दा भरम मिटा दे
तुद्ध बिन संशय कौन मिटावे
तुद्ध बिन मारग कौन दिखावे । ३९ ।

३९

कृष्ण ! चाहिये तुम्हें मेटना यह मेरा ऐसा सन्देह ।
तुम्हें छोड़ है कौन दूसरा, जो मेटे इसको सस्नेह ॥

दोहा--दूर करौ संदेह मम जौ बरन्यौ हा तात ।
तुम बिन और न काहुसे संशय एह मिटात ॥ ३९ ॥

626

Deign, O Krishna, to completely dispel this

doubt of mine ; for there is none to be found save Thyself able to destroy this doubt. (39)

(۳۹)

یہ خلش دل کی مٹا دیں آپ کافی طور سے
کون بہتر آپ سے ہے رفع شک جو کر سکے

39. Be pleased, O Kṛishṇa, to dispel,
This doubt by which I am assailed ;
None other can except Thyself
Succeed in chasing it away.

(३६)

माधव! मेरे इस संशय को, हरने योग्य आप हैं एक;
बढ़कर और आप से कोई, दे सकता है कौन विवेक?

۳۹

اے کرشن براہ مہربانی — فرمائیے دور سرگرانی
ہیں دل پہ مرے گماں یہ غالب — تردید شکوک کا ہوں طالب
میری تسکین لازمی ہے — مجھ کو تلقین لازمی ہے
کرنے انہیں رفع جو بہر طور — کوئی نہیں آپکے سوا اور

टिका सके नहीं चित्तको, सके प्रतिष्ठान पाय।
परम प्रतापी कृष्ण हे!; संशय दो यह हटाय ॥७९॥
इसे काट सकें आपही, सम्पूर्ण निःशेष।

(39)

योग्य न ऐसा अन्य को, काटे इसे जो अशेष ॥८०॥

६/४०

श्रीभगवानुवाच ।

पार्थ नैव हेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ॥ न हि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति ॥ ४० ॥

दोहा–अर्जुनदोऊलोकमें, ताकोहोयननास ।
भलेकर्मजोकरतहै, तिनकोअघनहिंवास ॥ ४० ॥

अर्जुनके वाक्य सुनिके कृष्ण बोले कि, हे पार्थ ! उस योगीको नाश न इसलोकमें ही न परलोकमें होता है; क्योंकि, हे तात ! शुभकर्त्ता कोई भी दुर्गतिको नहीं पावता है ॥ ४० ॥

(۴۰)
پارتھ جسکا ارادہ نیک ہیں پاک
دونوں عالم میں رسوائی اسکا ہوتا ہی کبھی

۴۰۔ سن میری بات ارجن شیر جو اس
جو شخص بھلے کام میں مصروف ہوا
ایسے یوگی کو ہے فنا یاں نہ وہاں
اس کی درگت کا ہو سکے کب امکاں

The Blessed One replied:

O Pārtha, neither here nor there 40
does ruin lie in wait for him.
In sooth, no man of handsome deeds,
O dearest, treads the Path of Woe.

दोहा–योग छुट्यौ हटजाय जो हानि न तिसकी होय ।
दुर्गति तिस ना हो कैं भलो काम नर जोय ॥ ४० ॥

श्री भगवानोवाच

हे पारथ जो यतन करेंदे
योग दे मारग कदम धरेंदे

फेर वी जो सिद्धी नहीं पांदे
सो नर योगाभ्रष्ट कहांदे
योगाभ्रष्ट नाश नां पावण
नीच जून विच्च कदी न जावण
जो नर चंगा कर्म कमावे
कीकण नीच गती सो पावे । ४० ।

४०

श्रीभगवान्‌ने कहा—

अर्जुन ! उभय लोकमें उसका कभी नहीं होता है नाश ।
क्योंकि सुकृत करनेवालेके दुर्गति नहीं फटकती पास ॥

۴۰۔ سنو پیارے ارجن ذرا غور کر
نکالو جلد دل سے اس کا فکر
نہ نیکی کا انجام ہوتا بدی
نہ نقصان بھگتوں کا ہو ذرہ بھر

O son of Prithâ, neither in this world nor in the life to come is there destruction for him; never doth any who worketh righteousness, O beloved, tread the path of woe. (40)

(४०)

योगी का दोनों लोकों में, होता नहीं कभी है नास;
शुभ कर्मों के करने वाले, बनें नहीं दुर्गति के ग्रास ।

VI, 40.

The Blessed Lord replied:-

O, Pritha's son in neither world
Destruction lies in store for him;
For none, O loved on comes to grief,
Who worketh deeds of righteous men.

۴۰

بھگوان نے اب کیا یہ ارشاد — پیارے ارجن خجستہ بنیاد
گو ہیں یہ اسیر دام تقصیر — ناکام عمل شکستہ تدبیر
لیکن دنیا ہو خواہ عقبیٰ — ذات ان کی فنا سے ہے مبرا
اعلیٰ کردار نیک افعال — ہوتے نہیں دو جہاں میں پامال

श्रीभगवान् अपने मुखारविन्दसे फिर उचरे—

इस लोक उसे लोक में, भी उसका न हो नाश ।
हे अर्जुन ! शुभकर्मकृत्, कोई न पावे ह्रास ॥ ८१ ॥
प्यारे! दुर्गति पाय न, कल्याण-कर कोउ ।
नष्ट कबहुं नहीं हो सके, श्रेयस्कर शुभ जोउ ॥८२॥

دونوں عالم میں ساوی اسکا ہوتا ہے بھلا

6/41

प्राप्य पुण्यकृतांल्लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः ॥ शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥ ४१ ॥

दोहा–पुण्यवंतकेलोकलहि, रहितबहुतदिनजाय ।
योगभ्रष्टधनवंतशुचि, तिनघरजनमैंआय ॥४१॥

जो योग पूराभयेविना मरजाय तो भी वह योगभ्रष्ट पुण्यकरनेवोलोंके लोकोंको प्राप्तहोके वहां अनेकवर्ष रहिके पवित्र और धनवालोंके घरमें जन्मता है ॥४१॥

۴۱۔ نیکوں کے لوک اس کو ملتے ہیں سدا
برسوں لیتا وہاں ہے بھوگوں کا مزا
پھر پاک ارباب مال وزر کے گھر میں
ہے یوگ بھرشٹ آکے پیدا ہوتا

४१

स्वर्गादिक लोकोंको पाकर वर्षोंतक, रह वहाँ प्रसन्न ।
पावन श्रीमानोंके घरमें योगभ्रष्ट होता उत्पन्न ॥

Raised to worlds wrought of his fair deeds, there having dwelt for countless years, In a home prosperous and pure the Yóga-failed is born again. 41

जो नर योगाभ्रष्ट हो जावण
मर के पुन्य लोक नूं पावण
चिर तक वास करन उस थांईं
जिस जा दुख पाप कोऊ नांहीं
तद फिर मानुष देह ओह पांदे
चंगयां धर्मीयां दे घर आंदे । ४१ ।

दोहा–योगभ्रष्ट निजपुण्यसों स्वर्गजाय सुख भोग ।
तिस कुल जन्मत हो जहां धन शुद्धी अरु योग ॥ ४१ ॥

(۴۱)

نیک کرداروں کی جو دنیا ہے پہنچیگا وہاں
اُسکی نیکی ہوگی دولتمند مینکوں میں عیاں

(४१)

योग-भ्रष्ट-नर भी पाते हैं, पुण्य लोक का ही आवास;
फिर शुचि श्रीमानों के घर में, जन्में जग में हे मतिरास !

The Blessed Lord replied :—

40. O Prithā's son, in neither world
Destruction lies in store for him;
For none, O loved one, comes to grief,
Who worketh deeds of righteous men.

۴۱ - وہ مر کر بڑے سکھ کو پاتا رہے

کہ پُن دان جس جا پہ جاتا رہے
جنم لے پوتر کلوں میں وہ آ
شرمیان پرشوں سے ناتا رہے

41. The man who once had failed in *Yog*,
Attains the world of righteous men,
And after being there for years
'Mongst pious folk he is re-born.

۴۱

جو یوگ میں رہ چکے ہیں ناکام
مرنے پہ ہیں سوئے خلد جاتے
کچھ روز وہاں قیام کرکے
پیدا ہوتے ہیں ان کے گھر میں

ہیں آدمی وہ بھی نیک انجام
اُس دنیا میں ہیں بار پاتے
میعاد اس کی تمام کرکے
ملتے ہیں جو زر و گہر میں

Having attained to the worlds of the pure-doing, and having dwelt there for immemorial years, he who fell from yoga is reborn in a pure and blessed house; (41)

पुण्य कर्म कर्त्ताओं के, उत्तम लोक में जा।
सैकड़ों वर्षों तक वहां, बस कर शुभ सुख पाय ॥८३॥
योगभ्रष्ट उत्पन्न हो, धनवान् कुलमध्य।
सुपवित्र शुभ लब्धिम, श्रीशोभा सुखमध्य ॥ ८४ ॥

अथवा योगिनामेव कुले भवति धी-
मताम् ॥ एतद्धि दुर्लभतरं लोके
जन्म यदीदृशम् ॥ ४२ ॥

कोई कोई जद मानुष देह पावण
योगीयां दे घर जन्म लै आवण
अत्त दुर्लभ एह जनम कहावे
जन्म ऐसा कोई विरला पावे । ४२ ।

दोहा–बुद्धिवंतयोगीकुलनि, आयलेयअवतार ।
जन्मलहंतऐसेवरनि, होतनवारंवार ॥ ४२ ॥
अथवा बुद्धिमान् योगिनके कुलमें ही जन्मता है,
जो ऐसा यह जन्म सो इस लोकमें निश्चय दुर्लभ है ४२

۴۲- یا ہوتا ہے یوگیوں کے گھر میں پیدا
لیکن وقت طلب ہے اور مشکل ہے
جو اہل خرد ہوں صاحب فہم وذکا
دنیا میں جنم آدمی کا ایسا

Or else he may perhaps take birth 42
in some abode of Yógīs wise.
But—in this world—'t is passing hard
to light on such a birth as that.

४२
या लेता है विज्ञ योगियोंके ही कुलमें वह अवतार ।
इस प्रकारका जन्म लोकमें अति दुर्लभ है पाण्डुकुमार ! ॥

दोहा–यथवा योगिनके स्वयं कुलमें जन्मत सोइ ।
उक्तउभयविध जन्म इह दुर्लभ मिलतो कोइ ॥ ४२ ॥

۴۲- یا وہ یوگیوں میں پھر اوتار لے
بُدھی وانوں کا یا وہ پریوار لے
جہاں جنم ملتا بڑے بھاگ سے
کہ ڈوبے ہوئے بیڑوں کو تار لے

(۴۲) [illegible]

(४२)
ज्ञानवान योगी के गृह वे, अथवा लेते हैं अवतार;
बड़ी कठिनता से पाता है, ऐसा जन्म कभी संसार ।

VI , 42.

Or in a home of Yogins wise,
He doeth perchance re-enter life;
But to obtain a birth like this,
On earth isvery rare indeed.

۴۲

ورنہ اِن جوگیوں کے گھر میں　　دانا ہیں جو خلق کی نظر میں
محوِ سیرِ بہارِ ہستی　　ہیں رہرو رہگزارِ ہستی
لیکن اس قسم کی ولادت　　تقدیرِ بشر کی یہ سعادت
فی الواقع ہے اک امرِ مُشکل　　یہ فخر نہیں ہے سب کو حاصل

ऐसे गृह में जन्म ले, अथवा बुद्धिमान् ।
योगिजनों के ही शुद्ध कुल, में जन्मे सुमहान् ॥८५॥
अत्यन्त दुष्प्राप्य यह, संसार में जन्म ।
जो ऐसे ही योगियों, के कुल में शुभ जन्म ॥८६॥

654

६/४३

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदैहिकम् ॥ यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनंदन ॥ ४३ ॥

दोहा--तिनहूँपहिलीदेहको, लहतबुद्धिसंयोग ।
यतनकरतहैसिद्धिको, बहुविधिसाधैयोग ॥४३॥

हे कुरुनंदन ! वहां जन्मलेके वैही पूर्वदेहँसंबंधी बुद्धिसंयोगको पावता है और उसपीछे फिरभी उस सिद्धिनिमित्त यत्नकेरता है ॥ ४३ ॥

۴۳۔ وہ پہلے جنم کی مشق اب یاں آکے
یاد آجاتی ہے جو کہ حاصل تھی اسے
اور اب پھر سے وہ سعی و کوشش کرتا
تکمیل کے درجے پہ پہنچنے کے لیے

दोहा—पूर्वजन्म के योगको योगिनके कुल पात ।
योगसिद्धिहित यत्नको दृढमन करतो तात ॥ ४३ ॥

४३

वहाँ जन्म ले पूर्व-जन्मकी मतिको पाकर वह नर-रत्न ।
उससे अधिक सिद्धि पानेका करता रहता सदा प्रयत्न ॥

There he regains what Poise of Will 43
was, in that former body, his,
And strives for Wholeness even more,
O best of Kurus, than before.

योगीयां दी कुल विच्च जो आंदा
उस दा ध्यान मगर जुड़ जांदा
संसकार पिछले जनमां दे
योग मारग वल्ल खिच्च लै जांदे
सो जिज्ञासू मोक्ष नूं पावे
शब्द ब्रह्म थों पार हो जावे । ~~४४~~ । 43-44

۴۳۔ کرے پھر وہاں سابقہ کار کو
کرم یوگ کے پا کے سنسکار کو
ادھورا کرم رہ گیا تھا جو پہلے
کرے پورا کرنے کے ویوہار کو

Or he may even be born into a family of wise Yogis; but such a birth as that is most difficult to obtain in this world. (42)

(४३)

पूर्व-जन्म-संस्कार विवश वह, पाता है समत्व संयोग;
हे कुरुनन्दन ! कर प्रयत्न फिर, करता है वह विधिवत् योग ।

42. Or, in a home of *Yogins* wise,
He doth perchance re-enter life;
But to obtain a birth like this,
On earth is very rare indeed.

43. He, there that knowledge re-acquires
Which in the former life he had,
And then again, O Kurus' joy,
To gain perfection he doth strive.

(۴۳)

علمِ روحانی کو حاصل کرکے پہلے جسم کی
پھر کرے گا شغل کی تکمیل میں کوشش نئی

There he recovereth the characteristics belonging to this former body, and with these he again laboureth for perfection, O joy of the Kurus. (43)

۴۳

یوں کرکے قبول بارِ ہستی   بن کر سرمایہ دارِ ہستی
تکمیلات گذشتہ سے شاد   ان سب کو بنا کے سنگ بنیاد
کرتے ہیں عمل کا قصر تعمیر   ہوتے ہیں دوبارہ صرف تدبیر
دل ان کا سکون تاکہ پا جائے   دُرِّ مقصود ہاتھ آجائے

उसी पुराने जन्म की, योगिकि बुद्धि प्राप्त ।
वहां करे पुन: यत्न कर, योगसिद्ध सुप्राप्त ॥८७॥

करे वह योगी अभ्यास अरु, वैराग्य शुभसार ।
कुरु-कुल-सर्व-प्रसन्नकर ! योगसिद्धि पाये सार ॥८८॥

पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः ॥ जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्त्तते ॥ ४४ ॥

दोहा–सोतौअपनेवशनहीं, सोपहिलोअभ्यास ।
तातेडपजैयोगको, ब्रह्मशब्दमें वास ॥ ४४ ॥

जो न करना चाहै इंद्रियजित न होय तोभी वह पुरुष उसी पूर्वाभ्यासकेरके उसीको प्राप्त होता है. क्योंकि, जो योगके जाननेकी भी इच्छा करे तौभी शब्दब्रह्म यानें देवादिनाम शब्दयुक्त जो प्रकृति उसको उलंघन करजीताहै यानें मुक्त होता है ॥ ४४ ॥

(۴۴)

شغلِ سابق کی مدد سے طالبِ نیکی شعار
بحرِ قدرت کے نکل جاتا ہے پارِ انجامِ کار

۴۴۔ لے اُڑتی ہے وہ مشق اسباب پہلی
ویدوں کے عالم اور عامل سے بہت
اور نہ لے بس ہو کے کرتا ہے یوگ ہی
بڑھکر ارجن سے ہے یوگ کا طالب بھی

'T is his endeavour made of yore
that draws him, e'en against his 'will.' 44
Of Yóga whoso but enquires
has left behind the 'god' of words.

By that former practice he is irresistibly swept away. Only wishing to know yoga, even the seeker after yoga goeth beyond the Brâhmic world;* (44)

४४

पूर्वाभ्यासयोगके बलसे उसी ओर झुक कर लाचार ।
योग-सिद्धिका इच्छुक होकर जाता शब्दब्रह्मके पार ॥

दोहा–पूर्वजन्म अभ्याससों बिवश ह्व करतो योग ।
ज्ञानमात्रसों योगके तिस छूटत भवरोग ॥ ४४ ॥

۴۴۔ وہ ابھیاس پچھلے جنم کا جو تھا
اسے یوگ میں لے گا جلدی لگا
وہ ہو یوگ کا گر بچہ طالب علم
وہ مایا کے بندھن کو لیتا مٹا

[illegible] को ४४
श्लोक ४३ से मिला
हुआ है

(४४)

विषयों के वश में भी रहकर, भगवद्भक्ति करै स्वीकार;
वेदोल्लिखित सकाम कर्म-फल, को कर जाता है वह पार।

44. By that same former practice,[26] he
Resistlessly is swept away,[27]
Though *merely wishing Yog* to know
Above the Word Divine [28] he soars.

44

پچھلے شغلوں سے اپنے مسحور ہوکر ان کی کشش سے مجبور
بے خواہش و آرزوئے تکمیل مائل ہوتے ہیں سوئے تکمیل
جو یوگ کے لطف کا ہے خواہاں دل میں رکھتا ہے اس کا ارماں
طے کر کے حدود علم مطلق وہ بھی ہوتا ہے واصلِ حق

पिछले जन्म के यत्न वश, विवश ले जाया जात।
योगमार्ग परही पुनः, अभ्यासवश तात! ॥८९॥
जो जिज्ञासु मात्र ही, योग का था गत जन्म।
में, वह भी यहां जाय तर, ओ३म् शब्द जो ब्रह्म ॥९०॥

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ॥ अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ॥ ४५ ॥

दोहा--योगीजोजतनानिकरै, डारेअवनितधोय ।।
बहुतजन्मसिद्धाहिलहै, ताहिपरमगतिहोय ॥४५॥

ऐसे प्रयत्नसे योग करता करता निष्पाप भयाहुआ योगी अनेक जन्मोंकरके सिद्धभया तब निश्चय मुक्तिको प्राप्त होताहै ॥ ४५ ॥

۴۵۔ سعی پیہم میں ہو کے ساعی یوگی
حاصل کر کے بہت سے جنموں میں کمال
سارے پاپوں کی اپنے کر کے شدھی
پاتا ہے وہی گتی ۔ پرم ہے جو گتی

४५
यत्न-सहित वह योगाभ्यासी जन्म अनेकोंके पश्चात !।
सब पापोंसे विमुक्त होकर उत्तम गति पाता अचिरात ।

But, striving on with steadfast Will, 45
the Yógī, cleansed of every stain,
Through lives uncounted 'Perfect' grown,
wins Entrance to the PATH *beyond*.

कर कर यतन जो उद्दम कर दे
पाप कर्म विच्च मन न धर दे
जन्म जन्म विच्च योग कमांदे
योग करन विच्च सिद्धी पांदे
तद ओह परम गती नूं पावण
तद ओह प्राणी मुक्त हो जावण । ४५ ।

۴۵۔ کرے یتن یوگی صفائی کے سارے
کہ من سے سکل پاپ مل کو نوارے

کئی جنم کے یوگ ابھیاس پیچھے
پرم دھام کے پہنچ جائے دوارے

दोहा—पापहीन नर योगमें यत्न करै दृढ जोय ।
बहुत जन्ममें सिद्ध हो पावत मुक्ती सोय ॥ ४५ ॥

But the Yogi, labouring with assiduity, purified

from sin, fully perfected through manifold births,
he reacheth the supreme goal. (45)

(۴۵)

قالبوں میں پاک ہوکر اور بہت کوشش کیا تھ
عارفِ کامل کا اعلےٰ مرتبہ آتا ہے ہاتھ

45. The *Yogin* who assiduous is,
Who's freed from sin and hath attained
Perfection after many births,
Achieves at last the Goal Supreme.

(४५)

सद्गति को पाता है योगी, करता है जो मन्द प्रयत्न;
क्यों न परमगति वह फिर पावै, रहता है जब सतत सयत्न ?

۴۵

رہ کر شب و روز صرف تدبیر
پہلے کئی بار ہو کے پیدا
جو کسب کمال کر چکا ہے
ملتا ہے اُسے مقام اعلیٰ

توڑی ہے گنہ کی جس نے زنجیر
رہ کر راہِ عمل کا شیدا
تزئین مآل کر چکا ہے
رتبہ ہوتا ہے اس کا بالا

जाप उसे स्वतः सिद्ध हो, जावे वह पाय विश्राम ।
पुनः प्रयत्न अभ्यास से, योगी बने सुमहान् ॥९१॥
पापसे सर्वथा शुद्ध हो, कई जन्म में सिद्ध ।
होता होता परम गती, पा बन जाय सुसिद्ध ॥९२॥

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्यो-
ऽपि मतोऽधिकः ॥ कर्मिभ्यश्चाधिको
योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥ ४६ ॥

दोहा—तपसिउतेयोगीअधिक, ज्ञानीहूतेजानि ।
कर्मनिहूंतेहैअधिक, अर्जुनयोमिहिमानि ॥ ४६ ॥

हे अर्जुन ! योगी जो निष्काम कर्म कर्त्ता सो सकामिक तपस्विनसे अधिक मानाहै, ज्ञानिनसे भी अधिक है और सकाम कर्म करनेवालोंसेभी योगी अधिक है, तिससे तुम योगी हो याने निष्काम होके स्वधर्म रूप क्षत्रियकर्म युद्ध करो ॥ ४६ ॥

۴٦ اے ارجن ہے تپسوی سے یوگی بڑھکر عالم سے بھی مرتبہ ہے اس کا برتر

جو کرتا ہے کرم اس سے بھی اعلیٰ ہے یوگی تو بھی ہو آ کے اے پاک گہر

४६

तपस्वियोंसे, विवेकियोंसे, और कर्म-निष्ठोंसे वीर !
योगी ही उत्तम माना है, इससे योगी हो रणधीर ।

The Yógī past ascetics soars, 46
and soars past sages too,—'t is said.
He soars past men of 'works' as well :—
hence Yógī be thou, Arjuna.

तपी तपीशर पंडित ज्ञानी
कर्म करन वाले सब प्राणी
योगी थों सब घट हँस अर्जुन
योग कमा योगी बण अर्जुन । ४६ ।

दोहा—केवल तप वा ज्ञान वा कर्म व साधत जोय ।
तिन समसों योगी मम प्रिय, तू योगी होय ॥ ४६

The Yogî is greater than the ascetics; he is thought to be greater than even the wise; the Yogî is greater than the men of action; therefore become thou a Yogî, O Arjuna! (46)

(۴۶)

زُہد و خیرات و عمل پر ہے فضیلت شغل کو
شغل کی خاطر تو نیّت باندھکر تیّار رہو

46. The *Yogin* is far more esteemed
Than the ascetic or the wise,
Yea, even than the man of deeds,
Hence, Arjun, be a *Yogin* thou.

(४६)

तपस्वी, शास्त्रज्ञों, सकाम कर्मों के कर्त्ताओं से श्रेष्ठ;
—माना गया सदा है योगी, अतः योग कर हे मतिज्येष्ठ।

۴۶

کامل جو ریاض میں ہیں اکمل — جوگی ان سے کہیں ہے افضل
کیسا بھی کوئی بشر ہو فاضل — یوگی کو شرف ہے اُس پہ حاصل
بالوث عمل ہے جن کا مشرب — ان سے بھی سوا ہے اِس کا منصب
ارجن بن جاؤ تم بھی جوگی — اس سے دنیا میں قدر ہوگی

तपकर्ताओं से, बडा, योगी कहा सुजान।
बडा ज्ञानियों से कहा, भी योगी गुणवान् ॥९३॥
कर्म उत्तम करें श्रेष्ठ नर, योगी उन से प्रेष्ठ।
माना गया अर्जुन! अतः, योगी बनो तुम श्रेष्ठ ॥९४॥

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनांतरात्मना ॥ श्रद्धावान् भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥ ४७ ॥

दोहा—जोयोगीराखैमनहिं, सोमेंनिश्चलभाय ।
श्रद्धायुतमोकोंभजै, सोसबतेअधिकाय ॥ ४७ ॥
कर्मज्ञानव्रतयोगते, भक्तिसबनिशिरमौर ।
तिनअर्जुनहोवशिकियो, मोबिनछिननहिंऔर ४८
हरिवल्लभभाषारच्यो, मनहूंराखतठौर ।
छठयेंअध्यायहिकह्यो, यहीयोगनिजमौर ॥४९॥

जो श्रद्धावान् पुरुष मेरेमें लगारहै जो चित्त ऐसे चित्त करके मेरेको भजताहै सो सर्व योगिनमेंभी श्रेष्ठ योगी है ऐसा मेरा अभिप्राय है ॥ ४७ ॥

इति श्रीमत्सुकुलशीतलरामात्मजपंडितरघुनाथप्रसाद-
विरचितायां श्रीमद्भगवद्गीतामृततरंगिण्यां
षष्ठाध्यायप्रवाहः ॥ ६ ॥
इति प्रथमं षट्कं समाप्तम् ।

दोहा—श्रद्धासों अरु भक्तिसों मोमें चित्त लगाय ।
मोहि उपासत जो हि सो प्रिय मम किरपा (कृपा) पाय ॥ ४७ ॥

۴۷۔ جس شخص کا جان و دل سے مجھ میں ہے قیام
سب یوگیوں میں وہ افضل و اعلیٰ ہے
جو صدق عقیدت سے مجھے جپے مدام
یہ میری رائے ہے سن اے نیک انجام

And—'mongst his peers—the one Yógī
of Inner Self absorbed in ME,
Faith-whole, who lives to worship ME, 47
is reckoned most at-One by ME.

योगीयां विच्च सो उच्च सदावण
जो कोई ध्यान मेरे विच्च लावण
श्रद्धा नाल जो मुझ नूं ध्यांदे
सो सब थों उत्तम अखवांदे । ४७ ।

४७
जो श्रद्धायुत होकर मानव मुझको भजता धरकर ध्यान
सकल योगियोंमें मैं भारत ! उसको समझूँ युक्त महान

37

६/86

८०३

۴۷۔ سارے یوگیوں سے بھلا اس کو جان
سدا دل میں رکھتا جو میرا دھیان !
شردھا سہت میرا بھجن جو کرے
میرے خیال میں نہیں کوئی اسکے سمان

And among all Yogîs, he who, full of faith, with the inner SELF abiding in Me, adoreth Me, he is considered by Me to be the most completely harmonised. (47)

(۴۷)

صدقِ دل اور پاکبازی سے جو مُجھپر ہو فدا
شاغلوں میں اُسکا درجہ فی الحقیقت ہو بڑا

47. Whoso, 'mongst *Yogins*, full of faith,
His inmost self in Me reposed,
Doth worship Me: I reckon him
The most attuned with Me of all.

(४७)

जपता सदा अन्तरात्मा से, मुझ ही को जो श्रद्धावान;
उस योगी को अधिक श्रेष्ठ मैं, सदा मानता हूँ मतिमान!

۴۷

یوگی ہیں تمام یوں تو ممتاز
ان میں بھی بڑی ہے بات انکی
جو پیرو جادۂ یقیں ہیں
جن کی مرے عشق سے ہے سیری

تسلیم شُدہ ہے ان کا اعزاز
مقبول ہے خاص ذات ان کی
لذّت چش بادۂ یقیں ہیں
کرتے ہیں مُدام یاد میری

सभी योगियों में पुनः, मैं उसे मानूं परम।
श्रद्धा से मुझे जो भजे, आत्मा किये मत्परम ॥९५॥
अन्तःकरण मुझे में लगा, हो अर्पित् मनप्राण।
मेरे ही जो योगी वर, हो, उसे मम प्रिय जान ॥९६॥

८०५

چھٹا ادھیاے - ادھیاتم سنجم یوگ

یعنی

آتما مین محویت

اپنے کرمون کے جو پھل کی آرزو رکھتا نہین
جو ہی تیاگی وہ ہون اور کرم سے آزاد ہی
جوگ بھی سنیاس بھی دونون کا مطلب ایک ہی
وہم کے پھندے سے جو چھوٹا اُسے ایشر ملا
جسکا قابو ہی حواسون پر وہ جوگی بن گیا
جو خودی کو چھوڑ دیتا ہی الم سے دور ہی
آدمی کی ہی خودی دشمن اسے پہچانئے
محو ہو جاتا ہی جو انسان اپنی ذات مین

وہ ہی تیاگی لین بھی ہی آتما مین بالیقین
کرم کی کیا فکر اُسے ہو حق کی جسکو یاد ہی
ہو تو ہم دور اگرچہ آدمی خود نیک ہی
جو رہا بندش مین اُسکا غنچۂ دل کب کھلا
دل پہ جو قادر ہوا وہ عارفِ مل ہوا
ہوے یکتائی سے واصل روز و شب مسرور ہی
احدیت کا ہی جو درجہ اُسکو اعلیٰ جانئے
ہی وہی یکتا وہی ہی نامور ہر بات مین

جو ہیں اپنے نفس پر قادر وہ انسان نیک ہیں
ہو گیا علم الٰہی سے جو واقف نامدار
جو بشر ہر دوست اور دشمن کو یکسان جان لے
باغرض کو بےغرض کو اور عزیز و غیر کو
اشرف مخلوق اُسی کو کہتے ہیں اہل شرف
جسم و دل پر جسکا قابو ہو کرے خواہش کو پست
ہو زمین ہموار اُسپر گھاس ہو پھر پوست شیر
اندریون کو دل کو بھی روکے جو خوش انجام ہی
رکھے سیدھا جسم کو ہو گردن و سر میں نہ خم
مستقل بے لوث دل پر حکمران ہو جو بشر
جو بہت کھاتا ہی یا کرتا ہی فاقے صبح و شام
جو بہت جاگے بہت سوئے یہ ہیں غفلت کے روگ
کھانا پینا جاگنا سونا یہ سب جتنے ہیں کام
جوگی جب لذاتِ دنیاوی سے ہو جاتا ہی دور
جس مکان میں ہو ہوا کم شمع کی لو ٹھیک ہو
جوگ سے ہوتا ہی قایم خوب دل کا انتظام
جوگ کا حاصل ہو جسکو لطف با توقیر ہی
جانتا ہی جو حقیقت جوگ کی ہی باخرد
علم سے عالم ہو پہلے پھر کرے قابو میں دل

گرمی و سردی و رنج و راحت اُنکو ایک ہیں
اُسکے سر پر فکر دنیا کا نہیں رہتا ہی بار
جو بڑے چھوٹے کے رتبے کو برابر مان لے
جانے جو یکسان و ہمرتبہ وحوش و طیر کو
ہوتی ہیں مشہور اُسکی نیکیاں چاروں طرف
آتما سے ملنے کا خلوت میں کرے بندوبست
یا ہرن کی کھال پر بیٹھے وہ ہو کر دل سے سیر
ہی یہی اشٹانگ جوگ آسان نہیں یہ کام ہی
ناک کے نتھون کو دیکھے دل ہو یکسو یکقلم
دھیان ایشر کا وہی کرتا ہی اے والا گہر
یا ہی جسکے دل کو ہر دم خواہشِ ذکر طعام
جوگ کرنے کے نہیں لایق ہیں ہرگز ایسے لوگ
ہون مطابق گیان کے گر پھر ہو جوگی نیکنام
اُسکا استحکام دل پھر حق کا دکھلاتا ہی نور
دل ہی جو قائم نہیں پھر حرص کی تحریک ہو
مست رہتا ہی وہ اپنی ذات ہی میں صبح و شام
وصل حق حاصل ہوا اُسکو صاحب تقدیر ہی
ہی بلاے حرص و خواہش اُسکے سایہ سے بھی رد
سایۂ حرص و ہوا کے بھی نہ جائے متصل

جب یہ صورت ہو تو وہ پھر جوگ مین مشغول ہو — ذاتِ حق مین ہو وہی واصل وہی مقبول ہو

جس نے دل کو کر لیا قابو مین کامل ہو گیا — چھوٹ کر قیدِ گنہ سے حق مین واصل ہو گیا

ذات ایسے شخص کی معقول ہی ہر بات مین — رو سے خلقت دیکھتا ہی خود وہ اپنی ذات مین

ذات خلقت مین بھی وہ کرتا ہی اپنا ہی خیال — جو دُورنگی سے جُدا ہی ہی سدا آسودہ حال

جو مجھے سب مین جو سب کو مجھ مین کرتا ہی نظر — اُس سے پنہان مین نہین ای آرجنِ والا گہر

بولے آرجن سبکو یکسان جاننا مشکل ہی کام — مثلِ سیماب اپنا دل بیتاب ہی ای نیکنام

دل مین ہی تحریک کی خو سے جبلی کیا رُکے — جو سلاخِ آہنی ہی ہاتھ سے کیونکر جھکے

سرکش و مغرور جب دل ہی تو کیونکر روکیئے — آندھیون کے زور کو مشکل ہی کیونکر روکیئے

کشن جی بولے یہ سچ کہتے ہو لیکن جوگ سے — دل کو ہو جاتی ہی صحت سرکشی کے روگ سے

جوگ کرتے کرتے دل کو بس مین کر لیتے ہین لوگ — اختیار اوسکو ذرا سا بھی نہین دیتے ہین لوگ

جنکے دل مین عشق ہو ملتی ہی ذاتِ حق وُنھین — آرزوے شوق بیجا ہی نہین مطلق اُنھین

دل اگر شغلِ عبادت کی طرف راغب رہے — پھر نہ اُسپر خواہش دنیا کبھی غالب رہے

بولے آرجن جو ہے تکمیل شوقِ اتصال — جوگ کرنے کی طرف قایم کرے اپنا خیال

ہو مگر اُس سے نہ پورا کام یہ پھر کیا ہو حال — وہ کہان پہونچے ہو اُسکا حال کیا ای باکمال

کشن بولے وہ بھی ہرگز ہو نہ پا بندِ بلا — نیکی کرنیوالا غم مین کب ہوا ہی مبتلا

کام جو کرتا ہی اچھا غم نہ اُسکے ہو قریب — ایک مدت تک اُسے بیکنٹھ رہتا ہی نصیب

بعدہٗ وہ مردِ نیک افعال کے گھر جنم لے — ہی غنیمت یہ بھی وہ خوش حال کے گھر جنم لے

جیسی پہلے فہم تھی ہو فہم ویسی بعد بھی — جنم دیگر مین نمایان ہو خیال سعد بھی

جنم سابق مین کیئے جو جوگ تھے پھر آئین یاد — پھر وہی ہو کوششِ دل پھر وہی ہو اعتقاد

الغرض اس جنم مین ہو جوگ سے حاصل کمال
گو کئی جنم اُسکو لینا پڑتے ہین آفاق مین ؛
جو گناہون سے جدا رہتا ہی قلب صاف سے
مُکت پاتا وہ بھی ہی لیکن کئی جنمون کے بعد
دل سے ہی جو حق پرست اُس سے جُدا مین بھی نہین
راست بازی سے جو میری سمت رکھتا ہی خیال
بس وہی جوگی ہی سچا جسکو میرا دھیان ہی

خواہشِ ادراک کو حاصل ہو خالق سے وصال
حق کی ہستی ہی ذکر خواہش دلِ مشتاق مین
دیکھتا ہی اپنی حالت دیدۂ انصاف سے
ہوتا ہی خوش مرد خوش باطن کئی جنمون کے بعد
دل نہین ہی جسکا پست اُس سے جُدا مین بھی نہین
میرے دل مین وہ جگہ پاتا ہی ای فرخندہ فال
دل مین کرلے خوب غور ارجن یہ اچھا گیان ہی

ادھیائے ششم اوتم سنجم نام

نخواہد اگر کس جزائے عمل	کند صرف ہمت برائے عمل
نہ افتد نگاہش بسود و زیاں	بود ہمہ سنیاسی و جوگی ہماں
تفاوت بجوگی و سنیاس نیست	کہ در ہر دو جز پاس انفاس نیست
اگر از درون مہر دنیا نرفت	عبث از ریاضت دل خویش تفت
رسیدے عمل کے بمعراج جوگ	عملہا نہد بر سرش تاج جوگ
ہر آنکس کہ مغلوب جہاں شود	بہر دو جہاں سخت رسوا شود
چو کامل شود جوگ اے خوش سیر	نیاید بجز نور حق در نظر
دلش چون دل اربا بستہ شد	در چشم بر ماسوا بستہ شد

شری بھگوت گیتا — ۲۵ — ترجمہ فارسی از فیضی

دل ست اینکہ یار و دشمن ہماست	ہماں خضر راہ است و رہزن ہماست
اگر دل بدست است یار خود است	دگر نہ ستمگار عالم خود است
بود اہل دل فارغ از کیف و کم	نہ شادی بنالہ نہ کاہد ز غم
بود باطنش گنج علم و کمال	بداند جہاں را چو خواب و خیال
زر و خاک یکساں بود پیش او	نباشد بجز راستی کیش او
بخویش و تبار و با غیار و یار	ندارد بجز نیکوئی ہیچ کار
کند آں گوشہ گیر طور اشتغال	کہ گردی خبردار از اعمال جوگ
بہموار جا فرش کن ایں سہ چیز	کہ در چرم آہو و کرپاس نیز
حواس از پئے یاد او جمع کن	دل خویش روشن تر از شمع کن
زبان و دل و دست یکجا بکن	بسوئے کسے دست را وا مکن
نگاہے بہ بینی مئے کردہ باش	تماشائی حسن در پردہ باش
بصد ناز بنگر بجان و تنم	تماشائے من کن ہمیں یک منم
بہ بسیار خواران و بسیار خواب	بود جوگ کردن نہایت عذاب
بخواب و خورش باید اعتدال	دگرنہ قریب ست نقص کمال
چراغے کہ محفوظ ماند ز باد	نمیرد ترا حرف من یاد باد
ہمیں طور جوگی بعمر دراز	بماند شود گر بدل چارہ ساز
بود باد انفاس جاں چوں چراغ	نگہدار آں باد را در دماغ
برہنہ خرج باشد دل آں بدست	نیاید از و بر دل کس شکست

زلذاتِ حسی اگر رستہ شد
زمحنت کشی نیست رنجے باو
چو زنبور کو شہد یکجا کند
اگر دست خود را کشد از عمل
چو دل شد جدا از ہوا و ہوس
دلِ بیقرارش چو گیرد قرار
بہ بیند بخود جلوۂ نین نور
شود لاتِ وصلِ من حاصلش
چو خیزد ز آئینہ دل غبار
دگر فارغ از رنج و درد ست او
ہمہ را بہ بیند چو از روئے دوست
بہ بیند جہاں را کہ در من نہاں ست
ز گرداب اعمالِ آید بروں
بہ برگِ گل و بار ما را بہ بین
بود محو ذاتش محیطِ جہان
بگفتا کہ گفتی ز روئے کرم
ولیکن دلم اے خبر دار کار
چو مغلوب من نیست دل عاجزم

چو برقِ جہاں از جہاں رستہ شد
کہ ایزد عطا کرد گنجے باو
چو پر شد دلِ خود از آں برکند
نیاید بوضعِ گمانش خلل
بداند کہ اللہ باقی و بس
بروں آید از گردشِ روزگار
بود مدت العمر او را سرور
نیاید خیالِ دگر در دلش
بیفتد در آں پر تو روئے یار
فراغت ز کونین گردست او
بداند کہ عالم تجلی اوست
دروں جہاں جلوۂ من شناسنت
بہ خلوتگہ قدس باشد دروں
بہ چشم اکنوں خدا را بہ بین
درو جلوہ دارند کون و مکان
ز اعمالِ جوگ و ہم از حبسِ دم
بیکحال ہرگز نگیرد قرار
چو فیل کہ افتد بگل عاجزم

پریشانئ دل سراسیمہ کرد
بود دل چو بادے کہ ناید بکف
بگفتا کہ دل ہمچو سیماب ہست
نہ یکبارگی دل بدست آیدت
بوضعے کہ گفتم ز راہ وداد
بود نفسِ امارہ خصمِ قوی
بگفتش کہ اے نغمسازِ جہاں
کہ دل را بفرمانِ خود ساختست
دگر آنکہ دارد بجوگ اعتقاد
دگر آنکہ مینائے خواہش شکست
پس از مرگ اینہا کجا میرسند
بفرمود کاے درخورِ تربیت
ہر آنکس کہ تسلیم و محو رضاست
شود دیوتا جو گئے ناتمام
چو مدت شود منقضی برہمیں
شود پور سلطان با زہد کیش
بدیناں بود تا بہ بد کمال
بود مردِ عارف بہ از زہد کیش

مرا سینہ چوں تختۂ قیمہ کرد
در اندیشہ اوقاتِ من شد تلف
عبث از غم و غصہ بیتاب ہست
کہ خونِ جگر خوردنی بایدت
ہوا و ہوس را بکن خیرباد
بکن جہد مردانہ شو ہمی
مرادہ از آں مرد کامل نشاں
بنائے ہوس ابرانداختست
دلے نیست با نفسِ خویشش جہاد
براہ خدا پائے خواہش شکست
چگونہ بقربِ خدا میرسند
بگویم ترا کاں بکار آیدت
پس از مرگ جائیش جنت سراست
بعمرے بود خلد او را مقام
بہ بیند بفرمانِ جاں آفریں
دلش ہست مائل بکردار خویش
دگر نیست او را کمالِ زوال
کہ او ہست مغرور بر زہدِ خویش

بجوگ آشنا کن دلِ خویشتن
ہر آنکس بمن آشنا میشود

بنہ پائے محکم در اخلاصِ من
خدا او ندہر دو سرا میشود

وہان اک راجہ تھا جانست مشہور
تھا نیک و نیک بخت و شاد و مسرور

تھی اُس کی فیض بخشی شہرۂ عام
نہ تھا کوئی بھی محوِ رنج و آلام

کسی دن آکے پہونچا ہنس وان ایک
تو پوچھا طائرون نے بادلِ نیک

کہ کیون اب اس طرح تو تیز پر ہے
خیالِ سُرگ کیا مدِ نظر ہے

مرے راجہ سے بھی کیا جائیگا جلد
یہ نقدِ مطلب دل پائیگا جلد

کہا راجہ تو جائے یا نہ جائے
وہ نقد مکت پائے یا نہ پائے

مگر اک ہے رکھیشر شہرۂ عام
کہ ہے رائک منیشر نامور نام

میان سُرگ وہ جائیگا بیشک
وہ نقد مکت بس پائیگا بیشک

سُنی راجہ نے جب طائر کی تقریر
کہا دل مین یہ اپنے ہوکے دلگیر

رکھیشر ہے حقیقت مین وہ ذیہوش
ملاقات اُسکی واجب ہے بصد جوش

منگا کر رتھ چلا بہر ملاقات
ہوا کاشی مین داخل وہ نکو ذات

وہان سے پھر گیا سوے جگناتھ
نظر آیا جہان روے جگناتھ

سوے مغرب وہان سے پھر وہ آیا
وہان پر بھی پتہ اُس کا نہ پایا

سوے حدِ شمالی وہ چلا جب
تو رتھ چلنے سے ٹھہرا برملا تب

کہا دل مین کہ کیا اُسکا سبب ہے
کہ رتھ چلنے سے کیون معذور اب ہے

عجب کیا ہے کہ وہ عابد یہین ہو
کسی جا کوہ پر گوشہ نشین ہو

پئے مطلب جو چھانی دشت مین خاک
تو دیکھا کوہ پر اک عابدِ پاک

نظر آئی جو وان پر آگ روشن
ہوا راجہ اُسی جا جلوہ افگن

ادب سے ڈنڈوت کی سر جھکایا
کہا اب نقدِ مطلب ہاتھ آیا

ملے درشن تمھارے ای مہاراج ہوئی حاصل مراد دل ہمین آج
کہا عابد نے تو راجہ بڑا ہی جہان مین مشتہر دھرم آتما ہی
رکھیشر تھا جو وہ مرد نکو ذات بجا لایا بدل رسم مدارات
کہا راجہ سے جو ہو دلکا مطلب وہ اس ناچیز سے فرمایئے اب
بجا لاؤن گا حکم اب سر کے بل مین کرون گا عقدۂ امید حل مین
کہا کیون آپ ہین یون پاک و بے عیب سبب بتلایئے اس کا بلا ریب
کہا پڑھتا ہون گیتا بادلِ شاد مجھے ہی خوب ادھیائے ششم یاد
یہ ثمرہ ہی اُسی کا مجھکو حاصل نہین عاقل نہ مین ہون مرد کامل
سُنا راجہ نے جب یہ کلۂ پند ریاست سے بلایا اپنا فرزند
کہا اب شوق سے تو کر حکومت مین یان ہوتا ہون مشغول عبادت
کیا رخصت پسر کو بادل شاد ادھر ادھیائے گیتا کر لیا یاد
رہا چندے عبادت مین وہ مشغول ہوا بھگوان کی خدمت مین مقبول
دم آخر جو چھوڑا قالبِ خاک سوئے بیکنٹھ پہونچا بادل پاک

چھٹے ادھیائے کا خلاصہ

۱۔ یوگ کے دو درجے۔ پانچویں ادھیائے کے آخر میں۔ دھیان کے طریقے بتائے گئے ہیں۔ دھیان ہی کو یوگ کہتے ہیں۔ اس ادھیائے میں انکی تشریح درج ہے۔ یوگ چونکہ ایک قسم کا کرم ہے۔ اس واسطے اوّل سنیاسی اور یوگی کا سوال اٹھاتے ہیں:۔

(ا)۔ سنیاسی وہ شخص نہیں ہے۔ جو کرم چھوڑ بیٹھے۔ بلکہ وہ شخص ہے جو ثمرۂ فعل کا تعلّق خاطر سے نکال دے۔ یہی یوگی کی تعریف ہے۔ پس سنیاسی اور یوگی ایک ہیں +

(ب)۔ یوگی کی ابتدا کرم مثلاً نشکام کرم کرنے۔ اور خاص ابھیاسوں سے ہوتی ہے۔ اور انتہا اسی شانتی پر جو گیان سے حاصل ہوتی ہے۔ یہ اس وقت پیدا ہوتی ہے جب ثمرۂ فعل کا خیال مطلق نہ رہے۔ یہ منتہی یعنی یوگ ارودڑھ کا درجہ ہے۔ پس یوگی دو طرح کے ہوسکے۔ ایک مبتدی۔ دوسرا منتہی +

۲۔ یوگ کی ضرورت۔ ۔ روحانی ترقی کے واسطے یوگ ضروری ہے +

(ا)۔ آدمی کو چاہیئے۔ کہ من کو جیت کر روحانی ترقی کرے نہ کہ من کے بس میں آکر اور لشیوں میں پھنسکر گرتا چلا جائے +

(ب) جو من کو جیت لیتا ہے۔ نہ گرمی بسردی۔ دُکھ سُکھ وغیرہ کو یکساں سمجھکر شانت رہتا ہے۔ اس یکساں نظر والے کو یوگی کہتے ہیں +

(ج) اس سے بھی بڑھکر وہ یکساں نظر ہے۔ جو دوست و دشمن وغیرہ سب کو ایک نظر دیکھتا ہے +

۳۔ یوگ کرنے کا طریق۔ اسمیں کئی باتیں شامل ہیں:۔

(ا) دھیان کرنے کی جگہ اکیلی ہو۔ یوگی خود اکیلا ہو۔ سامان بہت نہ ہو۔ من میں خیالات نہ

اٹھیں +

(ب)۔ آسن صاف جگہ مضبوطی کے ساتھ لگائے۔ کہ ہلے جلے نہیں۔ نہ بہت نیچا نہ بہت اونچا ہو۔ گھاس پر ہرن کی کھال اور اس پر کپڑا ہو۔ یہاں بیٹھکر اور حواس و من روک کر اور قلب کو یکسو کرکے اپنی شُدھی کے واسطے یوگ کرے +

(ج)۔ جسم و سر و گردن کو تنا رکھے۔ اور صرف ناک کے اگلے حصّے کو دیکھے +

(د) من شانت رکھے۔ خوف اور ڈر مطلق نہ ہو۔ برہم چاری کا برت رکھے۔ اور بھگوان کا دھیان کرکے من کو روکے۔ اس سے پرم شانتی یعنی موکش نصیب ہوتی ہے +

(ھ) یوگی کا کھانا۔ پینا۔ سونا۔ اور تمام اشغال حد اعتدال کے ساتھ ہونے چاہئیں +

(و)۔ یوگ کی مشق سے جب نرودھ کی حالت بہم پہنچتی ہے۔ تو یوگی کو واصل کہا جاتا ہے۔ اور اس وصل میں بے نظیر پرم آنند آتا ہے +

(ز) شانت ہونے کا طریق یہ ہے۔ کہ جو جو کامنائیں یا خیال من میں اٹھتے ہیں۔ انہیں چھوڑ کر اور اندریوں کو من سے روک کر۔ ہولے ہولے شانت ہو جائے۔ من جب جب چلایمان ہو تو اسے پکڑ کر اپنے بس میں لائے +

(ح) من شانت ہو جاتا ہے تو خواہشیں نہیں ستاتیں۔ بلکہ آدمی شدھ گیان یعنی برہم سروپ ہو جاتا ہے۔ اور یکساں نظری پیدا ہو جاتی ہے۔ جس سے وہ سب کو میری ذات دیکھتا ہے +

۴۔ من کے روکنے کے طریق۔ ارجن کا اعتراض ہے کہ یکساں نظری کا پیدا ہونا مشکل ہے۔ کیونکہ من شہ زور اور چنچل ہے۔ اس کا جواب بھگوان یہ دیتے ہیں کہ من کے قابو کرنیکے دو طریق ہیں۔ ابھیاس اور بیراگ +

۵ یوگ بھرشٹ کی گتی۔ ارجن کے پوچھنے پر بھگوان جواب دیتے ہیں:۔

(ا) یوگ بھرشٹ یعنی جو شخص زندگی میں یوگ کو کمال کے درجے پر نہیں پہنچا سکا۔ ناش نہیں

c92

کیونکہ اچھے کام کرنے والے کی بُری گتی نہیں ہو سکتی +

(ب) اونچے لوگوں کے بھوگ بھوگ کر دوسرے جنم میں دولتمندوں۔ پاکوں یا اعلےٰ یوگیوں کے گھر پیدا ہوتا ہے +

(ج) پہلے سنسکاروں کی وجہ سے پھر یوگ کی مشق شروع کرتا ہے +

(د) اسی طرح جنم جنمانتر میں من کو صاف کر کے اور کمال حاصل کر کے پرم گتی کو پہنچتا ہے +

(ہ) اس واسطے تپسوی کرم۔ کانڈی۔ اور واچک گیانی سے یوگی بڑھکر ہے۔ یوگیوں میں سے بھی وہ سب سے اعلےٰ ہے جو جان و دل سے مجھ ذات احد میں قیام رکھتا ہے۔ اور اس طرح دوئی کے واہمہ باطل سے نکلکر یکتائی کے درجے پر پہنچ جاتا ہے +

تصویر نمبر ۶ صفائے قلب

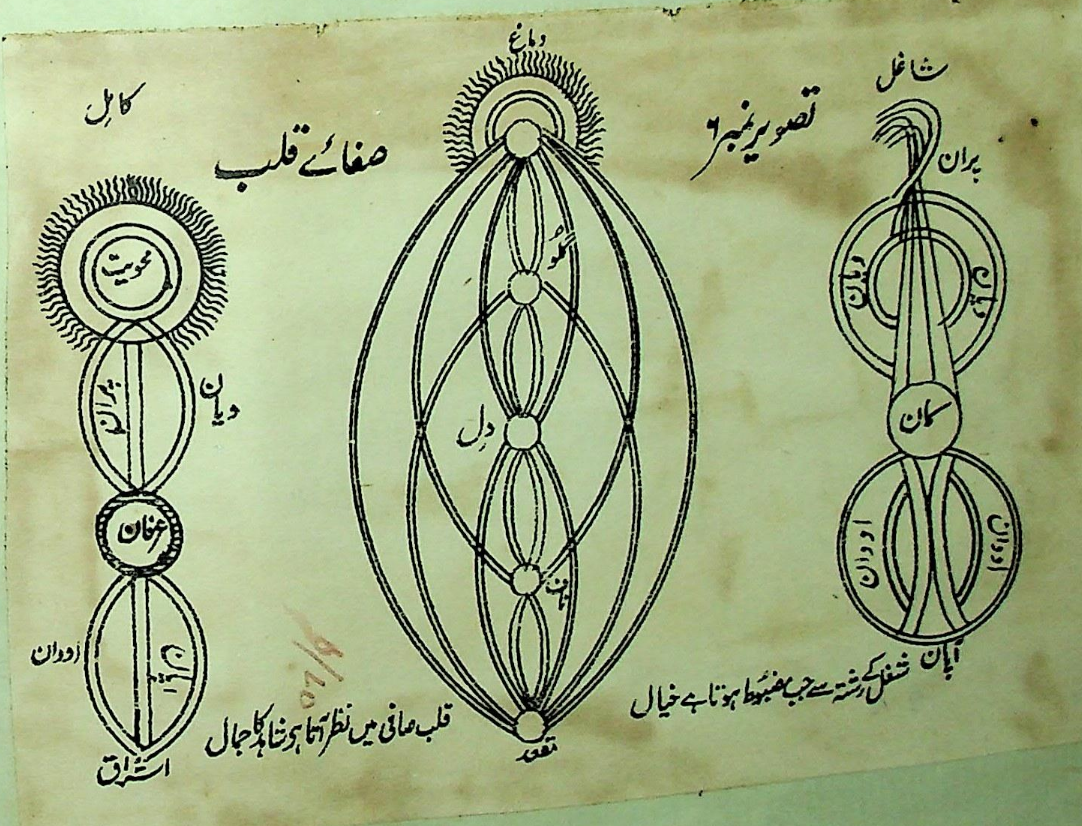
علم کی تکمیل کے لیے عمل درکار ہے چنانچہ مذکورۂ بالا تصاویر میں انسان کی اندرونی کیفیات کو علمی نقطۂ نظر سے دیکھنے کے بعد اس تصویر میں اُن پر عملی طریقت سے روشنی ڈالی جاتی ہے۔ درحقیقت جملہ احساس و معلومات کا مُحرک پران یعنی نفَس ہے جو قالبِ عُنصری میں ہر وقت اپنا کام کرتا ہے اور اپنے جُداگانہ افعال کے لحاظ سے پانچ قسم کا مانا جاتا ہے (تفسیر کے واسطے فرہنگِ اصطلاحات مُلاحظہ ہو) دماغ ۔ گلُو ۔ سینہ ۔ ناف اور مُقعد اُس کے مخصوص مرکز ہیں جہاں سے وہ پانچ شکلوں میں عمل پیرا ہے۔ عوام کو صرف بالا و پائیں انفاس کا علم ہوتا ہے۔ البتہ شاغل اُس کی

مختلف حرکات کو اپنے اپنے مرکز سے شروع ہوتے تمئیز کرتا ہے۔ نفَس بصُورت ہوا کثیف اور بے حَرکت ہے مگر وہ قُدرتِ کاملہ کی کشش سے لطیف و متحرک بنتا ہے۔ واضح ہو کہ ہر قسم کا نفَس اپنے مقام پر غالب اور دیگر انفاس کے مُقامات پر مغلُوب رہتا ہے اور انکا مجموعہ اشتراکِ باہمد گر سے ایک دامِ عمل بچھاتا ہے جس میں مُرغِ دل گرفتار ہو جاتا ہے۔ اسے پران مئی کوش یعنی حجابِ نفسی کہتے ہیں۔ اس سے بریت حاصل کرنا سکونِ دل ہے۔ اس تصویر کی درمیانی شکل میں ان واقعات پر روشنی ڈالی گئی ہے۔

(۲) صفت سہ گانہ کی طاقت سے انفاسِ پنجگانہ جسم کے کارخانہ کو چلاتے ہیں اور رُوح ان کے افعال کا مُشاہدہ کرتی ہے۔ بالفاظِ دیگر علمِ ذات کی روشنی میں صفات اپنا شُعبدہ دکھاتی ہیں اور رُوح اس شعبدے کو دیکھتی ہے۔ اِس منظر فطرت کا نام وگیان مئی کوش یعنی حجابِ علمی ہے اور اس کا دور ہو جانا صفائے قلب کہلاتا ہے۔ دائیں جانب کی شکل میں اِس حقیقت کا مُختصر انکشاف ہے۔

(۳) بائیں جانب جو شکل نظر آتی ہے وہ شغل کے درجۂ کمال پر

دلالت کرتی ہے کہ وہاں نفس کے دام سے دِل کو رہائی اور صفائی
تعینات سے عقل کو بریت حاصل ہے۔ شاغل کو اِس منزل پر پہنچکر
وہ کیفِ وصال نصیب ہوتا ہے جو قیل وقال سے باہر ہے اور جس کی
کوئی مثال نہیں۔ یہ تصویر مجاہدۂ باطنی یعنی ضبطِ حواس کی ضرورت
ثابت کرتی ہے۔



८१ √

c20

C22

यह पुस्तक श्री पं० अम नाथ जी सपू
भूतपूर्व कार्यालयाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी ने

गुरुकुल

वानप्रस्थ

पुस्तकालय की सेवा में सादर भेंट दी।